अक़ाब

उपन्यास

अक़ाब

प्रबोधकुमार गोविल

इस उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं, इनका किसी भी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से संबंध केवल मात्र संयोग है।—लेखक

ISBN : 978-93-84713-31-7

मूल्य : तीन सौ रुपये
पाठक संस्करण : दो सौ रुपये (पैपरबैक)

प्रथम संस्करण : 2018
प्रकाशक : दिशा प्रकाशन, 138/16, त्रिनगर, दिल्ली-110 035
आवरण : डिज़ायनर मैन
मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

AQAAB (A Hindi Novel)
by Prabodh Kumar Govil

Price : Rs. 300.00
Paperback : 200.00

Published by
DISHA PRAKASHAN
138/16, Onkar Nagar-B, Tri Nagar,
Delhi-110 035 (India)
Phone : 2738 5832, 2738 3646, 81300 70928, 93124 00709
E-mail : dishaprakashan1@gmail.com
madhudeep01@gmail.com

इंसानियत की बुनियादी समझ और दुनिया को देखने-जीने की उत्कट चाह, देशों की ज़मीन पर खिंची सरहद की लकीर को मिटा देती है...हम सबके होकर जीते हैं।

...कनिका और वैभवराज के लिए!

एक

कहते हैं कि क़र्ज़ कभी बाक़ी नहीं रहते, देर-सवेर वे उतर ही जाते हैं। बचपन से सुना था कि पेड़ छायादार होते हैं और सबको छाया का आसरा बांटते हैं, लेकिन यहां ऊंची से ऊंची फुनगियोंवाले क़द्दावर पेड़ इमारतों के साये में निरीह-से खड़े थे। वे जिन पंछियों का आसरा थे, वे दुर्लभ प्रजातियों के थे।

अभिनेत्री साधना को गुज़रे लगभग दो साल बीतने को थे। आसमान से झांकती हवा बरास्ता इमारतों की पनाह, पेड़ों को सहला रही थी और इसका आनंद ले रहा था वह छोटा-सा सफ़ेद कुत्ता जिसे अभी-अभी लाकर उसकी मालकिन ने बैंच के पास खड़ा किया था और वह स्वयं लॉन पर जॉगिंग कर रही थी।

हडसन नदी का यह किनारा बहुत चंचल और उन्मादी था। दिनभर तरह-तरह के जहाज़ों और नावों के निकलते रहने से लहरें पलभर का भी विश्राम नहीं पाती थीं और जब कोई विराट आकार का भव्य जहाज़ वहां से गुज़रता तो मानो पानी पर कोई छोटी-मोटी नगरी ही सरकती प्रतीत होती थी। दुनिया के सबसे विशाल और आलीशान शहर न्यूयॉर्क की यह बस्ती मेनहट्टन चारों ओर से क़ीमती-क़द्दावर और मशहूर इमारतों से घिरी थी। ट्विन-टॉवर्स के नष्ट होने के बाद अभी-अभी लगभग सवा सौ मंज़िला वर्ल्ड ट्रेड सेंटर यहीं तैयार होकर फिर से आकाश से बात करता खड़ा था। कुछ ही दूरी पर स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी नामक विश्वविख्यात प्रतिमा समंदर की लहरों पर थिरकती दिखाई देती थी। शाम होते ही नज़ारा ऐसा हो जाता मानो आसमान के समूचे तारे हडसन के दोनों किनारों पर कुंभ मेले में शिरकत करने चले आये हों। एक ओर जर्सी सिटी और दूसरी ओर न्यूयॉर्क सिटी इसे जुगनुओं का वंडरलैंड बनाये हुए थे। दोनों के बीच नावों और जहाज़ों का यातायात दिनभर लहरों को चीरकर मथता रहता। सूरज भी इमारतों के आग़ोश से यहां दुलारे जवाहरात की तरह निकलता और शाम को सिंदूर की होली खेलता हुआ इन्हीं विराट गगनचुंबी अट्टालिकाओं की गोद में विश्राम करने चला जाता। पत्थरों के साम्राज्य में शीशे जड़कर सभ्यता की पराकाष्ठा मिट्टी को भुलाये बैठी थी। हरी घास के लॉन भी ऐसे दिखाई देते थे मानो सब्ज़-सुनहरे कालीन यहां से वहां तक

बिछे हों। अनंत ऊंचाई पर टंगा अंबर भी यहां नीरव सन्नाटे में नहीं था, हर पल तरह-तरह के हवाई जहाज़ और हेलीकॉप्टर अपना सतत कोलाहल बिछाये रहते थे। सड़कों पर दिखाई देते मानव-बुत दुनिया के हर देश और नस्ल से वाबस्ता थे तथा माहौल की जीवंतता को इस तरह बनाये रहते थे जैसे फूलों की कोई रंग-बिरंगी बग़िया तेज़ हवाओं में झूम रही हो।

नदी के किनारे बिछी कलात्मक बेंचों पर कुछ युवा, कुछ बुज़ुर्ग और कुछ बच्चे भी कभी आकर बैठते तो कभी चहलक़दमी करते थे। कहीं-कहीं कुछ जोड़े शरीरों की हरारत को आलिंगन-चुंबन से मिटाने में तल्लीन थे। एक-दूसरे के मुंह को किसी पेय पदार्थ की बोतल की भांति चखते-चाटते ये लोग दुनिया के माथे पर सार्वजनिक सुख को चस्पां करते देर रात तक बैठे रहते। साइकिलों या स्केटिंग पहियों पर फर्राटा भरते युवा इस आलम में तितलियों-पतंगों-से विचरते थे। अधिकांश लोगों का वस्त्र-विन्यास उनके तन-सौष्ठव का इंद्रधनुषी साक्षी बनता दिखाई देता था। रंग-ही-रंग और आकारों की नशीली जोत हर कोण जलती-दिपती नज़र आती थी। सुख और संतोष अट्टालिकाओं से उफनकर मानो सड़कों तक फैलता हुआ देखा जाता था। विपन्नता किसी चित्र तक की शक्ल में कहीं नहीं दिखती थी, विपन्नता को संपन्नता ने नेस्तनाबूद कर छोड़ा हो जैसे। ये अहसास और अनुभूतियों का शहर था, यहां व्याख्या या विचार सिरे से निरस्त थे।

दुनियाभर में श्रेष्ठता की सनसनी फैलानेवाली पत्रिका टाइम मैगज़ीन का दफ़्तर भी यहां चंद क़दम के फ़ासले पर ही था। इस पत्रिका के आवरण पर छपनेवाली शख़्सियत चंद दिनों में संसारभर में सितारा हैसियत पा जाती थी। गोया इस शख़्सियत का चयन भी सितारों के बीच से ही होता था। मानो तारों को ध्रुवतारा बनाने का काम यहां तसल्लीबख़्श तरीक़े से अंजाम दिया जाता हो। चंद्रमा इन बिल्डिंगों के गुंजलक के बीच ताक-झांककर ही दिख पाता था। बशर्ते मौसम में नमी और रवानी न हो। शहर आसमान के चांद का मोहताज भी नहीं था।

इस शहर की एक ज़बरदस्त ख़ासियत थी। यहां कोई दो लोग जब साथ या पास दिखाई देते थे तो उनके बीच बेहद आत्मीयता भरा आकर्षण होता था। प्यार शहर की हवा की तासीर में ही था। सब एक-दूसरे को छूते थे। विकर्षण यहां की फ़ितरत में न था। ऐसा लगता था जैसे पत्थरों की दुनिया ने इंसानों में भयजनित प्यार भर दिया हो। मन किसी में किसी की वासना देखना नहीं चाहता था। लोग अपने कुत्तों से भी अपनेपन से इस तरह पेश आते थे मानो वे उनके शरीर का ही हिस्सा हों।

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के पास जहां दो पूल बने थे, रात को बारह बजे तनिष्क नाम

का युवक अपनी लाल चमकदार बाइक खड़ी करके आया तो उसका चेहरा गंभीरता से ढका हुआ था। अट्ठारह साल उम्र का वह नवयुवक अभी तक अपने चेहरे से किशोरावस्था को हटा नहीं सका था किंतु न जाने किस बात ने उसके गोरे और आकर्षक चेहरे पर उदासी बिछा दी थी। उसने अपने सफ़ेद जूते उतारकर बाइक में लगे बॉक्स में रखे और बाइक की बॉस्केट से पॉलिथिन में लिपटा एक बड़ा पीला गुलाब लेकर नंगे पैर धीरे-धीरे चलता हुआ पूल के एकदम नज़दीक आने लगा। पूल के भीतर झरने की शक्ल में टपकते पानी की आवाज़ इस समय के सन्नाटे में साफ़ सुनाई दे रही थी। पूल की चारों ओर की दीवारों की मुंडेर पर उन बहुत-से लोगों के नाम सुंदर अक्षरों में खुदे हुए थे जो वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ट्विन-टॉवर्स पर हुए हवाई हमले में मारे गये थे। तनिष्क ने एक नाम के क़रीब जाकर पीला गुलाब नाम के पहले अक्षर 'एम' के खांचे में लगा दिया और सिर झुकाकर आहिस्ता से पीछे हटता हुआ वापस चला आया। उसने एक बार अपना मोबाइल फ़ोन कान के पास ले जाकर पहले से रिकॉर्ड की हुई उस आवाज़ को सुना जो मृतक ने हमले के तुरंत बाद गुहार के रूप में उसे लगाई थी। उसका चेहरा इस आवाज़ की बेचारगी से एक बार फिर से भीगा पर उसने तुरंत ही मोबाइल को ऑफ़ करके जेब में रख लिया। वह अपनी बाइक के क़रीब चला आया। उसने बाइक को इमारत की पार्किंग में ही खड़ा रहने दिया और अपनी टीशर्ट तथा लोअर भी उतारकर बाइक की बॉस्केट में रखकर लॉक कर दिया। अब वह केवल एक छोटा-सा ब्रीफ़ पहने हुए पूरा नंगे बदन था। वह इसी तरह गलियारे को पार करके हडसन के किनारे चला आया। यहां आकर उसने एक बार क़दमताल किया और फिर किनारे-किनारे दौड़ लगाने लगा।

रात को काफ़ी देर हो जाने के कारण किनारे पर अब केवल इनेगिने लोग ही चहलक़दमी कर रहे थे। पर जो भी थे, वे उस मॉडल की तरह बेहद ख़ूबसूरत युवा को नंगे बदन दौड़ते देखकर एक बार निहारते ज़रूर थे। युवतियां गहरी नज़र से और युवक उड़ती नज़र से उसे ताकते और वह नवयुवक तेज़ी से दौड़ता हुआ आगे बढ़ जाता। युवक जापानी था। गहरे काले रंग के उसके बाल कुछ सुनहरापन लिए हुए थे। उसका शरीर भी बेहद गोरा और सुंदर था। रात के नीरव सन्नाटे में किसी उल्का की भांति वह भागता जाता था। जंघाओं पर मात्र छोटा-सा वस्त्र पहने।

तनिष्क फ़िफ़्थ एवेन्यू की एक इमारत के बेसमेंट में बने एक छोटे कमरे में रहता था। वह वर्षों पूर्व अपना देश जापान छोड़कर यहां चला आया था और अब यहीं का होकर रह गया था। उसे ये भी मालूम नहीं था कि जापान में उसके

घर-परिवार में अब कौन था क्योंकि वर्षों से उसका अपने घर से कोई संपर्क नहीं था। तनिष्क जब लगभग नौ साल का था, तभी उसके पिता ने अपने परिवार को छोड़कर एक ताईवानी औरत से शादी कर ली थी। तनिष्क को तो यह भी याद नहीं रहा कि उस औरत का नाम क्या था जो कुछ ही दिनों की मुलाक़ात के बाद उसके पिता को शादी करके अपने साथ ताईवान ले गई। पिता घर-गृहस्थी को भूलकर उसके साथ इस तरह गये कि वापस पलटकर उन्होंने घर का रुख़ ही नहीं किया। तनिष्क की मां ने तरह-तरह के कष्ट उठाकर अकेले ही उसका पालन-पोषण किया। तनिष्क को अब तक याद था कि उसकी मां ने छोटे-से उस गांव में किस तरह तनिष्क की देखभाल की। उसे पढ़ने भेजा और उसकी छोटी-मोटी ज़रूरतें पूरी कीं।

फिर एक ऐसा दिन भी आया जब ख़ुद तनिष्क को भी अपनी मां को छोड़कर आना पड़ा। तनिष्क उस दिन को कभी याद नहीं करना चाहता था जब वह गांव में अपनी मां आसानिका को छोड़कर भाग आया था किंतु अपनी भोली मां को वह ज़रूर कभी-कभी याद करना चाहता था। करता भी था।

असल में उसके पिता के ताईवान चले जाने के बाद तनिष्क की मां की पहचान एक आदमी से हो गई जो बार-बार गांव में मां से मिलने आया करता था। तनिष्क को वह आदमी बिलकुल अच्छा नहीं लगता था जबकि वह तनिष्क के साथ बहुत प्रेम से पेश आता था। जितना वह नज़दीक आने की कोशिश करता तनिष्क उतना ही उससे दूर भागा करता था। तनिष्क के नन्हे मन में कहीं-न-कहीं यह भय छिपकर बैठ गया था कि जिस तरह ताईवानी औरत उसके पिता को लेकर चली गई, उसी तरह ये आदमी भी एक दिन उसकी मां को लेकर चला जायेगा। लेकिन उस आदमी से मिलकर तनिष्क की मां इतनी ख़ुश होती थी कि तनिष्क कभी भी अपनी मां से उस आदमी के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं कह पाता था। कभी-कभी उसे बहुत ही घुटन होती थी। ऐसे में एक दिन मौक़ा मिलते ही तनिष्क भी अपनी मां को कुछ बताये बिना घर से हमेशा के लिए भाग आया।

तनिष्क की पहचान एक ऐसे आदमी मसरू से हो गई जो नौकरी या व्यापार करने के लिए कहीं बाहर जाना चाहता था। वह आदमी अपने साथ ले जाने के लिए किसी नौकर की तलाश कर रहा था कि तभी उसकी निगाह तनिष्क पर पड़ गई। तनिष्क छोटा, भोला और मासूम तो था ही अपने घर-परिवार से ख़ुश भी नहीं था। जल्दी ही वह उस आदमी की बातों में आ गया और एक दिन उसी के साथ हमेशा के लिए अपना गांव छोड़कर यहां न्यूयॉर्क में चला आया। मसरू ओस्से उसका सगा अंकल जैसा बन गया। तनिष्क को उस आदमी के साथ चले आने का

कभी कोई दुख नहीं हुआ क्योंकि उसे डर था कि देर-सवेर कभी भी उसकी मां भी उसे छोड़कर चली ही जायेगी। तनिष्क उस आदमी को 'अंकल' कहता ही नहीं, समझता भी था। उस आदमी ने भी तनिष्क को कोई दुख नहीं दिया। जब तक साथ रहा, तनिष्क को उसने अपने बच्चे की तरह ही रखा।

तनिष्क का वह अंकल बिलकुल अकेला था। वह एक व्यापारी के पास ही नौकरी किया करता था लेकिन जब उसने जापान छोड़ा, उसके बाद उसने कई जगह हाथ आज़माया। एक बार कुछ दिन किसी होटल में काम किया, फिर उसे एक ट्रेवल कंपनी में काम मिल गया। कुछ दिन उसने टैक्सी भी चलाई, लेकिन कभी भी, किसी भी काम में तनिष्क को कोई कष्ट नहीं होने दिया। वह जो कुछ भी करता, तनिष्क छाया की तरह उसका सहायक बना हुआ उसके साथ ही रहा। बाद में अंकल को एक दफ़्तर में नौकरी मिल गई जहां उसके साथ-साथ तनिष्क को भी थोड़े-बहुत पैसे मिल जाते। दोनों के खाने-पीने और सिर छिपाने लायक जगह मिलने में कोई ज़्यादा परेशानी नहीं आई। तनिष्क भी उसके साथ कई छोटे-मोटे काम सीख गया था।

तनिष्क ने बचपन छोड़कर किशोरावस्था में क़दम रखा तब तक भी कभी उसका अपने घर से कोई संपर्क नहीं हो पाया। उसने कभी ये कोशिश भी नहीं की कि अंकल को अकेला छोड़कर वापस अपने गांव जाने की बात करे। यह इतना आसान भी नहीं था।

तनिष्क को कभी-कभी अपना घर और गांव याद ज़रूर आता था। जब भी वह अकेला होता और अंकल किसी काम से चले जाते तब वह शिद्दत से अपने बचपन और अपनी मां आसानिका को याद करता था।

आसानिका उसे गांव में ही तैरना सिखाती थी। अपने हाथों से नहलाती थी और नहलाने से पहले ख़ुद अपने हाथों से उसके शरीर की मालिश किया करती थी। आसानिका को बचपन से ही यह आभास था कि तनिष्क एक सुंदर व स्वस्थ बच्चा है। उसकी कोशिश रहती थी कि वह बड़ा होने के साथ-साथ मज़बूत और मेहनती भी बने।

वह तेज़ धूप में भी चटाई पर लिटाकर तनिष्क की अपने मज़बूत हाथों से मसाज़ करती। लेकिन साथ ही साथ यह भी ध्यान रखती कि गोरे-चिट्टे तनिष्क का तेज़ धूप में कहीं रंग काला न पड़ जाये। वह बग़ीचे से एक पेड़ के बड़े-बड़े पत्ते तोड़कर जतन से उन्हें जोड़ती और थाली जितना बड़ा आकार देती। यह कला उसने अपने पड़ोस में रहनेवाले एक भारतीय दंपति से सीखी थी जो कहा करते थे कि भारत में इस तरह खाना परोसने के पत्तल बनाये जाते हैं। कई पत्तों को सींकों

के सहारे आपस में जोड़कर थाली के आकार का बना लेते हैं, फिर इसमें भोजन परोसते हैं। आसानिका के भारतीय पड़ोसी कहते थे कि दक्षिण भारत में तो ज़्यादातर इसी पर रखकर लोग चावल, डोसा या इडली खाते हैं। भारतीय गांवों में जब कोई बड़ी दावत होती थी तो एक साथ कई लोगों को खाना परोसने के लिए पत्तों के बने ऐसे ही पत्तल काम में लिए जाते थे। इन्हें एक बार खाना खाने के बाद फेंक दिया जाता था, इस तरह बर्तन धोने की कोई ज़रूरत नहीं रहती थी। पानी की कमीवाले प्रदेशों में भी ऐसे पत्तों के बर्तन बहुत उपयोगी सिद्ध होते थे। आसानिका ने भी इस तरह के पत्तल बनाना सीख लिया था और वह ऐसी पत्तों की छतरी बनाकर धूप में लेटे तनिष्क के ऊपर ढका करती थी। उसे लगता था कि इस तरह पत्तों से ढकने पर तनिष्क का रंग धूप में काला भी नहीं होगा, और उसे गर्मी भी नहीं लगेगी। वनस्पति से बनी यह चादर स्वास्थ्य के लिए भी बहुत अच्छी रहती थी।

बहुत देर तक आसानिका अपनी पतली-पतली अंगुलियों से तेल लगाकर तनिष्क के पूरे शरीर की मालिश किया करती थी। तनिष्क को भी इसके दौरान बहुत अच्छा लगता और वह अपने नन्हे हाथ-पैरों को हिलाता हुआ आनंद से किलकारियां भरा करता था। तेल मालिश से उसके छोटे-छोटे हाथ-पैरों में बिजली-सी फुर्ती और चपलता भर जाती। आसानिका गांव के समीप बने एक फ़ार्महाउस में काम करती थी और बड़े होने पर तनिष्क के भी अपने काम में हाथ बंटाने के सपने देखा करती थी। तनिष्क के पिता भी कभी-कभी उस फ़ार्महाउस पर आया करते थे और फ़ार्महाउस के मालिक के घोड़ों और दूसरे पालतू जानवरों की देखभाल किया करते थे।

थोड़ा बड़ा हो जाने के बाद तनिष्क को अपने बदन की इस देखभाल और मसाज़ में अद्‌भुत आनंद आने लगा था और वह इसका अभ्यस्त भी होने लगा था। उसकी मां आसानिका उसके सिर, पीठ, पेट और पैरों के साथ-साथ जांघों पर भी अपनी जादुई अंगुलियां फिराती और अपनी तेल भरी हथेलियों पर नन्हे तनिष्क की नन्ही सुसू को मसल-मसलकर मज़बूत बनाती। वह पेशाब करने की जगह पर अंगुलियों से तेल का हाथ फिराकर जब देर तक रगड़ती तब तनिष्क पैरों को पटकता हुआ किलकारियां भरता और अपने छोटे-छोटे हाथों से मां के हाथ को स्पर्श करता। उसे इतना आनंद मिलता कि वह मां के हाथों से गुदगुदी महसूस करता हुआ भी उन्हें हटाता नहीं था बल्कि ज़ोर से खिलखिलाकर हंसता था। मां को नन्हे शिशु की किलकारियों में और भी आनंद आने लगता और पता ही नहीं चलता कि कितना वक़्त बीत गया है। सिर पर हरे पत्तों की चादर बिछाये तनिष्क

खिलखिलाता रहता। अपनी मां को देख-देखकर ही तनिष्क स्वयं भी अपने हाथों से अपने गुप्तांग को सहलाता हुआ खोलने-बंद करने का उपक्रम करता और ख़ुशी से हंसता हुआ मचल उठता।

तनिष्क को कभी-कभी अपने गांव की याद बेतरह आती। जब कुछ बड़ा हुआ तो वह कभी-कभी अपने पिता के साथ फ़ार्महाउस पर भी चला जाता था। वहां पिता अपने काम में लगे रहते और तनिष्क खेत में, मिट्टी में या पानी में खेलने में मशगूल रहता। उसके पिता भी कभी-कभी जब घोड़ों की मालिश करते तो वह ध्यान से देखा करता। घोड़ा भी अपनी इस ममता भरी देखभाल से ख़ुश हो जाता और पुलककर पूंछ फटकारकर हिनहिनाने लगता। एक काला चपल घोड़ा तो इस दौरान उन्माद से भरकर उत्तेजित हो जाता और दोनों पिछले पैरों के बीच लटके उसके लिंग को देखकर नन्हा तनिष्क उसकी ओर दौड़ पड़ता। पिता पहले तो कुछ ध्यान न देते किंतु जब तनिष्क घोड़े के समीप पहुंचकर उस लटके हुए भाग को पकड़ लेता तो पिता इधर-उधर संकोच से देखते हुए उसका हाथ पकड़कर छुड़ाने लगते।

जब कभी फ़ार्महाउस के आसपास कोई और व्यक्ति न होता तो पिता ध्यान न देते और तनिष्क घोड़े से खिलवाड़ करता रहता। बचपन से ही जानवरों के प्रति लगाव के साथ-साथ मज़बूती का यह उपहार बड़े होते तनिष्क ने गांव में पाया।

तनिष्क की आयु बढ़ने के साथ-साथ उसमें कुछ बदलाव भी आने लगे। आठ साल की आयु पार कर रहा तनिष्क अब कभी-कभी पानी में नंगे बदन तैरने में सकुचाता। मां द्वारा मालिश किये जाने के दौरान वह अपनी बाल-सुलभ चंचलता पर काबू पाने की कोशिश करता।

कुछ दिन बाद जब तनिष्क ने देखा कि उसके शरीर पर पेट के निचले हिस्से में जांघों के बीचोंबीच हल्के-हल्के रेशे उगने लगे हैं तो वह कौतूहल से छू-छूकर उन्हें देखता। अब मालिश के दौरान वह अपनी हथेलियां बालों के ऊपर ढककर मां से दबी आवाज़ में कहता—आप रहने दो, मैं ख़ुद कर लूंगा। मां मुस्कराती हुई अपनी तेल सनी हथेलियां हटा लेती। एक दिन तो उसकी मालिश के दौरान गांव के कुछ बच्चे और औरतें वहां आ गये और मां से बातें करते रहे, उसने संकोच से अपनी आंखें बंद कर लीं और मन-ही-मन उनके लौटकर जाने का इंतज़ार करता रहा। बंद आंखों से भी उसे ऐसा महसूस होता रहा जैसे सारे बच्चे उसके पेट पर उगे बालों को घूर-घूरकर देख रहे हैं। वह बार-बार वहां हथेली लगाकर बच्चों का ध्यान और ज़्यादा नहीं खींचना चाहता था इससे चुपचाप अंगुलियां समेटे संकोच से लेटा रहा। सारे शरीर का तनाव मानो दोनों पैरों के बीच आकर वहीं इकट्ठा हो

गया था। जैसे-तैसे औरतों के जाने तक उसने समय काटा। मन-ही-मन ये भी फ़ैसला किया कि अब से मां से मना कर देगा कि वह अपने बदन की मालिश अपने आप ही किया करेगा, वह भी अकेले में जब नहाने के लिए तालाब पर जायेगा, तब। उस दिन को तनिष्क आज तक नहीं भूला।

लेकिन सबसे मज़ेदार बात तो उसे यह लगती थी कि मां उसकी मालिश करते समय अपनी थिरकती अंगुलियों से उसकी छाती पर और दोनों जांघों के बीच एक ख़ास तरीक़े से गुदगुदी किया करती थी। ऐसा करते समय मां गुनगुनाती जाती और अपनी अंगुलियों के नर्तन से उसे गुदगुदाती जाती। वह हंसते-हंसते लोटपोट हो जाता। ऐसी खनक भरी हंसी निकलती कि उसका चेहरा लाल पड़ जाता। मां भी उसे इस तरह किलकता और खिलखिलाता देखकर ख़ुशी से मन-ही-मन दोहरी हो जाती। उस गुदगुदी को तनिष्क कभी भी भूल नहीं पाया। आज भी अकेले में जब वह अंगुलियों की थिरकन को याद करता है तो अपने बदन पर गुदगुदी अनुभव करके बैठा-बैठा मुस्करा पड़ता है। न जाने क्या था मां की अंगुलियों में, जो शरीर की सारी थकान और तनाव को उतारकर अंतरमन में जमाने-भर की ख़ुशी और चहक भर देता था। तनिष्क अंगुलियों के उस कंपन को अपने शरीर पर अकेले में भी आज़माता और सिहरन से भर जाता। उसे लगता कि मां की अंगुलियों ने ये नृत्य भरी थिरकन स्वयं उसकी अंगुलियों को भी सिखा डाली है और एक अद्‌भुत जगत का सिंहद्वार उसके लिए खोल दिया है।

उस ताईवानी स्त्री के साथ पिता के चले जाने के बाद कुछ दिन तक तनिष्क के मन में जैसे कोई पौधा मुरझा गया। उसके सारे सुख तिरोहित हो गये। पिता की एवज़ में वह फ़ार्महाउस पर जाकर जब घोड़ों की देखभाल करता तो घोड़े भी उसका ठण्डापन महसूस करते। काले घोड़े ने लिंग फिर उस तरह कभी नहीं लटकाया। तनिष्क भी जैसे ख़ानापूर्ति करके ही फ़ार्महाउस से वापस लौट लेता। सब-कुछ अपने खोल में सिमटकर रह गया।

अब उसने मां को भी उस मेहनत भरी प्रक्रिया से छुट्टी दे दी थी और ख़ुद उसका भी मन नहीं करता था कि अपने बदन की देखभाल में इतनी दिलचस्पी ले।

बाद में तो तनिष्क का जी अपने गांव से भी उचट गया और अपने देश से भी। मां आसानिका की नज़दीकियां जब उसने एक अजनबी से बढ़ती देखीं तो वह बिलकुल ही बुझ गया। यह ख़तरा उसके ज़ेहन में सदा के लिए टंग गया कि हो न हो, मां भी किसी-न-किसी दिन उसे छोड़कर अपनी दुनिया में लौट जायेगी। ऐसी दुनिया, जिसमें तनिष्क के लिए सिर्फ़ हाशिये बचेंगे।

और फिर तनिष्क अकेला होता गया, होता गया। उसके अंकल कमरे पर लौटते तो तनिष्क भी जैसे किसी दूसरी दुनिया से लौटता। और फिर सब भूल जाता। उसे ऐसा लगता जैसे उसके पिता फिर से उसके पास लौट आये हों। मसरू ओस्से भी काम से घर लौटने पर अपने परिवार के नाम पर इस अकेले साथी को पाकर मानो अपनी सारी थकान भूल जाते और दोनों के लिए खाने की व्यवस्था में लग जाते जहां तनिष्क उनका हाथ बंटाता।

दो

डबलिन शहर के बाहरी हिस्से में सागर किनारे बने इस विला में फ़िलिप्पीन से आये हुए दोनों मेहमान जब कॉफ़ी पीने के बाद अपने गेस्टरूम में तैयार होने के लिए गये तो विला के मालिक ने अपना मोबाइल उठा लिया और सोफ़े पर अधलेटा हो गया। रात के दो बजे थे। वह अच्छी तरह जानता था कि उसके कमरे से कोई भी आवाज़ बाहर नहीं जाती थी फिर भी वह फ़ोन पर थोड़े दबे स्वर में ही बोल रहा था। मालिक का नाम जॉन अल्तमश था।

दूसरी तरफ़ से एकाएक ज़ोर से हंसने की आवाज़ आई। आवाज़ की खनक ऐसी थी मानो एक साथ कई साज़ इस सुनसान रात में बज पड़े हों। वह चौकन्ना हो गया और एकाएक घबराकर उसने नीची निगाह अपने पैरों से लेकर कमर तक डाली। तब आश्वस्त-सा होकर फ़ोन फिर से कान से चिपका लिया। यह वीडियो-कॉल नहीं था, उसे ख़याल आया और वह इत्मीनान से अधलेटा हो रहा। अब उसे हैरानी से ज़्यादा आनंद की अनुभूति हुई। उसने समय को बीतने न देने का ख़याल किया।

—क्या हुआ? उसने फ़ोन से होंठ सटाकर कहा।

—कुछ नहीं? दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई। लेकिन वह समझ नहीं सका कि कुछ नहीं हुआ तो असंख्य घंटियों-सी गूंजती यह तिलिस्मी आवाज़ क्योंकर आई।

—अगर बिना कुछ हुए ऐसी आवाज़ आ सकती है तो प्लीज़ एक बार और! उसने कहा।

हंसी फिर से शुरू होते-होते एकाएक थम गई। जैसे ज़बरन उसे ज़ब्त कर लिया गया हो। दूसरी तरफ़ से आती आवाज़ जैसे किसी खोल में सिमट गई हो।

—आपने अच्छा किया, अशर्फ़ियां यूं नहीं लुटाते। उसने आवाज़ को और महीन बनाते हुए कहा।

—क्या बोले?

—मैंने कहा ख़ज़ाने लुटाने के लिए नहीं होते।

—तो किसलिए होते हैं? आवाज़ ने मानो मज़े लेने के लिए कहा।

—ख़ज़ाने चुंबक की तरह और ख़ज़ानों को खींचने के लिए होते हैं।

—ख़ज़ानों के ढेर में दबकर मर जाने का इरादा है क्या?

—सवाल ज़रा देर से आया।

—मतलब?

—मतलब ये कि मर तो हम चुके हैं।

—ओह! तो ये जनाब का भूत है जो हमसे मुख़ातिब है।

—भूत नहीं, अगला जन्म कहिये...पुनर्जन्म।

—क्या मैं पूछ सकती हूं कि श्रीमान ने दोबारा जन्म किसलिए लिया है? कौन-सी हसरत थी जो अधूरी रह गई?

—हसरतों के सिलसिले ख़त्म होने के लिए नहीं होते, ये तो शाश्वत हैं जो जन्म-दर-जन्म हुआ करते हैं।

—हसरत का कोई नाम भी तो होगा?

—लफ़्ज़ नहीं, उमंगों में बयां होती हैं ये।

—इंशाअल्लाह, बयां कर भी दें, हम भी तो सुनें। आवाज़ ने कहा।

—इस तरह नहीं।

—फिर क्या बाजे-गाजे बजेंगे इनके अवतार पर...

—बाजों की हैसियत ही क्या इनके सामने जो बजें, मौन हैं बाजे तो। स्तब्ध!

—तो कोई सलीका भी तो होगा उमंगों के ज़ाहिर होने का? कहिए न।

—उमंगें ज़ाहिर होने से डरती हैं, अगर इन्हें स्वीकार न मिला तो ये हादसों में बदल जायेंगी।

—पहेलियां मत बुझाओ। लंबी रातें इस तरह तमाम करने के लिए नहीं होतीं। इन्हें बेवजह खो देने का पछतावा उम्रभर हुआ करता है।

—पहेलियां नहीं मैडम...बी सीरियस। मैं सचमुच एक डील करना चाहता हूं तुमसे।

—तो कहो न, इस तरह शब्दों की पतंगें क्यों उड़ा रहे हो!

—आप समझने की कोशिश कीजियेगा।

—मुझे नासमझ कह देने की वजह जान सकती हूं?

—ओह, मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा, मैं तो...!

—हां-हां, बोलो!

—मुझे अब भी यक़ीन नहीं हो रहा...।

—किस बात का यार? आवाज़ अब झल्लाने लगी थी।

—नहीं, मेरा मतलब है कि जो मैं कहना चाहता हूं उसे थोड़ा ध्यान से

सुनियेगा...

—लो, रात को दो बजे मैं फ़ोन लेकर इसलिए बैठी हूं कि इस पर जो सुनाई दे, उसे ध्यान से न सुनूं? पर कुछ सुनाई तो दे।

—देखिये मैडम मेरा लंबा तजुर्बा है।

—तो मैंने कब इसकी सनद-सबूत मांगे हैं आपसे? मैंने तो ऐसा कभी नहीं कहा कि आप नौसिखिये हैं।

—हां, वो तो मैं जानता हूं।

—देखिये साहब, बेकार की बातें सोचना छोड़िये। आपको पता है न, मैं दुनिया की बाद में हूं, पहले अपने देश की हूं, और मेरे देश की बात तो आप जानते ही हैं, कम-से-कम इस फ़ील्ड में तो...।

—आई नो-आई नो...तानसेन को कौन नहीं जानता? और लताजी...आप ग़लत मत समझिये। आपके देश की बुलंदियां जगजाहिर हैं।

—मैं कुछ नहीं समझ रही। न सही, न ग़लत। मैं तो बस इंतज़ार कर रही हूं कि आप कहें, जो आप कहना चाहते हैं।

—रात का वक़्त है, मैं जानता हूं कि मैं आपको डिस्टर्ब कर रहा हूं।

—लेकिन आप नहीं कर रहे, मैं ये कह रही हूं कि कीजिये।

—ओ-हो-हो-हो, मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा।

—मैंने कब कहा कि आप मज़ाक़ कर रहे हैं?

—ओके, ये बताइये कि आप कहां हैं और क्या कर रही हैं?

—अरे, ये कैसा सवाल है? मैं अपने घर में हूं और आराम कर रही हूं, आपसे बात कर रही हूं, आपकी बात सुनने को बेताब हूं।

—जी मेरा मतलब है कि आपके साथ कौन है अभी?

—ओह, कोई नहीं, अकेली हूं।

—फिर...अल्तमश पूछते-पूछते रुक गया।

—मतलब? अकेली हूं...अपने कमरे में अकेली हूं। घर में तो मेरा स्टाफ़ है मेरे साथ...पर क्यों? आप क्या पूछ या कह रहे हैं, साफ़-साफ़ कहिये न। हमारी बात कोई पहली बार तो नहीं हो रही।

—आपके साथ कोई नहीं है? तो आप अभी...जॉन अल्तमश संकोच से रुक गया।

—अरे यार, बात क्या है? मैं तुमसे हज़ारों किलोमीटर दूर बैठी हूं, फिर भी तुम ऐसे झिझक रहे हो जैसे मेरे सामने हो...अब ये मत पूछना कि मैंने क्या पहन रखा है या कुछ पहन भी रखा है या नहीं वग़ैरह-वग़ैरह...ओह सॉरी, प्लीज़ कहो

क्या बोल रहे थे?

—मैडम मैं आपसे...मेरा मतलब है मेरी एक इच्छा है।

—बालक, इच्छाओं का दमन करना सीखो...। आवाज़ ने नाटकीय ढंग से कहा।

—जी...अल्तमश ने सचमुच किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह ही कहा।

—अरे बोलो-बोलो, मैं तो मज़ाक़ कर रही थी।

—मगर मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा।

—हां मगर तुम कुछ कर भी तो नहीं रहे, मेरा मतलब है कि कुछ कह भी तो नहीं रहे।

—कहूंगा।

—कब?

—अभी इसी वक़्त।

—तो कहो न।

—मैं आपसे एक रिक्वेस्ट कर रहा हूं। अल्तमश ने कहा।

—आप आदेश भी दे सकते हैं।

—ज़र्रानवाज़ी आपकी।

—याद है आपको, मैंने कहा था कि आपके आनेवाले अलबम में कुछ मूमेंट्स पर मैं संतुष्ट नहीं हूं, मैं उस पर और काम चाहता हूं।

—हां कहा तो था, तो क्या सोचा है आपने? बताइये न। आवाज़ ने अब पूरी तरह संयत और शालीन होकर कहा। आवाज़ में जिज्ञासा और महत्त्वाकांक्षा भी झलकने लगी थी।

—आप अभी हंसी थीं थोड़ी देर पहले...।

—हां, पर आप पर तो नहीं हंसी, आपकी तौहीन नहीं कर सकती मैं। आपने ऐसा सोच भी कैसे लिया कि मैं आप पर हंस सकती हूं।

—ओहो...आप तो बात को कहां से कहां ले गईं, मेरा मतलब था...मैं कह रहा था कि आपकी वह हंसी हम रिकॉर्ड कर लें?

—क्या मतलब? मैं कुछ समझी नहीं।

—इसमें समझने को कुछ नहीं है मिस सेलिना, मैं सिर्फ़ इतना कह रहा हूं कि हम आपकी यह हंसी रिकॉर्ड करेंगे और अलबम में कुछ पॉइंट्स पर जोड़ेंगे। कुछ रिकॉर्डिंग हमें दोबारा करनी पड़ेगी। ख़ासकर तीसरे वाले सांग—''आओ जनाब तुमको किनारों पे ले चलूं''...गाने में तो उस खनकदार हंसी को कई जगह पर मैं जोड़ना चाहता हूं। आप देखियेगा उसका इंपेक्ट पूरी तरह बदल जायेगा। फ़ेंटास्टिक,

आप नहीं जानतीं कि उस हंसी को युवा किस तरह लेंगे?

—अच्छा, आवाज़ अब पूरी तरह शालीन और गंभीर थी, फिर भी अविश्वास की एक हल्की-सी झलक सुनाई दे रही थी।

—आप देखियेगा, हमारी ये मेहनत और ख़र्चा बेकार नहीं जायेगा।

—आपको ऐसा लगता है?

—बिलकुल लगता है...ऐसा लगेगा कि चंद्रमा फ़लक से नीचे झांक रहा है और दरिया की मौजें बदन छिपाने के लिए उथल-पुथल कर रही हैं...उस हंसी का मोल आप क्या जानें? लहरों का जलतरंग-सा बजता है उसमें।

—आप अपने फ़न के माहिर हैं, लेकिन क्या आपको सचमुच ऐसा लगता है?

—अरे मैडम, सितारों के उजास को हमेशा दूसरों ने देखा है, ख़ुद सितारे कब समझे हैं अपनी अहमियत। आपको 'मिस वर्ल्ड' देखनेवालों ने ही बनाया न, आपको ख़ुद कहां पता था कि आप क्या हैं? आप तो दफ़्तरों में नौकरियां ढूंढने निकली थीं?

—इस पर क्या कहूं...आवाज़ जैसे अपनी ही ख़ामोशी के समंदर में डूब गई। सुपरस्टार गायिका सेलिना नंदा इस बात पर कुछ न कह सकी। ऐसा लगा, मानो आवाज़ दूर क्षितिज पर कोई राग आलापकर सूर्योदय कराने को कूच कर गई हो।

असल में विश्वसुंदरी के खिताब से नवाज़ी जा चुकी सेलिना नंदा कुछ टीवी सीरियलों व फ़िल्मों में काम करने के बाद एक पॉप गायिका के रूप में भी विख्यात होती जा रही थी। उसका एक नया अलबम तैयार हो रहा था जिसका यह निर्माता डबलिन में रहता था। रात के दो-ढाई बजे सेलिना से अलबम के रीशूट की बात कहने के बाद उसका दिमाग़ इस कार्य पर लग गया। इसमें भारी ख़र्चा आने पर भी वह न जाने क्यों अब आश्वस्त था और सेलिना की तारीख़ें मिलने का इंतज़ार करने लगा था। उसके विला में उसके अतिथिकक्ष में ठहरे फिलिप्पीन के दोनों मेहमान भी इसी सिलसिले में उससे मिलने आये थे। अलग-अलग देशों के लोगों से बात करने में सबसे बड़ी बाधा यही थी कि संसार के अलग-अलग हिस्सों में दिन-रात के आलम अलग होते, समय अलग होते और इस तरह बहुराष्ट्रीय कामों में जुटे लोगों के लिए अपने आपको चौबीसों घंटे प्रस्तुत रखना उनकी व्यावसायिक ज़रूरत बन गया था।

डबलिन से कुछ ही दूरी पर शेनॉन में एक स्टूडियो भी इस विला के मालिक अल्तमश ने स्थापित किया हुआ था जहां दुनियाभर के लोग उसके संपर्क में रहते। पिछले कुछ सालों से भारतीय कलाकारों का रुझान भी इन अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट्स

की ओर हो गया था। इसके दो कारण थे, एक तो हॉलीवुड फ़िल्म जगत में गीत-संगीत की कोई ख़ास अहमियत नहीं थी, दूसरे भारतीय फ़िल्मों का यहां विविध भाषा व संस्कृतियां होने के कारण बड़ा बाज़ार था। अल्तमश इससे वाक़िफ़ था।

एशिया के कुछ देशों में एक प्रवृत्ति थी, कि यहां यूरोप या अमेरिका के देशों में स्थापित मूल्यों को ज़्यादा प्रामाणिक माना जाता था। वहां लोग चाहे इन देशों की संपन्नता और समृद्धि को घृणा की दृष्टि से देखें, पर मन-ही-मन इनकी नक़ल करने व ऐसा ही बनने की कोशिश हर अवचेतन में रहती थी। भारत भी उन्हीं देशों में था। यही कारण था कि यदि भारत में किसी को मान्यता या सफलता की दरकार होती तो वह पहले इन समृद्ध देशों का रुख़ करता था और यहां मान्य होने के बाद भारत में उसे अपने आप हाथोंहाथ लिया जाता। मीडिया भी इस प्रवृत्ति को पोसने में बड़ी भूमिका निभाता था। एशिया के इन देशों में एक और प्रवृत्ति का बोलबाला था। यहां वी आई पी कल्चर हावी थी। अर्थात् यदि कोई भी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफल हो जाता तो उसे वी आई पी माना जाता था और उसके बाद उससे किसी सुपरमैन या महामानव की तरह व्यवहार किया जाता था। इसका नतीजा यह होता था कि एक बार वी आई पी बन जाने के बाद फिर आपकी ज़िंदगी में निजता ख़त्म हो जाती थी। आपकी हर बात को सार्वजनिक बना और मान लिया जाता था। यही कारण था ऐसे लोग अपने देश में ज़िंदगी सहज या एकांतिक न पाने पर इन संपन्न देशों का रुख़ किया करते थे। यहां संपन्न देशों में किसी व्यक्ति के लिए ऐसा क्रेज़ नहीं होता था कि आप सार्वजनिक जीवन में अकेले घर से बाहर निकल ही न सकें। इसलिए भी लोग इन देशों में आकर सुकून पाते।

जॉन अल्तमश भी यद्यपि सालों से यहां था मगर उसका भारत और पाकिस्तान आना-जाना था। उसके पिता भी पाकिस्तानी थे जिन्होंने आयरलैंड में शादी करके घर बसाया था। यही कारण था कि यूरोपीय संस्कृति में रचा-बसा ये प्रोड्यूसर पाकिस्तान और भारत जैसे देशों के बारे में भी काफ़ी वाक़फ़ियत रखता था। वहां की संस्कृति ही नहीं, भाषाओं से भी ख़ासा परिचित था। वह थोड़ी-बहुत उर्दू और हिंदी बोल भी लेता था। अल्तमश के चार छोटे बच्चे थे जिन्हें वह इस्लामाबाद में पढ़ाना चाहता था। असल में इस्लामाबाद में कुछ ऐसे अच्छे स्कूल थे जो ब्रिटेन की संस्कृति के अनुकूल तालीम देते थे और वहां रहकर पढ़नेवाले बच्चे यूरोपीय रंग-ढंग में ढल जाने के बावजूद एशियाई मुल्क़ों के लिए भी अजनबी नहीं रहते थे। अल्तमश अच्छी तरह जानता था कि पाकिस्तान के अपने पड़ोसी

मुल्क़ हिंदुस्तान से रिश्ते अच्छे नहीं हैं मगर फिर भी इसका कारण वह सियासतदानों को ही मानता था, जो दोनों देशों के बीच अलगाव का ज़हर फैलाने का काम करते थे। उसका मानना था कि अवाम के दिलों में कोई दूरियां नहीं हैं और सब मिल-जुलकर ही रहना चाहते हैं। और अब इन दिनों तो वह भारतीय अभिनेत्री के लिए अलबम तैयार करके लॉन्च करने में जुटा था और उसका प्रचार भारत और पाकिस्तान में एक-सी शिद्दत से कर रहा था।

कुछ दिन बाद, तीन-चार मीटिंगों के बाद जॉन अल्तमश के ऑफ़िस ने जब सेलिना नंदा के अलबम पर रिकॉर्डिंग का एस्टिमेट जॉन के सामने रखा तो वह बुरी तरह चौंक गया। इस पर भारी ख़र्चा आ रहा था। सेलिना के अलबम पर काम करते हुए उन दोनों के बीच दोस्ताना ताल्लुक़ात पनप जाने के बावजूद इस बड़े ख़र्च की वजह यह थी कि सेलिना के ऑफ़िस से उन्हें उसके नये प्रोजेक्ट के शुरू हो जाने की जानकारी मिली थी। हॉलीवुड में उसकी शूटिंग शुरू होने के बाद भी जॉन अल्तमश को रिकॉर्डिंग की अनुमति भेज तो दी गई थी मगर इसके लिए भारी फ़ीस चार्ज़ की गई थी। जॉन की प्रस्तावित तारीख़ों पर समय देने के लिए सेलिना को अपनी फ़िल्म के शेड्यूल में थोड़ी रद्दोबदल करवानी पड़ी थी जिसका बोझ जॉन अल्तमश की कंपनी पर आ रहा था।

अल्तमश के कानों में सेलिना की उस रात की वह हंसी अब तक छनछना रही थी। एक तरफ़ उस खनक को अलबम में शामिल करने का जुनून भरा जोश था तो दूसरी तरफ़ बजट में बेतहाशा बढ़ोतरी का अंदेशा। अल्तमश मन-ही-मन सेलिना के गाये गीत के बीच में उस हंसी की कल्पना करता और ख़ुद ही नशे से झूम जाता। उसके मन में यह विश्वास और पुख़्ता होता जाता था कि इस हंसी की बदौलत गीतों का समूचा कलेवर ही आशिक़ाना हो जायेगा और मौसिक़ी में जान आ जायेगी। उसे हैरानी थी कि देखते-देखते सेलिना की लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी और उसके साथ काम करना दिनों-दिन महंगा होता जा रहा था। फिर भी वह शुक्रगुज़ार था कि सेलिना ने उसकी बात रखी थी और बड़े बजट की फ़िल्म में री-शेड्यूल करवाकर उसके लिए दो दिन का समय निकाला था। साथ ही उसके लिए उज़्बेकिस्तान से शूट छोड़कर बीच में आयरलैंड आने का ख़र्चा भी जुड़ गया था। सेलिना के निजी स्टाफ़ में भी अब वृद्धि होती जा रही थी।

इस बार सेलिना से फ़ोन पर बात हो पाने में भी तीन-चार दिन लग गये। किंतु अल्तमश की हिम्मत न तो सेलिना से फ़ीस कम करने लिए कह पाने की हुई और न ही अपने इरादों को मुल्तवी कर देने या छोड़ देने को ही मन तैयार हुआ। आख़िर उसने अलबम के लॉन्च से पहले उस हंसी को रिकॉर्ड करने का ही निर्णय

लिया।

इधर सेलिना के न्यूयॉर्क में छपे एक साक्षात्कार से मीडिया को भनक मिल गई कि उसका अलबम लॉन्च होने से पहले उसमें कुछ ख़ामियों को लेकर कुछ रिकॉर्डिंग दोबारा होगी। यह ख़बर जब पाकिस्तान और हिंदुस्तान के अख़बारों में पहुंची तो इसका मज़मून पूरी तरह बदला हुआ था। इसे काफ़ी स्पाइसी बना दिया गया था और कई बड़े नाम इससे जुड़ गये थे।

एक अख़बार ने लिखा था कि सेलिना अपनी गायिकी को लता मंगेशकर या आशा भोंसले से किसी भी तरह कम नहीं देखना चाहती। इसलिए वह उसके कुछ हिस्से दोबारा रिकॉर्ड करवा रही है।

एक चैनल ने उसमें तकनीकी ख़ामियां रह जाने का हवाला दिया था। बताया गया था कि नूरजहां ने उसमें सुधार के कुछ सुझाव दिये हैं जिनके चलते अलबम की लॉन्चिंग डेट आगे खिसकाई जा रही है।

एक समाचारपत्र ने पूरा ब्यौरा दिया था कि सेलिना के कुछ सहायक गायकों और साज़िन्दों को मॉडलिंग की ट्रेनिंग के लिए यूरोप भेजा जा रहा है। मेडोना और माइकल जैक्सन के ट्रेनर रहे एक मशहूर प्रोड्यूसर का इंटरव्यू भी इस बारे में छापा गया था कि आवाज़ का जादू जगाने के लिए सेलिना कौन-कौन-से गुर सीखने पर ध्यान दे सकती है।

सेलिना की एक प्रतिद्वंद्वी अभिनेत्री के हवाले से बताया गया था कि इस प्रोजेक्ट के पूरी तरह फ़्लॉप होने की संभावना है क्योंकि इस पर भारी प्रचार व्यय पहले ही कर दिया गया है।

जॉन अल्तमश के पास यह मीडिया कवरेज़ बिलकुल न पहुंचा हो, ऐसा भी नहीं था मगर उन्होंने सारी बात को हंसी में उड़ा दिया और सेलिना की उस रात की हंसी उनके सिर चढ़कर बदस्तूर बोलती रही। उनका दफ़्तर तैयारी में लगा रहा। फिलिप्पीन की एक बीमा कंपनी ने सेलिना को एक आकर्षक ऑफ़र भी भेज दिया था कि वे अपनी आवाज़ का बीमा आसान किस्तों पर करवा सकती हैं।

क्रिस्टीना कंकनप्पा नाम की एक भूतपूर्व विश्वसुंदरी का स्टेटमेंट भी न्यूयॉर्क टाइम्स में आया कि उनके समय में विजेता सुंदरियों पर मीडिया इतना ध्यान नहीं देता था जितना आजकल दिया जा रहा है। उन्होंने इस बात की भी आलोचना की थी कि आजकल बौद्धिक दुनिया में भी शारीरिक सौंदर्य को प्राथमिकता दी जा रही है जो आगे जाकर जीवन के विभिन्न स्किल डवलप कार्यक्रमों को आघात पहुंचायेगी। क्रिस्टीना को कुछ ही दिन बाद एक बड़े 'पीस' पुरस्कार के लिए नामांकन भी मिला था।

जॉन अल्तमश के दिलो-दिमाग़ पर सेलिना की खनकदार हंसी दिन-ब-दिन और भी जुनूनी ढंग से तारी होती जा रही थी। वह रात को अपने निजी शिप पर लेटा हुआ मदिरा का गिलास अपने सीने पर रखकर पानी में बहता जाता और उस हंसी के तसव्वुर में खोया रहता। उस खनकदार हंसी के छल्लों में उलझकर रात-बिरात उसके पठान सूट के कमरबंद कसमसा जाते और वह सुबह होते ही अपने दफ़्तर में सेलिना की रिकॉर्डिंग के काग़ज़ात पलटने लग जाता। उसे सौ फ़ीसदी ये उम्मीद हो चली थी कि दुनियाभर में नई नस्ल पेट पर मोबाइल रखकर उसके गीतों के सहारे रात के आलम को पुचकारा करेगी। उसके भव्य तकनीकी निर्देशन में गमकते साज़िंदों की तर्ज़ के साथ सेलिना की हंसी किशोरों और युवाओं के उदर पर थिरकेगी और उसकी तिजोरियों को छलकाया करेगी।

न तो अल्तमश को याद रहता और न ही किसी और को, कि मियामी तट पर सेलिना ने कभी अपनी ज़िंदगी का मक़सद विकलांगों की बेहतरी के लिए काम करना बताकर कोई ताज पाया था। आज उसकी आवाज़ की उमंगें दुनियाभर के हसीन और जवान वाशिंदों को विकल करने का सपना देख रही थीं और इस सपने को हवा देने के लिए जॉन अल्तमश जैसा नामी-गिरामी निर्माता-निर्देशक महफ़िल गढ़ रहा था। समय अपनी रफ़्तार से बढ़ रहा था।

सेलिना को न्यूयॉर्क शहर बहुत पसंद था। उसे सबसे अच्छी बात ये लगती थी कि भारत की तरह यहां उसे महामानवी मानकर क़दम-क़दम पर भीड़ द्वारा उसका रास्ता नहीं रोका जाता था। यहां भी वह सेलिब्रिटी थी, उसके सीरियल या फ़िल्म के पोस्टर यहां भी बहुतायत में लगा करते थे पर फिर भी यहां वह बेख़ौफ़ घूमते हुए अकेले सेंट्रल पार्क के ऊंचे-नीचे रास्तों पर चहलक़दमी करने का लुत्फ़ ले सकती थी, टाइम स्क्वायर पर अपनी मनपसंद आइसक्रीम खा सकती थी। एंपायर स्टेट बिल्डिंग के आसपास ही नहीं, बल्कि उसकी गगनचुंबी ऊंचाई पर चढ़कर ज़िंदगी में ऊंचाइयों के मतलब जान सकती थी। जब चाहे अकेले या मित्रों के साथ रात-दिन के किसी भी पहर में हडसन नदी के ऊपर बिजली से झिलमिलाते जहाज़ों पर सैर में खो सकती थी और पलभर में संसार के किसी भी कोने में पहुंचने के लिए जेएफ के हवाई तल से उड़ान भर सकती थी। उसने न्यूयॉर्क शहर के चार मंज़िला मेट्रो सिस्टम में देश-विदेश की कई नस्लों के वाशिंदों के साथ बेहद आत्मीयता भरा सफर कई बार किया था।

एक बार तो रात के तीन बजे वह शहरभर में लगे अपने पोस्टरों और हॉर्डिंग्स को निहारने एक छोटा गाउन पहनकर निकल गई थी। ये शहर सपनों की ऊंचाई भी कभी कम नहीं होने देता था और न ही सपने पूरे हो जाने पर सोने के

पिंजरे में क़ैद करता था। इसी से भाता था उसे ये शहर। शूटिंग से थकेमांदे शरीर को राहत देने के लिए सेलिना कितनी ही बार यहां के राहतकेंद्रों में चहलक़दमी करने चली आती थी। दुनियाभर की प्रणालियों की राहत भरी देखभाल यहां उसे मिली। दुनियाभर का खाना यहां मिला। यहां इंसान का कोई एक रूप-रंग-आकार-नस्ल स्वीकृत नहीं है बल्कि उसकी मानवीयता को पूरी फ्रीडम, पूरी लिबर्टी उसने यहीं मिलती देखी। न्यूयॉर्क की स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी भी उसकी मनपसंद जगह थी। काले-गोरे-मोटे-पतले-लंबे-ठिगने मानवबुतों को एक-सा स्वीकार दुनिया का शायद ही कोई दूसरा शहर इस तरह देता हो।

अपने व्यस्त समय के बीच जब भी सेलिना को थोड़ा समय फ़ालतू मिलता तो वह उसे न्यूयॉर्क में बिताना ही पसंद करती थी। हालांकि ऐसा बहुत ही कम हो पाता था कि उसके पास फ़ालतू समय हो। लेकिन न्यूयॉर्क आने के मौक़े उसे किसी-न-किसी बहाने अक्सर मिलते रहते।

एक बार एक जापानी फ़िल्म के प्रीमियर पर वह जब यहां आई तो यहां के एक मशहूर होटल में उसे एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की विशेष अतिथि बनने का अवसर भी मिला। यहां एक जापानी मॉडल की सारगर्भित स्पीच ने उसकी आंखें खोल दीं जब उसने कहा—कई देश बेहतर मॉडल बनने के लिए लंबाई बढ़ाने को कहते हैं, कई गोरेपन की चुनौती देते हैं, कहीं बड़ी आंखें सौंदर्य का पैमाना हैं तो कहीं विकसित वक्षस्थल...लेकिन संसार की कई नस्लें ऐसी हैं जिनमें रंग सफ़ेद नहीं होता, गर्दन लंबी नहीं होती, आंखें बड़ी नहीं होतीं, बाल काले, चमकीले या सुनहरे नहीं होते...आप ऐसी कसौटियों के कारण कई देशों के लोगों को नाउम्मीद करते हैं, उपेक्षित करते हैं, वर्जित करते हैं...फिर अपने लिए विश्वव्यापी उपाधियां लेने का आपको क्या हक़ है? आप केवल एक सेगमेंट को रिप्रेजेंट करके यूनिवर्सल कैसे हो सकते हैं...ये छलावा है।

तभी से सेलिना ने केवल सौंदर्य के सहारे समय काटना छोड़ अपने कौशल को बढ़ाने का बीड़ा उठाया...बौद्धिकता की व्यावसायिक हिफ़ाज़त का शहर न्यूयॉर्क इसमें उसकी भरपूर मदद करता था।

तीन

तनिष्क की मां घर में उसे तेन कहा करती थी। बचपन में एक बार उनके गांव में एक लामा आये थे, बौद्ध भिक्षुक गोमांग। वे गांव में तीन-चार दिन ठहरे। उन्होंने ही तेन का नामकरण कर दिया। कहा, इसका नाम तनिष्क रखो। ये बच्चा बहुत कुशाग्र है। ये दुनिया देखेगा, यहां बैठा नहीं रहेगा। गोमांग उन्हीं लोगों के यहां आये थे जिनके फ़ार्महाउस में तेन के माता-पिता काम करते थे। दो-तीन दिन उनका साथ रहा, फिर चले गये। तेन अर्थात् तनिष्क तब काफ़ी छोटा था। गोमांग ने एक दिन जब तनिष्क के माता-पिता को अपनी कहानी सुनाई तो तनिष्क ने भी सुनी। पर नन्हे तनिष्क को आधी बात समझ में आई, आधी नहीं।

गोमांग भारत में लेह के पास एक गांव में रहते थे। उनकी अपनी रामकहानी भी कोई कम उतार-चढ़ाव भरी नहीं थी। वे एक बेहद छोटे-से गांव के वासी थे। गांव भी क्या, पांच-सात घरों की एक छोटी-सी बस्ती या ठाणी। इस गांव के सभी लोग बेहद पिछड़े हुए समुदाय से आते थे, कोई आदिवासी समुदाय। देखा जाये तो कभी एक-दो लोग अलग बस्ती बनाकर रहते थे, उन्हीं के परिवार से ये पांच-सात घर हो गये। सब जंगल में ही रहते थे। घास-पात से पेट भरते और दो-चार पशु-मवेशी रखकर उन्हें चराते और उन्हीं के सहारे जीवन काटते। घास-पात से ही तन ढकते। इसी गांव में जब गोमांग का जन्म हुआ तो वह सबसे अलग था। उसका मन भेड़-बकरी चराने और घास-पात खाकर घूमते रहने में नहीं लगता था। वह घरवालों से नज़र बचाकर आसपास चला जाया करता था और तभी उसने बारह किलोमीटर की दूरी पर एक छोटा-सा सरकारी विद्यालय ढूंढ लिया। वह किसी तरह रोज़ वहां पढ़ने आने लगा। संगी-साथी कभी-कभार कोई कॉपी-किताब दे देते थे तो कभी कोई अच्छे घर के लड़के पायजामा-कमीज़ भी दे देते। वह मन लगाकर पढ़ता रहा। और देखते-देखते दसवीं कक्षा पास कर गया।

एक दिन उसका एक सहपाठी उसे अपने साथ अपने घर ले गया। मित्र की मां ने गोमांग को खाने के लिए एक संतरा दिया। गोमांग ने उसे उठाया और खाने के लिए उस पर दांत गड़ा दिया। मां खूब हंसी, फिर उसे बताया कि संतरा कैसे

छीलकर खाते हैं। असल में गोमांग ने कभी संतरा देखा नहीं था। कश्मीर के उस छोटे-से गांव में केवल उसने सेब का पेड़ ही देखा था। वह केवल सेब खाना जानता था। सेब भी उन्हें कभी-कभार कच्चा ही मिल पाता था। वह गांव का पहला ऐसा लड़का बन गया, जिसने संतरा खाया था और पायजामा पहना था।

मित्र के घरवालों को उस पर दया आ गई और उसे अपने घर पर ही रख लिया। वहां वह मित्र के साथ-साथ ही पढ़ता रहा और एक दिन बी.ए. पास हो गया। इतना ही नहीं, बल्कि उसे गांव के स्कूल में मास्टर की नौकरी भी मिल गई। वह उसी गांव का होकर रह गया और पांच-सात घरों के अपने छोटे-से गांव को भूल गया। बाद में उसने किसी से सुना कि सिंधु नदी में बाढ़ आई थी, उसमें गांव के सब घर भी बह गए और सारे लोग भी मारे गये। वह उदास हो गया।

वह सुबह बच्चों को पढ़ाता था, स्कूल में ही रहता था और दोपहर को गांव के लोगों की बकरियां चराने ले जाता था। एक दिन बकरी चरा रहा था तभी उसे एक लड़की मिली। वह लड़की से बात कर रहा था और उसे अपनी कहानी सुना रहा था कि लड़की ने उसके पास आकर उसके पायजामे के ऊपर से उसकी इंद्री पकड़ ली। वह छुड़ाने लगा तो लड़की बोली—इसे संभालकर रख, इससे तेरा परिवार फिर से बन जायेगा। वह नदी में नहाने जाता तो इंद्री को ध्यान से देखता।

दोनों में दोस्ती हो गई, बकरी चराते-चराते दोनों रोज़ मिलकर बातें करने लगे। एक दिन उसने बात करते-करते लड़की की छाती पकड़ ली। लड़की बोली—छोड़, ये तेरे लिए नहीं है।

—फिर किसके लिए है? वह बोला।

—इसमें तेरे बच्चे के लिए दूध आयेगा।

वह हैरानी से लड़की को देखने लगा। सचमुच एक दिन उसकी इंद्री ने लड़की के पेट में बच्चा डाल दिया। दोनों रोज़ मिलते और इंतज़ार करते कि बच्चा कब आयेगा, कहां से आयेगा, कैसे आयेगा? फिर एक दिन लड़की के पेट से एक और छोटी-सी बच्ची हो गई। गांव के लड़कों ने कहा अब तुम दोनों साथ में रहा करो, तुम अब परिवार बन गये। लोगों ने उन्हें कपड़े और दूसरा सामान दिया।

और एक दिन स्कूल के पास ही लोगों ने उन्हें रहने के लिए एक कमरा भी दे दिया। गोमांग ने एम.ए. पास किया। लद्दाख में जाकर रहे, और एक दिन अपनी बेटी को भी पढ़ने भेजने लगे। देखते-देखते पच्चीस साल निकल गये। बेटी पढ़ते-पढ़ते वैद्य बन गई। उसने दवाओं की तालीम भी ले ली और कॉलेज की सनद भी। और गोमांग अब मन-ही-मन सोचता कि अपनी बेटी का भी परिवार बना दे। उसे शरम आती थी अपनी बेटी से कुछ कहने में, मगर उसे कोई अपना

पढ़ाया हुआ अच्छा लड़का दिखता तो वह किसी-न-किसी बहाने उसे अपनी बेटी के पास भेज देता। उसे उम्मीद थी कि उसकी बेटी किसी लड़के...

—लेकिन एक दिन...कहते-कहते गोमांग रुक गया।

—एक दिन क्या? तनिष्क बोल पड़ा।

—एक दिन एक मोटर ने सड़क के किनारे टक्कर मार दी, उससे मेरी बेटी भी ख़त्म हो गई और बेटी की मां भी।

—फिर?

—फिर क्या, मैं लामा बन गया और आकर मठ में रहने लगा।

नन्हे तनिष्क ने पूरे मनोयोग से गोमांग की बात सुनी थी। वह बोल पड़ा—तुमने दोबारा परिवार क्यों नहीं बनाया?

—अब नहीं। अब तुम बनाना। लामा ने कहा।

उसके ऐसा बोलते ही तनिष्क के माता-पिता फ़ार्महाउस पर अपने-अपने काम में लग गये और गोमांग सबको नमस्कार करके वहां से वापस चला गया।

छोटा-सा तनिष्क उसे जाते हुए देखता रहा। लामा चला गया। लेकिन उसके चंद महीनों बाद ही नन्हे तनिष्क ने अपने पिता का अलगाव झेला। फ़ार्महाउस में अपने कुत्ते को साथ लेकर आनेवाली औरत तासी उसके पिता को अपने साथ ले गई। वह ताईवान से आई थी, पिता को वहीं ले गई।

तनिष्क उदास हो गया। उसे ये तो पता नहीं चला कि तासी ने उसके पिता की इंद्री पकड़ी या उसके पिता ने ही तासी की छातियां पकड़ लीं, लेकिन छोटा-सा तनिष्क ये भलीभांति समझ गया कि उसका परिवार टूट गया। अगर मां एक बार भी कह देती कि उसका पिता वापस आयेगा तो वह कुछ उम्मीद से रहता पर मां ने तो हर बार केवल इतना कहा—वो गया। तनिष्क के लिए उम्मीद की कोई जगह नहीं बची।

तनिष्क जब नदी पर नहाने जाता तो अपनी इंद्री को गौर से देखता, पर उसे लगता था कि इससे परिवार नहीं बनेगा। यह फ़ार्महाउस के घोड़े जैसी नहीं थी। काले घोड़े जैसी तो बिलकुल भी नहीं।

पिता के चले जाने के बाद तनिष्क की दुनिया में भय और आशंका का एक नया अध्याय खुल गया। उसकी मां आसानिका अब कुछ चिड़चिड़ी-सी हो गई थी और कुछ खोई-खोई भी रहने लगी थी। तनिष्क को ये तो समझ में आता था कि इसका परिवार टूट गया है पर वो ये नहीं समझ पाता था कि अब वह कैसे जुड़ेगा, क्या मां भी किसी मठ में रहने चली जायेगी?

और उन्हीं दिनों तनिष्क ने ध्यान दिया कि एक अजनबी आते-जाते रुककर

मां से बात करता है। तनिष्क उकताकर खीज जाता और आगे बढ़ने लगता ताकि अजनबी, उन्हें देर होती है, ऐसा जानकर चला जाये। पर ऐसा होता नहीं था। अजनबी बातूनी था, कुछ-न-कुछ बोलता रहता और मां को बातों में उलझाये रहता। तनिष्क को थोड़ा क्रोध भी आता मगर वह कुछ कर नहीं सकता था क्योंकि केवल अजनबी ही नहीं, मां भी उससे लंबी-लंबी बातें करती रहती थी। शायद मां भी चाहती थी कि अजनबी बातें करे। तनिष्क कुछ अनमना हो जाता। वह घर पहुंचकर तरह-तरह से अपना गुस्सा जाहिर करता जैसे, मां गर्म-गर्म भात की थाली उसके सामने रखती और वह कहता कि रुक, पहले नहाकर आऊंगा। मां उसे मिट्टी के बर्तन में दूध देती तो वह तुरंत बोलता कि मेरा पेट ठीक नहीं, तू पी ले। लेकिन परेशानी ये थी कि मां अब उसके गुस्से से खीजती नहीं, बल्कि हंसती थी, और उसकी हर बात आसानी से मानती जाती थी। इससे तनिष्क के मन में अनजाना भय-सा बैठता जाता था। उसे अकारण ही लगता था यह सब ठीक नहीं है। उसका दिल डूबता था। पर वह यह भी नहीं समझ पाता था कि इसमें क्या ठीक नहीं है।

रास्ते में जब अजनबी मिलता और मां को रोककर लंबी-लंबी बात करने लगता तो तनिष्क उपेक्षा से आगे बढ़ तो जाता मगर थोड़ा दूर जाकर वह किसी पेड़ या झाड़ी की ओट से पलटकर पीछे देखता था, उसे लगता था कि मां कहीं उस लंबे अस्त-व्यस्त-से अजनबी की इंद्री न पकड़ ले। कभी वह डरता था कि कहीं अजनबी ही मां की छातियां न पकड़ ले।

तनिष्क का डर गलत नहीं था, इससे उनका तो परिवार बन जाता पर तनिष्क का तो सब डूब जाता। दुनिया खो जाती। मां की छाती में अजनबी के बच्चे का दूध आ जाता।

इस सबसे ध्यान हटाने का एक ही रास्ता था, कि तनिष्क घर से भाग जाये। पर उसे ये भी तो मालूम नहीं था कि घर से भाग जाने के बाद दुनिया कैसी होती है? जब मां साथ में नहीं होती तो क्या होता है? सुबह कौन उठाता है, रात को घर आते ही खाना कैसे मिलता है? तनिष्क ऊहापोह में घर से भाग भी नहीं पाता था। वह चुपचाप मां के साथ-साथ चलता हुआ अगले दिन फिर फ़ार्महाउस चला जाता जहां मां काम करती थी। और वह काम में हाथ बंटाता था।

एक दिन अजनबी फ़ार्महाउस पर ही आ गया। कहता था उसे भी यहीं काम मिल गया है। वो एक पत्ते में थोड़े शहतूत भी लेकर आया था, मां से कहता था कि बेटे को खिला दे।

तनिष्क को क्रोध आया और वह बछड़े को वापस गाय के पास खूंटे से बांधकर बाहर चला गया। मां ने पूछा नहीं कि कहां जाता है, अजनबी भी कुछ नहीं

बोला। बछड़ा भी चुपचाप अपनी जगह पर जाकर खड़ा हो गया जैसे उसे किसी बात से कोई मतलब न हो।

तनिष्क टहलता हुआ थोड़ी दूर चला आया। यहीं पहली बार उसे वो 'अंकल' मिले जो एक दूसरे फ़ार्महाउस के बड़े-से गेट में वेल्डिंग कर रहे थे। तनिष्क चुपचाप खड़ा होकर उन्हें वेल्डिंग करते देखता रहा। अंकल भी एक उड़ती-सी नज़र डालकर काम में लगे रहे। जब उन्होंने तनिष्क को आराम से वहां खड़े रहकर वेल्डिंग देखते हुए पाया तो उससे बोल पड़े—ए लड़के, सामने के हैंडपंप से ज़रा एक लोटा पानी भरकर ला दे। तनिष्क को उनका इस तरह ''ए लड़के'' कहना रुचा नहीं था मगर वह फिर भी मुस्तैदी से लोटा उठाकर पानी लेने चला गया।

लेकिन जब उसने पानी का भरा लोटा लाकर रखा तो अंकल का ''शाबाश'' कहना उसे बहुत भाया। वह मुस्तैदी से खड़ा रहा, मानो अब किसी नये आदेश की प्रतीक्षा कर रहा हो।

और इस तरह तनिष्क की दुनिया में भी एक छोटा-सा झरोखा खुल गया जिससे बाहरी हवा आई और वो हवा आहिस्ता से तनिष्क को लग गई।

वह अंकल से रोज़ मिलने लगा। वो जहां भी काम कर रहे होते वह वहीं चला जाता। कभी केवल बात करता हुआ उनका काम देखता रहता और कभी उनके कहने पर उनके छोटे-मोटे काम कर देता। मां को भी भला इसमें कैसा ऐतराज़ होता। अंकल दुनिया में बिलकुल अकेले हों, ऐसा नहीं था। उनका भी घर-परिवार था पर उनका मन अपने घर-परिवार में बिलकुल भी रमता नहीं था। वह अपना देश छोड़कर बाहर चले जाने के सपने देखते थे। तनिष्क को उनकी बातें कहानियों-सी लगतीं और शायद उन्हें भी तनिष्क अपने सपनों की उड़ान के दौरान किसी उपयुक्त सहायक की तरह नज़र आता। तनिष्क की बातों से उन्हें लगता कि तनिष्क के ऊपर भी कोई बंधन नहीं है और वह भी दुनिया देखने और किसी भी काम में उनका साथ देने में एक विश्वसनीय साथी की तरह लगता। उस छोटे-से लड़के को दुनिया में जल्दी ही बड़ा बना दिया गया था। कुछ लोगों की फ़ितरत शुरू से ही ऐसी होती है कि उनकी परवाज़ आसमान के परिंदों में शामिल होने को ही मचलती रहती है। उनके लिए न तो अपना नीड़ पांव की बेड़ियां होता है और न किसी की मोह-ममता ही उन्मुक्त जीवन में बाधा बन पाती है।

तनिष्क के लिए ख़र्च, प्रक्रिया और यात्रा की सारी भागदौड़ अंकल ने ही की और एक दिन वह अंकल के साथ ही अमेरिका चला आया। उसे ख़ुद भी मालूम नहीं था कि अंकल उसे अपने साथ क्या बनाकर लाये—नौकर, बेटा, रिश्तेदार या

सहयोगी...पर यह सच था कि वह अंकल को अपना सब-कुछ समझकर न्यूयॉर्क चला आया। ज़्यादा पढ़ा-लिखा न होने के कारण उसे किसी से बात करने में थोड़ी परेशानी ज़रूर आती मगर छोटे-से बच्चे को काम के अलावा और किसी बातचीत की ज़रूरत भी क्या पड़ती? वह केवल इतना जानता था कि अंकल किसी ट्रेवल कंपनी में काम करते हुए यहां आये हैं और उसे भी कोई-न-कोई काम सिखा देने की उनकी पूरी कोशिश है।

अंकल के बदलते कामों और धंधों के बीच सबसे ज़्यादा मज़ेदार काम तो तनिष्क को तब लगा जब अंकल न्यूयॉर्क और न्यूजर्सी के बीच चलनेवाली पानी की फेरी पर ड्राइवर के रूप में लगे। जापान के छोटे-से गांव में किसी गाड़ी पर ड्राइवर के साथ चलनेवाले खलासी को वो रुतबा भला कहां मिलता जो यहां रंग-बिरंगी मोटरबोट पर अंकल के साथ चलनेवाले तनिष्क को मिला। वह छोटा-सा किशोर न केवल पोर्ट अथॉरिटी के पास टिकट काटने या सवारियों के सामान को उठाने में मदद करता बल्कि ख़ुद भी दिनभर सैर का आनंद लेता था। साफ़ नीले पानी का सीना चीरती बोट जब गगनचुंबी अट्टालिकाओं के साये में दो विराट नगरों को जोड़ने के लिए चक्कर काटती, तनिष्क आनंद से भर जाता था।

जिस दिन फेरी-बोट पर अंकल का ऑफ़ होने से तनिष्क को छुट्टी मिलती उस दिन वह हडसन नदी के किनारे बोट की सफ़ाई में दिन बिताता था। नदी के बीच से दिनभर गुज़रनेवाले अलग-अलग रंग और आकार के जहाज़ और नावें भी उसके आकर्षण की वजह रहते। किसी शिप पर ढेरों टूरिस्ट दूरबीनों और कैमरों से शहर को निहारते हुए गुज़रते तो किसी पर गाते-नाचते युवाओं की टोली तेज़ संगीत पर थिरकते हुए निकलती। किसी पर जश्न का आलम होता और किसी पर जल्दी पहुंचने की स्पर्द्धा। पानी पर डबडबाते छोटे-बड़े इमारतोंनुमा ये जहाज़ किसी सागर तट का अहसास कराते।

तनिष्क अंकल के साथ जहां रहता था वहां से सुबह सब-वे आकर मेट्रो पकड़ने तक दिन पूरी तरह निकल आता था। देर रात तक अंकल की ड्यूटी रहती। तनिष्क कभी शाम तक उनके साथ रहता, कभी-कभी दिन दोपहर में ही लौट आता। उसकी जानकारी, पहचान और दोस्ती भी आसपास रहनेवाले एशियाई देशों के लोगों से हो गई थी। कोई रेस्टोरेंट में काम करता, कोई फलों और खाने की दुकानों, ठेलों पर तो कोई किसी सैलून या जनरल स्टोर में।

अंकल को एक बार दो दिन के लिए किसी काम से बोस्टन जाना पड़ा। वहां अंकल को अपनी कंपनी के लिए किसी बोट की मरम्मत कराने के दौरान कुछ पार्ट्स ख़रीदने थे। ऐसा कभी नहीं होता था कि तनिष्क को कभी भी अकेला रहना

पड़े, क्योंकि अंकल जहां भी जाते उसे अपने साथ ही लेकर जाया करते थे। किंतु बोस्टन जाते समय उनके साथ कार में कंपनी के और भी लोग होने के कारण इस बार तनिष्क को दो दिन अकेले ही रुकना पड़ा।

शाम को वह खाना खाने के बाद पोर्ट अथॉरिटी के दफ़्तर के पास ही हडसन के किनारे पर एक बेंच पर बैठा हुआ था तभी उसकी निगाह एक बच्चे पर पड़ी जो फ़ुटबॉल हाथ में लिए दौड़ता हुआ चला आ रहा था। उसके साथ में एक ब्राउन रंग का बड़ा-सा कुत्ता भी था। कभी लड़का आगे निकलता था तो कभी कुत्ता आगे दौड़ जाता था। कभी-कभी जब लड़का फ़ुटबॉल को ऊपर ऊंचा उछालता और पकड़ नहीं पाता था तब कुत्ता भी बॉल का पीछा करते हुए उसे पकड़ने की कोशिश करता।

इसी खेल में एक बार बॉल ज़ोर से उछलकर तेज़ी से बहते पानी में जा गिरी। ओ...चिल्लाकर लड़का वहीं ठहर गया, उसके कुत्ते ने एक बार ज़ोर से भौंककर हडसन के किनारे की लोहे की रेलिंग पर चढ़ने की कोशिश की, किंतु रेलिंग ऊंची होने के कारण वह चढ़ न सका और बॉल को पानी में बहते हुए देखने लगा। लड़का और कुत्ता दोनों ही बेबस-से खड़े रह गये।

नज़दीक ही बैठे हुए तनिष्क को न जाने क्या सूझा, उसने उठकर तपाक् से पानी में छलांग लगा दी। जापान के अपने गांव में रहते हुए तैराकी का तो वह बचपन से ही अभ्यस्त था। उसने तेज़ी से तैरते हुए बॉल को पकड़ लिया। बच्चा और उसका कुत्ता दोनों कौतूहल से इस तमाशे को देखते रहे। बच्चा ज़ोर से किलकारी भरकर चहक उठा और तनिष्क को बॉल लेकर आते हुए बेसब्री से देखने लगा। कुत्ता भी ख़ुशी से दुम हिलाता हुआ प्रतीत हुआ।

तनिष्क ने पानी में से ही हाथ उठाकर ज़ोर से उछालकर बॉल बच्चे की तरफ़ फेंक दी। बच्चा गीली बॉल के पीछे-पीछे दौड़ गया जहां वह ठप्पे खाते हुए लॉन की ओर चली जा रही थी।

लेकिन तभी अचानक एक हादसा होते-होते बचा। बॉल फेंकने के जोश में तेज़ी से उछलते तनिष्क ने ध्यान नहीं दिया कि बिलकुल समीप से बहुत तेज़ी से एक बड़ी-सी मोटरबोट गुज़र रही थी। वह पानी को चीरती हुई तनिष्क की पीठ के पीछे से बिजली-सी गति से निकली। लहरों के उछाल के कारण तनिष्क उसे देख न पाया और अचानक उसकी आंखों के आगे अंधेरा-सा छा गया। उस बड़ी-सी आलीशान घरनुमा बोट के समीप से गुज़रते हुए ज़ोर से एक धमाके की आवाज़ भी हुई। सम्भवतः तनिष्क का सिर या हाथ-पैर ज़ोर से बोट के किनारे से बजा।

बोट तेज़ी से आगे निकली और उसके पीछे उठती तेज़ बहाव की लहर ने

तनिष्क के बदन को एक ओर उछाल दिया। पर तभी उस बोट पर सवार एक बूढ़े-से आदमी ने चीते की-सी तत्परता से समीप तैर रहे तनिष्क को बांहों में उठा लिया। तनिष्क के बदन को बूढ़े ने ठीक वैसे ही खींचा जैसे किसी विमान तल पर सामान की कन्वेयर-बेल्ट पर से किसी ने अपना तेज़ी से जाता हुआ लगेज़ पकड़ा हो। तनिष्क अब पूरी तरह उस बोट के डेक पर था। जब उसके गीले बदन को खींचकर बूढ़े ने एक सुरक्षित बैंच पर बैठाया तो उसे यह देखकर तसल्ली हुई कि तनिष्क को किसी भी तरह की चोट नहीं लगी थी। वह आवाज़ सम्भवतः तनिष्क के जूते से बोट के किसी हिस्से के टकराने से हुई हो। किंतु तनिष्क पूरी तरह ठीक व सुरक्षित था। बूढ़े ने अपने सीने पर क्रॉस बनाते हुए भगवान् का शुक्रिया अदा किया।

तनिष्क कुछ भी बोल तो नहीं पाया पर उसकी आंखों ने कातरता से ये इशारा ज़रूर किया कि वह उतरना चाहता है। बूढ़ा तुरंत ही उसका मंतव्य समझ गया किंतु टूटी-फूटी भाषा और इशारों में तनिष्क को यह समझाने में सफल रहा कि वे लोग घूमने जा रहे हैं और दो-तीन घंटे में इसी रास्ते से वापस लौटेंगे, और तभी वे उसे वापस उसके स्थान पर छोड़ देंगे।

तनिष्क भी यह जानकर पूरी तरह संतुष्ट हो गया। उसके कहीं भी, किसी भी प्रकार की चोट न आने के कारण बूढ़ा और तनिष्क दोनों ही ख़ुश थे और अब पूरी तरह सामान्य हो चले थे। गीले कपड़ों में बैठा तनिष्क बूढ़े से इशारे में यह पूछने लगा कि क्या इस बोट पर वह बूढ़ा अकेला ही यात्रा कर रहा है?

बूढ़े ने एक बड़ा तौलिया तनिष्क को देते हुए बताया कि बोट पर बूढ़ा अकेला नहीं है, बल्कि वह तो केवल केयरटेकर है, बोट के भीतर एक बहुत संपन्न-अमीर टूरिस्ट है जो सैर पर निकला है।

यह जानते ही कि बूढ़ा केवल केयरकेटर है तनिष्क उससे तुरंत अनौपचारिक हो गया और उसका सारा संकोच जाता रहा। तनिष्क ने अब अपने पैर से जूते उतारकर एक ओर पटक दिये थे और अपने कपड़े उतार रहा था जो बुरी तरह भीगे हुए थे। उसने तौलिया को कंधे पर डाला और अपनी पैंट को बोट की एक बैंच पर फैला दिया। शर्ट भी उतार दी। अब वह केवल एक छोटे-से ब्रीफ़ में था और रगड़-रगड़कर तौलिया से सिर को पोंछ रहा था। बूढ़े ने एक थर्मस फ़्लास्क से निकालकर तनिष्क को गर्म कॉफ़ी दी जिसे उसने हाथ में तुरंत पकड़ लिया पर तभी बूढ़े ने एक बैग से निकालकर उसे बेहद ढीले पायजामेनुमा पैंट को पकड़ाया तो तनिष्क ने इशारे से मना कर दिया। उसने तौलिया को ही जांघों पर लपेट लिया और गर्म कॉफ़ी पीने लगा जो इस समय बहुत अच्छी लग रही थी। उसे यह भी

ध्यान न रहा कि उसे बूढ़े से भी कॉफ़ी लेने के लिए पूछना चाहिए। वह सहज होकर पेय पीता रहा।

कॉफ़ी पीकर तनिष्क ने मग बैंच पर रखा ही था कि बोट के भीतरी केबिन की लाइट जल उठी। कांच के इस मनोरम केबिन में एक शानदार मख़मली सोफ़े पर एक अरब शेख़ अधलेटा-सा पड़ा था। सामने एक बड़े-से एलर्डडी पर्दे पर किसी सीरियल के दृश्य चल रहे थे, जिस पर साथ में उर्दू या फ़ारसी में लिखे हुए संवाद आ रहे थे। तनिष्क न तो उस लिखावट को ही समझा और न ही भीतर से महीन स्वर में आती आवाज़ों को, पर उसे ये समझने में देर न लगी कि मोटरबोट पर सवार वह टूरिस्ट कोई बेहद ही अमीर व्यक्ति है क्योंकि केबिन की भीतरी साज-सज्जा किसी शाही महल की तरह दिखाई दे रही थी जो तनिष्क ने केवल टीवी पर या फिर फ़िल्म के पर्दे पर ही देखे थे।

लाइट तेज़ होते ही और अमीर टूरिस्ट के उठकर बैठते ही बूढ़ा तुरंत केबिन के भीतर गया और वहां रखी ट्रे में कुछ सामान रखने लगा। वह जल्दी-जल्दी अमीर से बात भी कर रहा था और उत्तेजित होकर मानो उसे कुछ बता रहा था। तनिष्क को यह समझने में देर नहीं लगी कि बातचीत उसके ही विषय में हो रही है क्योंकि अब बीच-बीच में अमीर मुंह घुमाकर बाहर की ओर भी देख रहा था। तनिष्क थोड़ा संकोच से खड़ा रहा क्योंकि एक तो वह केवल तौलिया लपेटे नंगे बदन खड़ा था दूसरे वह उन दोनों के बीच हुई कोई बातचीत समझ भी नहीं पा रहा था। तनिष्क की समझ में यह भी नहीं आ पा रहा था कि इतनी दूर से वह उस संभ्रांत व्यक्ति को कोई अभिवादन भी किस तरह करे!

कुछ देर के बाद बूढ़ा वापस केबिन से निकलकर बाहर आ गया। वह भीतर कुछ सामान रखकर आया था और कुछ बर्तन व ख़ाली डिब्बे, बोतल आदि ट्रे में वापस भी ले आया था। बूढ़ा भी चुप था और तनिष्क भी। दो पल के बाद ही भीतर से अमीर ने इशारा किया और तनिष्क को भीतर बुलाया। तनिष्क कुछ सकुचाया फिर धीरे-से बढ़कर भीतर केबिन में चला गया। अमीर ने इशारे से उसे बैठने को कहा तो तनिष्क सोफ़े के सामने रखे एक स्टूल पर बैठ गया। न तो अमीर ही कुछ बोल पा रहा था और न तनिष्क ही। तनिष्क ने दूर से अमीर शेख़ों को कई बार देखा था, हवाई अड्डे पर भी और बाज़ारों या पर्यटनस्थलों पर भी। पर इस तरह वह पहले कभी उनसे मुख़ातिब नहीं हुआ था। वह सिर से लेकर पैर तक शफ़्फ़ाक सफ़ेद कपड़ों में ढके रहते थे। सिर पर भी एक कपड़ा उनको गर्दन तक ढकता हुआ रहता था। ऐसे में बदन पर केवल एक तौलिया लपेटे तनिष्क थोड़ा असहज अनुभव कर रहा था।

शायद शेख़ भी इस उलझन में था कि सामने निर्वस्त्र बैठे इस नवयुवक से क्या बोले और उधर तनिष्क को भी समझ में नहीं आ पा रहा था कि वह क्या कहे? वह चुपचाप टीवी के पर्दे को ही देखे जा रहा था जिसे उड़ती निगाहों से शेख़ साहब भी देख रहे थे।

बाहर बूढ़ा चहलक़दमी करते हुए कभी आसमान को देखता था, कभी दरिया को...लौटने का समय हो गया था।

चार

टैक्सास शहर के बाहरी हिस्से की एक वीरान-सी लेन के छोर पर बना वह बड़ा-सा बंगला दूर-दूर तक सुनसान पड़ा था। लेकिन ऐसा नहीं था कि उसमें कोई हो नहीं। उसमें रहनेवाले लोग उसके भीतर ही थे और बंगले का बग़ीचा पूरी तरह गुलज़ार था। केवल दो छोटे बच्चे इस समय अपने-अपने स्कूल में गये हुए थे और अब उनके भी लौटने का वक़्त हो चला था। तीन कारें वहां एक के पीछे एक क़तार बांधे खड़ी थीं और एक लंबे पतले पेड़ से सटी एक स्पोर्ट्स कार भी थी। इस कार के रंग को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि यह बच्चों की कार थी। जबकि यह बच्चों की ही कार थी। सोबर, सोफ़ियाना सिलेटी कलर इस कार के मालिक बच्चों की शाहाना तबीयत और पसंद का पता दे रहा था जबकि बाक़ी तीनों कारें गहरे लाल, गहरे नीले और गहरे हरे रंग की थीं।

बंगले की कोई बाउंड्री वॉल नहीं थी और हल्के रंगों की छोटी-छोटी झाड़ियों से ही बंगले की चारदीवारी बनी थी। तीन-चार छोटे ख़रगोश उन विशालकाय बत्तख़ों के साथ अठखेलियां कर रहे थे जो लॉन पर अपनी क्वैक-क्वैक के साथ मटरगश्ती करती घूम रही थीं। एवेन्यू के बाक़ी स्थानीय रहवासियों को बंगले में कोई दिलचस्पी नहीं थी और अधिकांश लोग ये जानते भी नहीं थे कि इस बंगले में कौन रहता है! बंगले के रहवासियों ने भी अपने नाम या नामों की कोई नेमप्लेट बाहर नहीं लगा रखी थी कि आते-जाते लोग ही उसमें रहनेवालों की शख़्सियत से रूबरू हो सकें। और वैसे वहां रहनेवालों की शख़्सियत थी भी क्या? घर का मालिक सुबह-सुबह अपनी कार को लेकर अपने उस दफ़्तर के लिए निकल जाता था जो वहां से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर था। फिर बुरी तरह काम में डूबे उस शख़्स को यह याद भी नहीं रहता था कि कौन-सी कब तारीख़ है, कौन-सा कब वार। केवल बंगले की मालकिन ही घर में रहती थी और उसी के रहने से बंगला गुलज़ार रहता था। ऐसा लगता था कि इस बंगले के पेड़-पौधे पानी से नहीं, मालकिन के घर में रहने से पनपते थे। वहां की हवाओं पर किसी रसायन या इत्रफुलेल की ख़ुशबुओं का कोई असर नहीं होता था। वे केवल उसी दौरान

महकती थीं जब मालकिन घर में हो।

सर्दियों में जब शून्य से भी नीचे तापमान में बर्फ़ गिरती तो बंगला बर्फ़ से ढक नहीं जाता था। बंगले की मालकिन की सांसों की तपिश से बर्फ़ पिघलकर बह जाती। लेकिन बंगले की उदासी फिर भी कम नहीं होती थी क्योंकि इस बंगले की जान लोककथाओं के तोते की भांति हज़ारों मील दूर की किसी बस्ती में बसती थी। विराट बस्ती में। जहां मालकिन का मायका था।

डबलिन के विश्वविख्यात प्रोड्यूसर जॉन अल्तमश के लिए तो ये बंगला एक अबूझ पहेली बना हुआ था क्योंकि मशहूर गायिका-एक्ट्रेस-ब्यूटीक्वीन सेलिना नंदा ने आज शाम की मीटिंग के लिए उसे इसी बंगले में बुलाया था। क्योंकि न्यूयॉर्क आने पर तो दोनों का ही हाल एक जैसा होता था, दस काम और सौ लोग। एकाग्र होकर बैठ ही नहीं पाते थे। इसी से जॉन अल्तमश को डबलिन से सीधे टैक्सास आना पड़ा। लेकिन टैक्सास आकर इस वीरान बंगले में पहुंचने से ऐसा नहीं था कि उन्हें बहुत सारा समय साथ-साथ मिल जाये, क्योंकि लगभग पचपन मिनट बाद ही उनकी वापसी फ़्लाइट थी। पूरा एक घंटा भी उन्हें वहां नहीं मिलनेवाला था। और उस पर भी हालत ये कि बंगले की मालकिन के साथ परिचय भी होना था क्योंकि सेलिना खुद वहां मेहमान थी। बंगला सेलिना नंदा का नहीं था। सेलिना भी बहुत थोड़ी-सी देर के लिए ही वहां आनेवाली थी।

ये भी बड़ी बात थी कि इस समय अल्तमश के वहां आ जाने से उनके दो काम सधनेवाले थे। सेलिना से तो मीटिंग और एग्रीमेंट था ही, वाशिंगटन डीसी के एक म्यूज़ियम में दिखाई जानेवाली एक डॉक्यूमेंट्री का प्रोजेक्ट भी उन्हें मिलने की उम्मीद थी। टैक्सास से वह वाशिंगटन डीसी ही जानेवाले थे जहां म्यूज़ियम के डायरेक्टर के साथ उनका डिनर था।

जॉन अल्तमश का हेलीकॉप्टर जब हाईवे के पास बने एवेन्यू एंट्रेस पर उतरा तो जॉन को शेनॉन की ही याद आ गई जहां जाने पर कोई परिंदा भी पर मारता घूमता दिखाई न देता था। रंगों, हवाओं और सन्नाटों का ही साम्राज्य था। जॉन के लाल रंग के टैक्सी हेलीकॉप्टर को सारा परिवेश अपना-सा लगा।

लेकिन चार क़दम बढ़ाते ही जॉन की महफ़िल भी सज गई। सांसें एक ऐसे बज़्म में थाप देने लगीं जिससे दुनिया की सारी उम्दा तरंगें आकर टकराती थीं। अल्तमश की गदराई, गुलाबी गर्दन तक थिरकने लगी। जिस बंगले के सामने वह रुका था वहां सामने के बड़े लॉन में घुटनों के बल बैठी सेलिना एक ख़रगोश को मुलायम हरे पत्तों की कोई शाख़ अपने हाथों से खिला रही थी। उसके नज़दीक ठिठकी बत्तख़ ने जब क्वैक-क्वैक की आवाज़ के साथ सेलिना को किसी की

अगवानी की सूचना दी, तो सेलिना ने हाथ में ख़रगोश को उठाकर एक हल्का-सा चुंबन दिया और उसे वापस घास पर रख खड़ी हो गई। कुछ देर पहले जो हथेलियां ख़रगोश के नर्म-नाज़ुक रेशों को सहला रही थीं उनकी मुठभेड़ अब एक गहरी गुलाबी कठोर खुरदुरी हथेली से थी। हथेली ने हाथ को जकड़ रखा था और उससे वाबस्ता अंगुलियां अनजाने ही थिरक रही थीं सेलिना के हाथ को थपथपाती।

बंगले के अतिथिकक्ष में कॉफ़ी पीते हुए अल्तमश के सामने यह राज़ ज़ाहिर हुआ कि सेलिना ने उसे यहां मिलने का समय क्यों दिया। दरअसल यह बंगला भारत की एक विख्यात एक्ट्रेस का था जो वर्षों तक बॉलीवुड में धूम मचाने के बाद अब फ़िल्मों से संन्यास लेकर अपने परिवार के साथ यहां रह रही थी।

—ओह, तो यहां फ़िल्म वर्ल्ड की एक महारानी दूसरी महारानी की मेहमान है। कहकर अल्तमश हो-हो-हो कर ज़ोर से हंसा। सामने बैठी सेलिना इस तरह मुस्कराई कि जॉन तय नहीं कर सका—ये मुस्कान किसी संकोच की है या दर्प की।

मेज़बान अभिनेत्री की ओर देखते हुए जॉन ने कहा—असल में संन्यास शब्द से मेरा इत्तफ़ाक़ नहीं है। मैं इसे विराम कहता हूं संन्यास नहीं, क्योंकि संन्यास में तो व्यक्ति की पिछली ज़िंदगी सबकी नज़र से पूरी तरह ओझल हो जाती है और वह अपने लिबास से ही पहचाना जाने लगता है, जबकि आपके केस में तो आपकी पिछली ज़िंदगी आम लोगों के सामने और भी शिद्दत से आने लगती है। वे आपको याद करते हैं, आपकी बातों को याद करते हैं, आपकी वापसी की उम्मीद करते हैं, आपके पुनरागमन का इंतज़ार करते हैं...।

—ऐ-ऐ...बस-बस...तुम मुझे साइन करने आये हो या...कहकर सेलिना अपने मज़ाक़ पर ख़ुद ही हो-हो-हो करके हंस पड़ी। लेकिन इस हंसी में निश्छलता से ज़्यादा ईर्ष्या का वास था। यह पूरी तरह मासूम मज़ाक़ नहीं था। इसमें अल्तमश के ध्यानाकर्षण को हटाने की चुनौती भी थी।

अल्तमश ने भी चौंककर समय देखा और अपना छोटा सुनहरा-सा लैपटॉप घुमाकर सेलिना की ओर कर दिया जिसे मादक निगाहों से सेलिना पढ़ने लगी। मेज़बान अभिनेत्री अब उठकर भीतर जा चुकी थी।

सेलिना को एक दिन की रिकॉर्डिंग की जो क़ीमत ऑफ़र की गई थी वह विश्वभर में अब तक किसी भी कलाकार को एक दिन के पारिश्रमिक के तौर पर दी जानेवाली राशियों में तीसरे नंबर पर थी और इसकी सूचना जॉन अल्तमश ने टाइम मैगज़ीन को भी दी थी।

अल्तमश के चले जाने और उसके हेलीकॉप्टर को उड़ते देख लेने के बाद सेलिना जब वापस भीतर आई तब तक उसकी मेज़बान सहेली अपने कमरे में सोने

के लिए जा चुकी थी। कुछ देर बाद सहेली के पति के लौटने पर डिनर लेकर सेलिना को भी वापस निकलना था। वह भी गेस्टरूम में चली गई।

मौसम धीरे-धीरे सर्द होता जा रहा था और जिस तेज़ी से तापमान गिर रहा था उससे तो लगता था कि जल्दी ही बर्फ़बारी के आसार थे। हिमपात के ये तेवर भी इंसान की हैसियत के अनुसार अलग-अलग थे। कहीं बर्फ़ गिरते ही लोग तरह-तरह के हिम-खेलों के लिए निकल पड़ते थे तो कहीं...किसी-किसी मुल्क़ में बर्फ़ के गिरने से रास्ते रुकने, इंसानों के मरने-दबने या जनजीवन ठप्प होने के समाचार आने लगते थे।

न्यूयॉर्क में तो सेंट्रल पार्क के अहाते में बर्फ़ के खेलों का एक बड़ा आयोजन हर साल होता था। इस आयोजन में कई देशों के खिलाड़ी शिरकत करते थे। अपने टख़नों, कलाइयों या पंजों के कौशल से गुमनाम खिलाड़ी भी दुनियाभर में स्टार बन जाने का रुतबा पा जाते थे। हाड़ गलानेवाली सर्दी में जब तापमान माइनस में होता तब न्यूड खेलों में खिलाड़ियों को संपूर्ण नंगे बदन साइकिल चलाते या तैरते देखना एक अविश्वसनीय अजूबा होता था जिसकी साख़ दुनियाभर में थी।

नग्न खेलों की यह परंपरा लगभग एक शताब्दी पुरानी थी। वास्तव में देखा जाये तो इनकी शुरुआत खिलाड़ियों की अतिमहत्त्वाकांक्षा या तुरत-फुरत मीडिया में लोकप्रियता पा लेने की उत्कंठा को लेकर हुई थी। कुछ युवा खिलाड़ी जब देखते कि खेल समाचारों और प्रसारणों में नामी-गिरामी पुराने लोकप्रिय खिलाड़ियों का ही बोलबाला रहता है तो वे ध्यानाकर्षण के लिए इस प्रकार के पैंतरे जानबूझकर अपनाते थे। कभी कोई खिलाड़ी खेलते-खेलते वहीं अपने कपड़े उतारकर निर्वस्त्र हो जाता तो कभी कोई कंपनी खिलाड़ियों के लिए ऐसे कपड़े ईज़ाद करती जिनसे उनके खेल-कौशल से अधिक उनके शरीर-सौष्ठव का प्रदर्शन हो सके। ऐसे खिलाड़ियों को मीडिया में शीघ्र स्थान मिलता और दर्शक भी उन्हें रोमांच से देखते। वे पत्र-पत्रिकाओं या न्यूज़ चैनलों पर छा जाते। इसी से प्रेरित होकर कुछ खेल कंपनियों या संस्थाओं ने पूरी तरह निर्वस्त्र होकर खेलने के अवसर भी इच्छुक खिलाड़ियों को देना आरंभ किया था और ये खेल लोकप्रिय हो रहे थे। यद्यपि इनकी आलोचना भी होती थी, परंतु आलोचना को भी प्रचार मानने की मानसिकता का भी बोलबाला था। सैकड़ों अंगों से बने बदन के दो-तीन हिस्से इस तरह सनसनी फैलाने में कामयाब रहते। निःसर्ग से अपने रिश्ते जताने का यह तरीक़ा ईज़ाद किया था सभ्यताओं और संस्कृतियों ने। जहां कुछ अविकसित या अल्प-विकसित देशों में आदिवासी, वनवासी निर्धनता के चलते निर्वस्त्र रहने पर विवश थे वहीं संपन्न देशों में शौक़ या सनसनी के लिए ये व्यवहार अपनाये जाते

थे। बहरहाल, इनका लाभ यह था कि ये प्रवृत्तियां इंसान को प्रकृति के क़रीब होने का अवसर देती थीं। सभ्यता के समक्ष यह चुनौती थी कि नग्नता को मजबूरी न रहने दिया जाये लेकिन यदि यह संपन्नता के बावजूद किसी की आंतरिक इच्छा या शगल हो तो इसमें बुरा कुछ न सोचा या माना जाये। जुगुप्सा, वितृष्णा या वीभत्सता को जीवन से हाशिये पर धकेलने के ये प्रयास मानवता के लिए पूर्ण निरापद बने रहें, यही आधुनिक समाज का मंतव्य होता था। यदि किसी महिला की योनि, स्तन या पुरुष का शिश्न देखकर आपको संतृप्ति या ख़ुशी मिल रही हो तो उसे पूर्ण सुरक्षा देते हुए, उसकी भावनाओं व इच्छाओं का सम्मान करते हुए, उसके प्रदर्शन से कहां किसी ऐतराज़ की बात थी? प्रकृति ने भी तो दुनिया बनाने और चलाने के लिए यही औज़ार निर्धारित किये हैं, इन्हें किसी भी ताने-बाने में, किसी भी प्रथा-संस्कार में बांधकर समाज में सुशोभित करने की ज़रूरत तो तब तक ही रहनेवाली थी जब तक दुनिया रहे। कुछ ही साल गुज़रे होंगे जब न्यूयॉर्क के दिल मेनहट्टन की छप्पनवीं स्ट्रीट के एक एवेन्यू कॉर्नर पर गहमा-गहमी शुरू हो चुकी थी। कई देशों के विशेषज्ञ यहां पिछले कुछ समय से आना-जाना किये हुए थे। यहां एक भव्य 'स्पा' आकार ले रहा था जिसमें दुनिया की कई प्रणालियों और विधियों से अलग-अलग थैरेपी देने की सुविधा विकसित की गई थी। इसके कर्मचारी प्रशिक्षण पा रहे थे। आधुनिकतम मशीनों और संसाधनों को यहां सेवा देने के लिए जुटाया जा रहा था।

कैलिफोर्निया के एक शिल्प संस्थान के विशेषज्ञ यहां सजावट कर रहे थे, यू. एन. ओ. भवन के समीप एक होटल में कई अतिथि ठहरे हुए थे। इन्हें विशेष तौर से बुलाया गया था। जहां कभी कई देशों के राष्ट्राध्यक्ष कूटनीतिक सुरक्षा दायरे में रहते हों, वहां अपने क्षेत्र के इन विख्यात विशेषज्ञों को भी वैसा ही मान-सम्मान दिया जा रहा था, क्योंकि बड़े-बड़े नामचीन लोगों को भी सेवाएं देने की योजना इस सैलून के मालिकों ने बनाई थी। इस आधुनिकतम सैलून में काम मिलना इसलिए प्रतिष्ठापूर्ण था क्योंकि पारिश्रमिक देने के मामले में यह कंपनी श्रेष्ठतम रोजगार प्रदाता के रूप में उभरनेवाली थी। क्रिश्चियन, यहूदी, मुस्लिम, बौद्ध, हिंदू सभी धर्म या सम्प्रदायों में मान्य पैथियों की जानकारी रखनेवाले लोग अपने-अपने तरीक़े से सैलून की सुविधाओं का मुआयना कर रहे थे और मालिक लोग दरियादिली से इनके सुझावों पर पानी की तरह पैसा बहा रहे थे।

दुनियाभर में यह मान्यता थी कि अमेरिका सुरक्षा कारणों से अपने देश में आनेवाले सभी लोगों पर कड़ी नज़र रखता है और सभी तीन सौ देशों में यू.एस. वीज़ा या पारपत्र पानेवाले नियम सबसे कड़े माने जाते थे। कोई किसी भी कारण

से अमेरिका में प्रवेश करे, उसे कड़ी और लंबी काग़ज़ी प्रक्रियाओं से गुज़रकर ही अनुमति मिलती थी। लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि यहां आना जितना दुर्गम या कठिन माना जाता था, उतना ही तमाम विश्व के समूचे क्षेत्रों के लोग यहां आने के लिए लालायित रहते थे। किसी भी देश के किसी भी क्षेत्र के सफलतम लोग अपने को तभी धन्य मानते थे जब वे किसी भी रूप में यू.एस. से संबद्ध हो सकें। मानो विश्व का यह महानतम देश हर बात में सर्वश्रेष्ठता की सनद देने की अकेला सलाहियत रखता हो। जितनी लंबी और कठिन प्रक्रिया, उतने ही क्षेत्रों में संभावना और स्वप्न। सिलसिला कभी थमने का नाम नहीं लेता था।

यहां तक कि विश्व के विभिन्न हिस्सों में शरीर की अस्थि-मज्जा की तरह मान्य पहनावे और उसूल भी यहां आकर कसौटी के पायदानों पर डूबते-उतराते झूलते थे। किसी धर्म की पगड़ी, किसी संप्रदाय की टोपी, किसी नस्ल के पहनावे यहां आकर एक बार तो ठिठकते ही थे। दुनिया के तमाम 'वाद' अपनी बिसात बिछाने यहां ज़रूर आते थे। चारों तरफ़ से असीमित समंदरों के इस देश में चुल्लूभर जल भर लानेवाले कमंडल भी देखे जाते, तो तकनीकों और भाषाओं के मेले लगानेवाले बाज़ीगरों की ललक भी। गोया घृणा करने, ईर्ष्या रखने और आलोचना करनेवालों को भी यहां आकर ही सुकून मिलता था। जो इस देश को चाहते थे, जो इस देश को नहीं चाहते थे, दोनों की ही चाहत था यह देश। यही बात इसे महादेश बनाती थी।

कई बार लोगों के बीच संवाद अंतराल भी खाइयों में बदल जाता है, कई बार लोगों की भावनाएं भी देशों की भावनाएं कहलाने लग जाती हैं, कई बार लोगों के कपट या धूर्तता मुल्क़ के कपट कहलाये जाने लगते हैं। अब सेलिना नंदा को ही ये कहां मालूम था कि जिस रिकॉर्डिंग के लिए उसे एक दिन में किसी भी स्टार को मिलनेवाली दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी क़ीमत मिली है उसी रिकॉर्डिंग में कई पेचीदगियां भी छिपी हैं।

जॉन अल्तमश ने सेलिना को इतनी बड़ी क़ीमत का ऑफ़र देकर बड़ी राशि एडवांस के तौर पर दे तो दी थी, किंतु इसी कॉन्ट्रेक्ट में यह भी दर्ज़ था कि यदि सेलिना रिकॉर्डिंग के लिए उपलब्ध नहीं हो पाती हैं, अथवा जिस परफॉर्मेंस के लिए उन्हें अनुबंधित किया गया है, वह नहीं दे पाती हैं तो उन्हें हर्ज़ाने के तौर पर उससे तीन गुनी राशि लौटानी होगी जितनी उन पर व्यय की गई है। इस एग्रीमेंट को दर्ज़ कराते वक़्त जॉन अल्तमश को अपने मोबाइल में रिकॉर्ड की गई वह आवाज़ भी पंजीकरण के साथ दर्ज़ करानी पड़ी थी जिसके लिए उसने इतनी बड़ी रक़म अभिनेत्री को अदा की थी। अब सेलिना को यही आवाज़ प्रस्तुत करनी थी और

इसे उसके आनेवाले म्यूज़िक अलबम में जोड़ा जाना था। यह एक मादक हंसी की खनकती आवाज़ थी जिससे जॉन अल्तमश को तहलक़ा मच जाने की पूरी उम्मीद थी। यदि किसी कंठ से ऐसी आवाज़ निकले तो समझो सुननेवाला ख़रा मर्द।

यह ठीक उसी तरह का प्रस्ताव था जैसा कुछ वर्ष पूर्व एक मीडिया चैनल ने एक अंतर्राष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी को अधोवस्त्र के बिना मैच खेलने के लिए दिया था। यद्यपि इस प्रस्ताव को बाद में एक खेल संघ के दख़ल से रद्द कर दिया गया था। चैनल ने मैच के प्रसारण अधिकार ख़रीद लिए थे।

जॉन अल्तमश ने इस डील पर बहुत बड़ी राशि का बीमा भी करवाया था और इसके लिए उसे बड़ी राशि ख़र्च करनी पड़ी थी। टाइम पत्रिका ने इस डील पर बड़ी टिप्पणी की थी जो अलग-अलग रूपों में दुनियाभर के मीडिया में भी छाई रही।

छप्पनवीं स्ट्रीट पर बन रहे बहुमंज़िला सैलून के कई पार्टनर थे। क़तर के दोहा शहर के शेख़ अलसुल्तानिया मंजूर का भी इसमें बड़ा हिस्सा था। उनकी काली लंबी लिमोज़ीन जब-तब स्ट्रीट में आकर खड़ी होती थी।

एक शाम को बैटरी पार्क में हडसन के किनारे घूमते हुए जब तनिष्क ने अंकल को बताया कि पोर्ट अथॉरिटी के ऑफ़िस के पास खड़ा रहनेवाला सुनहरे रंग का यॉट शिप दोहा के इन्हीं शेख़ साहब का है तो अंकल ने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। स्ट्रीट में लोगों से सुनी-सुनाई बातें कहने-सुनने में अंकल की वैसे भी ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी। वह हमेशा काम-धंधे में व्यस्त रहनेवाला आदमी था। मगर जब तनिष्क ने उसे बताया कि जब वह दो दिन के लिए बोस्टन गया था तब तनिष्क को इस शिप में बैठने का मौक़ा भी मिला था तो वह चौंककर तनिष्क की बात में दिलचस्पी लेने लगा। पर तनिष्क ने उसे ज़्यादा कुछ नहीं बताया, केवल यही कि उसने इसमें यात्रा की थी। तनिष्क जब बाज़ार में शेख़ साहब की लिमोज़ीन देखता था तो उसे जापान के अपने गांव के फ़ार्महाउस का काला घोड़ा याद आ जाता था, जिसकी देखभाल उसके पिता किया करते थे। शेख़ साहब की काली-लंबी लिमोज़ीन तनिष्क को अब जब-तब देखने को मिलती रहती थी।

तनिष्क अंकल के साथ जब से अमेरिका आया था तब से ही कोई बड़ा सपना या उम्मीद उसने कभी नहीं रखी थी। वह अपने जीवन से पूरी तरह ख़ुश था। गांव की याद कभी-कभी आ भी जाती थी पर इससे कभी उसे कोई दुख जैसा नहीं होता था। उसे पूरा यक़ीन था कि उसकी मां ने उसी अजनबी के साथ रहकर अपना घर-परिवार बसा लिया होगा जो तनिष्क के सामने मां से मिलने आया

करता था। तनिष्क को ये भी लगता था कि अजनबी ने अब तक उसकी मां के घर में कोई तीसरा भी पैदा कर दिया होगा। तनिष्क ये नहीं सोच पाता था कि अब अगर उसे कभी वापस अपने देश और गांव जाने का मौक़ा मिला तो वह उस ''तीसरे'' के साथ कैसा सुलूक़ करेगा। अजनबी उसे अपने घर में आने देगा या नहीं? पर वह अब वहां जायेगा ही क्यों? जब उसकी मां का दिल ही दूसरे के बच्चे के दूध का बर्तन बन गया, अब तनिष्क का वहां क्या काम?

वैसे भी तनिष्क को कभी अंकल ने कोई दुख नहीं दिया। कभी डांटा या मारा भी नहीं। घर का सब काम भी अंकल करता था। केवल तनिष्क अपनी मर्ज़ी से कुछ करना चाहे तो करता था, बाक़ी अंकल सब काम कर देता, तनिष्क से कभी कुछ कहता नहीं था। तनिष्क को कभी-कभी लगता कि अंकल को क्या मिलता है, वह क्यों तनिष्क का बोझ उठाता है, वह तनिष्क में क्या देखकर ख़ुश रहता है? क्या रिश्ता है उन दोनों के बीच? कभी नहीं सोचा तनिष्क ने। धीरे-धीरे बच्चे से किशोर बना, और अब किशोर से नवयुवक। आसपास के लोग तो उन दोनों को पिता-पुत्र ही समझते थे, इसलिए कुछ पूछते भी नहीं थे। वैसे भी जापानी होने के कारण दोनों का चेहरा-मोहरा आपस में मिलता था। केवल एक फ़र्क़ था कि तनिष्क गोरा और बहुत सुंदर था, अंकल थोड़ा सांवला और साधारण। ज़्यादा अच्छी अंग्रेज़ी नहीं आने के कारण दोनों की किसी से ज़्यादा बातचीत भी नहीं होती थी। फिर भी तनिष्क से सब बोलने या मेलजोल बढ़ाने की कोशिश करते थे। कोई उसे कुछ खाने को दे देता तो कोई उसके साथ घूमना चाहता। इससे अंकल के काम पर जाने के बाद भी तनिष्क को अकेलापन नहीं अखरता था।

लेकिन इधर कुछ दिन से अब तनिष्क के मन में कुछ उगने-सा लगा था। जिस दिन से वह शेख़ साहब के साथ उनके शिप पर घूमकर आया था, उसे ज़िंदगी कुछ बदलती-सी दिखने लगी थी। अब कभी-कभी उसका दिल करता कि उसके पास भी अच्छे कपड़े हों, अच्छे जूते हों, अच्छा मोबाइल हो...। वह शेख़ साहब से भी दोबारा मिलना चाहता था। उसने शेख़ साहब के शिप के केयरटेकर उस बूढ़े से भी दोस्ती कर ली थी। वह उससे मिलता था, उसके साथ बैठता था, टूटी-फूटी भाषा और इशारों में कुछ बातें भी कर लेता था। दोनों कभी-कभी साथ में चाय-कॉफ़ी पी लेते, पर वह कभी बूढ़े से ये नहीं कह पाता था कि वो फिर शेख़ साहब से मिलना चाहता है। उसे डर लगता था कि ऐसा कहने से कहीं बूढ़ा उससे मिलना-जुलना बंद न कर दे या और कोई संदेह न करने लगे। बड़े-बूढ़े पुराने लोगों को नये लोगों से अपना काम छिन जाने का भय तो हमेशा ही बना रहता है। इसमें बूढ़े का क़सूर भी क्या, यदि वो ऐसा सोचे तो? ये चक्र तो दुनिया में चलता ही

रहता है। ताईवान की तासी ने उसकी मां आसानिका से उसके पिता को छीन लिया, अजनबी ने उससे मां को छीन लिया...लेकिन हर जगह हमेशा नुक़सान-ही-नुक़सान नहीं होते...उसे अंकल मिल गये, बूढ़ा मिल गया...बूढ़े ने शेख़ साहब से मिला दिया। शेख़ साहब का ख़याल आते ही तनिष्क के मन में कोई उम्मीद उठने लगी, उसके चेहरे पर भी चमक आ गई।

और जल्दी ही एक दिन तनिष्क ने शेख़ साहब की उठी हुई उम्मीदों को साध लिया। वह उस पर मेहरबान हो गये। शेख़ साहब ने तनिष्क को पास कर दिया। छप्पनवीं गली के नुक्कड़ पर बन रहे इंद्रलोक जैसे सैलून में तनिष्क को भी काम मिल गया। उसको भी दूसरे कर्मचारियों के साथ ट्रेनिंग पर भेजा जाने लगा। देखते-देखते उसके तेवर भी बदलने लगे और कलेवर भी। उसके तन पर बेहद मनमोहक नये फ़ैशन के आधुनिक कपड़े आने लगे, एक से एक डिज़ायनर। महँगे और उम्दा आरामदायक जूते। हल्की धूप में भारी गॉगल्स। और उसे बातचीत, उठने-बैठने के सलीक़े भी सिखाये जाने लगे। सहकर्मियों के बीच भी उसे शेख़ साहब का ख़ास माना जाने लगा और उसी अनुपात में उसका रुतबा और दबदबा बढ़ने लगा। युवावस्था में क़दम रखता वह कमसिन-सा ख़ूबसूरत जापानी युवक सैलून के प्रतिष्ठित ग्राहकों की तेज़ी से पसंद बनता चला गया और उसी अनुपात में उसका रहन-सहन भी उठने लगा। ये बात भी सहकर्मियों की नज़र में उसे और प्रतिष्ठित व महत्त्वपूर्ण बनाती कि वह गाहे-बगाहे शेख़ साहब से मिलता रहता है। यही नहीं, अब कभी एक-दो दिन के लिए शेख़ साहब शहर या देश से बाहर जाते तो उनके केयरटेकर के रूप में उनके साथ तनिष्क ही जाता। यॉट शिप का बूढ़ा या लिमोज़ीन का शोफ़र अब उसे देखकर सलाम करते और गुडमोर्निंग या इवनिंग के अलावा कोई बात नहीं करते। तनिष्क अब लिमोज़ीन को देखकर अपने गांव के फ़ार्महाउस के काले घोड़े को याद नहीं करता था, बल्कि छठे-छमाहे काले घोड़े की सवारी करना उसे आ गया था।

उसके पहनने-ओढ़ने में आये बदलावों ने अंकल को चौंकाया ज़रूर, पर अंकल ने उससे कभी कुछ पूछा नहीं। उसने भी केवल इतना बताया कि उसे नौकरी मिली है और शानदार कंपनी का मुलाज़िम हो गया है वह। बाक़ी कैसे क्या हुआ, कब हुआ, क्यों हुआ, ये सब न तनिष्क ने बताया और न ही अंकल ने पूछा। अंकल को मन-ही-मन अब कभी-कभी डिप्रेशन घेर लेता था। मन-ही-मन कोई शंका-सी भी पल-पल बनी रहती थी। उसे लगता था कि या तो तनिष्क अंकल को जल्दी ही छोड़कर चला जायेगा या फिर अंकल पर कहीं-न-कहीं से कोई मुसीबत आयेगी। पर ऐसा कुछ नहीं था जिसे लेकर वह तनिष्क से कोई रोक-टोक करे।

केवल इतनी-सी बात, कि अच्छी नौकरी लगी है और बढ़िया पहनने लगा है, के आधार पर तो तनिष्क पर कोई भी लांछन या आरोप नहीं लगाया जा सकता था। फिर क्या था जो अंकल को मन-ही-मन मथे डालता था?

एक रात तनिष्क ने देखा कि अंकल तकिये में मुंह छिपाकर रो रहा है, बुरी तरह, आंसुओं से। तनिष्क को हैरानी हुई। उसे अंकल के इस तरह रोने का कोई कारण नहीं समझ में आया। उसने अंकल के पास आकर पूछा, ख़ूब पूछा, बार-बार पूछा...अंकल के बिस्तर पर आकर उनकी पीठ पर हाथ रखा और उनसे लिपट गया...लेकिन अंकल रोने का कोई कारण नहीं बता सके। तनिष्क ने हर आशंका की बात की...क्या हुआ, क्या काम छूट गया, किसी ने कुछ कहा, मुल्क़ से कोई बुरी ख़बर मिली...क्या कोई ऐसा था, जो दुनिया छोड़ गया...आख़िर क्या हुआ?

कुछ नहीं...यही जवाब और अंकल की सिसकियां हिचकियों में बदल गईं। तनिष्क पूरी रात अंकल के साथ ही सोया, उनसे लिपटकर...वह बड़ा बना रहा और अंकल बच्चे बने रहे...। कौन जानता था कि होनी ने इस तरह किस बात का संकेत दे डाला है।

पांच

पूरी दुनिया में हाहाकार मच गया।

मीडिया ने इस हादसे को इक्कीसवीं सदी का सबसे दर्दनाक हादसा क़रार दिया। कोई सोच भी नहीं सकता था कि निर्दोष, हंसती-खेलती बेगुनाह बस्ती के लिए किसी भी नक्षत्र की चाल ऐसी अनहोनी गढ़ सकती है।

सुरक्षित और विकसित मानी जानेवाली दुनिया पर कोई इस पैशाचिक तरीक़े से विध्वंस ला सकता है यह कल्पनातीत था।

इसे मीडिया ने उदारता पर कट्टरता का सबसे बड़ा हमला निरूपित किया।

विश्वव्यापार का सबसे बड़ा केंद्र माने जानेवाले अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में अवस्थित ट्विन-टॉवर्स को हवाई हमले से गिरा दिया गया। वो गगनचुंबी इमारतें, जिनसे दुनिया की बड़ी-से-बड़ी कंपनियों की गतिविधियां संचालित होती थीं, जहां आर्थिक रणनीतियों के संचालन के पैमाने बनाये जाते थे, उन्हें सबके देखते लोहे, सीमेंट और पत्थरों के ढेर में तब्दील कर दिया गया।

इसे सारी दुनिया में पैर पसार रहे अमानवीय आतंकवाद का सबसे क्रूर मानव विरोधी कृत्य कहकर भी मीडिया को मानो संतुष्टि नहीं मिली।

विश्व की दो सभ्यताओं के बीच वैमनस्य की पराकाष्ठा के इस हादसे में हज़ारों निर्दोष लोगों ने अपनी जान बेवजह गंवाई।

दुनिया ने अब तक दो विश्वयुद्ध देखे थे। उनकी काली यादें संसार के कोने-कोने में अब तक थीं। जापान के हिरोशिमा और नागासाकी का विराट विध्वंस भी देखा-झेला था। किंतु इस हादसे ने ये प्रमाणित किया कि मानव इतिहास ने अपने इतिहास से कोई सबक़ नहीं सीखा। अभी तक कोई ऐसी प्रणाली विकसित नहीं की जा सकी जिससे दोषियों को पहचानकर नेस्तनाबूद किया जा सके।

यहां इस बार भी वही भूल दोहराई गई, जब दोषियों से बदले की प्रत्याशा की कार्यवाही में निर्दोषों की बलि चढ़ाई गई।

विभिन्न तरह के विनाशक बमों का निर्माण भी अब इस सिद्धांत पर होना

जहां क्लेम किया जा रहा है कि इससे मानव संपत्ति को नुकसान पहुंचाये बिना केवल रासायनिक अभिक्रिया द्वारा दोषी व्यक्ति या व्यक्ति-समूह को दुनिया से बेदख़ल किया जा सके, वहीं इस घटना में संपत्ति का बेशुमार, अकूत नुक़सान हुआ और निर्दोष जानों को भी बचाया न जा सका। सिद्धांत तार-तार हो गये।

जहां से चंद किलोमीटर के फ़ासले पर पानी की उद्दाम लहरों पर उदारता का सबसे बड़ा संकेतचिह्न बनकर स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी खड़ी हुई है वहीं इन ट्विन-टॉवर्स का गिराया जाना पूरी तरह से आत्मघाती विनाशक क़दम ही कहा गया। किंतु फिर भी इस हादसे से तय हो गया कि दुनिया के तमाम विचारों-वादों के बावजूद हम अभी सभ्यता और विकास के रास्ते ही में हैं और मंज़िल के आसपास भी नहीं फटके हैं।

दुनियाभर के अख़बारों और समाचार चैनलों ने इस ख़बर को अपनी प्रमुख ख़बर बनाया। जनमानस स्तब्ध रह गया। विभिन्न बहस-मुबाहिसों का आरंभ हुआ किंतु कोई ठोस निर्णय या निष्कर्ष न निकाला जा सका।

यदि तमाम सभ्यता, तकनीक और सुविधात्मक समाज ऐसे गंतव्यों के लिए रचा जा रहा है तो इनकी उपादेयता ही नहीं, बल्कि अवस्थिति पर भी प्रश्नचिह्न लगाया गया।

न्यूयॉर्क शहर के इस ज़ख़्म ने दर्द-पीड़ा और कराह दुनियाभर के मुल्क़ों को दी।

इसकी तहक़ीकात की मांग के साथ-साथ यह प्रश्न भी उठा कि यह कौन-सी भाषा है? इसे कौन बोल रहा है? इसके पैरोकार दुनिया को कहां ले जाना चाहते हैं? वे स्वयं अब कहां आ गये हैं? ऐसे हादसों से किसका, क्या भला होगा? और इन्हीं सवालों के साये में दुनियाभर में आतंकवाद के विरोध का एक ज़लज़ला-सा उठा। विश्व के कई देश वर्षों से वैसे भी आतंकवाद से जूझ रहे थे किंतु अमेरिका जैसे मौजूदा दौर के महादेश में यह हादसा पूरी दुनिया के लिए अब 'करो या मरो' जैसी भावनाएं उकसानेवाला साबित हुआ।

ट्विन-टॉवर्स पूरी तरह से ध्वस्त हो गये। यह शंका-आशंका बनी रही कि किस तरह इस भीषण हादसे को अंजाम दिया गया होगा लेकिन ये काला सच अब किसी छतरी की भांति समूचे संसार पर टंगा था कि ऐसा हुआ है, ऐसा हो गया है।

नई सदी के आरंभ की एक ख़ामोश सुबह अपनी तमाम चहल-पहल भूलकर इसकी गिरफ़्त में आ गई।

न्यूयॉर्क के लोअर मेनहट्टन में हडसन नदी के किनारे एक सौ दस मंज़िल की

ये दो इमारतें दो सगे भाइयों की तरह खड़ी थीं। जिस तरह जुड़वां भाइयों में भी मां की कोख से एक-दो क्षण पहले बाहर आने के कारण एक भाई बड़ा और एक छोटा कहलाता है, ठीक उसी तरह ट्विन-टॉवर्स कहलानेवाली इन इमारतों में टॉवर-एक तेरह सौ अड़सठ फ़ीट ऊंची थी जबकि टॉवर-दो तेरह सौ बासठ फीट ऊंची थी। लंबाई में छह फ़ीट का यह अंतर उस शक्तिशाली एंटिना के कारण था जो टॉवर-एक पर लगा था। इस एंटिना की नज़रों की ज़द में मानो तमाम संसार की समूची गतिविधियां आती थीं। न्यूयॉर्क के यह दोनों टॉवर शहर के सबसे ऊंचे भवन तो थे ही, कुछ समय के लिए उन्हें संसार की सबसे ऊंची इमारत होने का गौरव भी मिल चुका था। जिस तरह दो हमशक्त भाई अपने शरीर के किसी तिल से पहचाने जाते हैं उसी तरह उत्तरी टॉवर पर लगा एंटिना अपनी हमशक्ल इमारत से अलग पहचाना जाता था। इन महान इमारतों का जलवा ये था कि मौसम साफ़ होने पर इनकी छत के ऊपर से पैंतालीस मील की दूरी तक का दृश्य साफ़-साफ़ देखा जा सकता था। न्यूयॉर्क शहर के समस्त टापू ही नहीं, न्यूजर्सी और कनेक्टीकट तक इनकी छत से किसी सजग प्रहरी की भांति देखे जा सकते थे। इन इमारतों का समूचा समूह-विस्तार लगभग सोलह एकड़ में फैला हुआ था। इस अहाते में सात इमारतें, एक विशाल प्लाज़ा और एक भूमिगत शॉपिंग मॉल थी। यहां हज़ारों लोग प्रतिदिन काम करते थे। इसके अलावा पचासों हज़ार लोग इस विशाल कॉम्प्लेक्स में प्रतिदिन किसी कार्य या इसे देखने के लिए आया करते थे। दोनों इमारतें इस पूरे क्षेत्र का मुख्य आकर्षण थीं।

मेनहट्टन के इसी इलाक़े में सुबह जब सूरज उगा तो सब-कुछ सामान्य था लेकिन कुछ समय बीतते ही यह इलाक़ा भयंकर उथल-पुथल से छल गया। एक ख़ूनी ख़ौफ़नाक विमान न जाने किस दिशा से चिंघाड़ता हुआ आकर टॉवर से टकरा गया। इसके साथ ही इस विशालकाय टॉवर का ऊपरी हिस्सा धू-धू करके जल उठा और इस ज्वाला से निकला हुआ धुआं शहरभर ने देखा। पूरे क्षेत्र में किसी भूकंप-सी दहशत फैल गई। लोग अपने घरों की छत या बॉलकनी में आ गए और यह ख़ौफ़नाक मंज़र देखने लगे। हडसन टॉवर की छत पर पसीने से लथपथ तनिष्क जब आकर बदहवास खड़ा हुआ तो वह देखकर हैरान रह गया कि वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की छत से धुएं के साथ-साथ आग की लपटें उठ रही हैं, उसकी खिड़कियों से लोग ऊंचाई की परवाह किये बिना कूद रहे हैं। आनन-फ़ानन में हेलीकॉप्टरों ने आकर चारों ओर घूम-घूमकर ज़ाजजा लेना शुरू कर दिया है। इस हाहाकार के बीच से लोगों को बचाना ठीक वैसा ही साबित हो रहा था मानो मृत्यु के मुख में जा चुके लोगों को जीवन में वापस खींच लाने की दैवी कोशिशें हो

रही हों।

तनिष्क जानता था कि मसरू अंकल आज जर्सी नहीं गये हैं और वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में ही होंगे। उसे अपने कान बजते-से लगे और उसकी आंखों के आगे अंधेरा-सा छाने लगा। किशोर उम्र के उस मासूम को अपने जीवन पर बिजलियां गिरती दिखाई देने लगीं। तभी उसके निकर की जेब में रखे मोबाइल में भयावह वाइब्रेशन शुरू हुआ। उसने झट से मोबाइल जेब से निकालकर कान से लगाया और उधर से बिलखती आवाज़ों के बीच चिरपरिचित मसरू अंकल की कंपकंपाती, गुहार लगाती-सी आवाज़ भी सुनी—बेटा, बेटा...सब ख़त्म...सब ख़त्म...कोई बचा नहीं पायेगा...कोई नहीं...और आवाज़ कहती-कहती जैसे किसी अनंत शून्य में विलीन हो गयी। इससे पहले कि तनिष्क नीचे जाने के लिए सीढ़ियों के पास लगी लिफ़्ट के बटन को छू पाता वह बेहोश हो गया। फिर उसे नहीं मालूम कि क्या हुआ।

दोपहर होते-होते दुनियाभर के ख़बरी चैनल्स संसार को बताने लगे कि अमेरिका में चार कॉमर्शियल हवाई जहाज़ों को उन्नीस लोगों के एक जत्थे ने मिलकर हाईजैक कर लिया था। इस संख्या से साफ़ था कि यह कोई अंतर्राष्ट्रीय स्तर की बड़ी साज़िश थी। ये दो जहाज़ ही एक-एक करके दोनों टॉवरों से टकरा दिये गये और टॉवर समूचे ज़मीन पर आ रहे। ऐसा ही एक हवाई हमला अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी स्थित सशस्त्र सेना मुख्यालय पेंटागन पर भी हुआ। चौथे जहाज़ को भी हाईजैक करके हमलावर वाशिंगटन डीसी की ओर ही ले गये जहां उनका इरादा यू.एस. कैपिटल बिल्डिंग को ध्वस्त करने का था। लेकिन हमलावरों की बदहवासी में यह कोशिश क़ामयाब नहीं हो सकी। जहाज़ में सवार लोगों के विरोध से भी यह अपने इरादे में सफल नहीं हो पाया। और अमेरिकी संसद भवन पर हमला करने की बजाय यह पेंसिलवेनिया के एक ख़ाली क्षेत्र में गिरकर ध्वस्त हो गया। ऐसा लगता था कि यह संसार की किसी नकारात्मक ताक़त द्वारा अमेरिकी शासन-प्रशासन व व्यवसाय-व्यापार को ध्वस्त करने की कोशिश थी। इसी कारण न्यूयॉर्क और वाशिंगटन को निशाना बनाया गया था।

यह हादसा केवल दो देशों की रंजिश नहीं था। इसमें लगभग तीन हज़ार लोग मारे गये जो लगभग नब्बे देशों से आये नागरिक थे। इस तरह इस करतूत ने संसार के ढेरों मुल्क़ों को अपनी त्रासदी से जोड़ लिया।

सुबह के सारे ख़बर-स्रोतों पर जब ''अमरीका पर हमला'' जैसी ख़बर की अनुगूंज सुनाई दी तो अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति फ़्लोरिडा में थे। वहां की राष्ट्रीय रक्षा सलाहकार प्रमुख पेरू में थीं। कुछ पल किंकर्तव्यविमूढ़ रहने के बाद

प्रशासन हरक़त में आ गया और क्षति के व्यापक अनुमानों के साथ-साथ बचाव कार्य भी शुरू हो गया।

जल्दी ही यह उजागर हो गया कि यह अलक़ायदा नामक आतंकवादी समूह का काम था। सभी उन्नीस आतंकवादी उसके सदस्य थे जिन्होंने सारे में हिंसा का तांडव फैलाने के लिए विमानों को अपहृत करके बड़े और महत्त्वपूर्ण ठिकानों पर हमले का प्लान बनाया था। इसमें वे क़ामयाब भी हो गये थे। उनकी दहशतगर्दी अब दुनिया के सिर चढ़कर बोल रही थी। इन आतंकवादियों को लगता था कि हिंसा के बल पर दुनिया के महादेश को क़ाबू करके वे इसे अपनी विदेश नीति बदलने पर मजबूर कर देंगे। ख़ासकर मिडिल ईस्ट के देशों के प्रति अमरीका की विदेश नीति को एक नया रुख़ देने की नीयत से इन दहशतगर्दों ने यह ख़ूनी खेल खेला था जिसमें हज़ारों हंसते-खेलते बेगुनाहों के जीवन का दर्दनाक पटाक्षेप हो गया था। अपने रोज़ाना के कामों पर जाते लोग, देश को पर्यटक की भांति देखने आये लोग, अपनी जीविका के लिए वहां काम कर रहे लोग...सब बेवजह काल की गर्त में समा गये थे। मानो संसार की भव्यतम सभ्यता अपने विनाश के पलों की अनुभूति कर रही हो।

लोग अपने-अपने परिचितों, परिजनों की कुशलक्षेम जानने के लिए सुदूर देशों से संपर्क साधने की कोशिशें कर रहे थे। कुछ लोग तुरंत विमान व गाड़ियां पकड़कर यहां अपनों को खोजने के लिए निकल पड़े थे। ढेरों मोबाइलों व लैपटॉप में जाते-आते संदेश मानवता के ज़िस्म पर तितलियों-पतंगों की भांति उड़ते प्रश्नचिह्नों की तरह परिवेश में फैल रहे थे।

संगीत-प्रेमी विषाद गा रहे थे, चितेरे लकीरों से दर्द उकेर रहे थे और शिक्षाविद् इंसान की शिक्षा की विश्वसनीयता पर सवाल उठा रहे थे। सब ओर विषाद की छाया पसरती जा रही थी।

टॉवर की छत पर लगे फुटबॉल के मैदान जितने बड़े एंटिना ने एक बार पूरे न्यूयॉर्क शहर को टीवी व रेडियो के संकेत प्रसारित किये और उसके बाद हमेशा के लिए ख़ामोश हो गया। मेनहट्टन के अग्निशामक विभाग के लोग बचाव के लिए सबसे पहले पहुंचनेवाले लोगों में थे, किंतु दूसरे टॉवर पर हुए हमले के दौरान इनमें से भी कई लोग मारे गये या हताहत हुए। इसकी कंपनी के कप्तान जॉन ब्राउन का भी केवल हेलमेट ही बाद में बरामद हो सका।

इस घटना ने दुनियाभर में लोगों को किस तरह हिलाया, इसका अनुमान लगाने के लिए शायद कल्पना भी पूरी न पड़े। इस कल्पनातीत आक्रमण के बाद अमरीका की सुविख्यात स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी की एक प्रतिकृति पर न्यूयॉर्क शहर में

लोगों ने न जाने क्या-क्या वस्तु अर्पण करके इसे सुरक्षा प्रदान की, देशों के ध्वज से लेकर वहां की मुद्रा, कलाकृतियां तथा संकेतचिह्न तक इनमें शामिल थे। कीनिया में रहनेवाले एक अफ्रीकी समुदाय ने विप्लव के इस ज़ख़्म को भरने के लिए अमरीका को चौदह गायों का तोहफ़ा भेजा। ये ऐसे लोग थे जो कभी भी अमरीका नहीं आये थे और गाय का इनके जीवन में सर्वसम्मानित स्थान था।

शहर के सीने पर इन हवाई अट्टालिकाओं के स्थान पर देखते-देखते "ग्राउंड ज़ीरो" पसर गया। यह शून्य हमेशा के लिए मानवता के मस्तक पर नासूर की भांति चस्पां हो गया।

तनिष्क अपने मसरू अंकल से फिर कभी नहीं मिल सका। मसरू ओस्से का नाम उसके मन की दीवार पर हमेशा के लिए स्थापित हो गया लेकिन इस नाम की छाया उसकी ज़िंदगी से हमेशा के लिए उठ गई। वह इस अपरिचित देश में हमेशा के लिए अनाथ की तरह हो गया जिसका कोई परिजन यहां अब नहीं था।

इसी से वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ज़ीरो ग्राउंड पर उसमें मारे गये लोगों की याद में दो पूल बनाये गये तो उन्हें पब्लिक के देखने के लिए खोलने के बाद सबसे पहले वहां पहुंचनेवाले लोगों में तनिष्क भी था। दो विशाल आकार के पूल वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ध्वस्त हो जानेवाले दो टॉवरों के पास बनाये गये थे जिनकी गहराई में हडसन नदी का पानी हमेशा आंसुओं की शक्ल में टपकता रहता था। इसकी चारों दीवारों पर उन लोगों के नाम लिख दिये गये थे जिन्होंने इस हमले में अपने प्राण गंवाए। ये लोग दुनियाभर के नब्बे देशों के लोग थे। जब भी यहां कोई पर्यटक आता तो इस स्मृति-स्थल पर अवश्य आता था। लोग अपने-अपने परिजनों या परिचितों के नाम पर फूल भी चढ़ाते थे तो अगरबत्तियां भी जलाते थे, मानो ये धरती के सीने पर उन निर्दोष लोगों की मज़ार थी जो औरों के दिमाग़ की रंजिशों और बदलों का शिकार बन गये थे। तनिष्क भी मसरू ओस्से के नाम पर, जब भी यहां आता एक पीला गुलाब चढ़ाना नहीं भूलता था।

उसे कभी-कभी महसूस होता था कि क़ुदरत किस तरह आपकी सहायता करती है, उसके मसरू अंकल को हमेशा के लिए उससे दूर जाना था तो उसे कुछ ही समय पहले भाग्य ने शेख़ साहब से मिला दिया और अंकल के न रहने पर कम-से-कम तनिष्क के पास एक नौकरी और इस महानगर में रहने का एक स्थान तो हो गया था।

उसे नहीं मालूम था कि मसरू अंकल का जापान में और कौन रिश्तेदार या परिचित था जिसे उनके न रहने की ख़बर देना ज़रूरी हो, क्योंकि उसने तो उन्हें हमेशा से अकेला ही देखा था। चंद दिनों पहले तक तो तनिष्क ही एकमात्र उनका

परिचित था रिश्तेदार था जो उनके साथ एक विश्वास-डोर के सहारे बंधकर अनजान देश में चला आया था।

शेख़ साहब की मेहरबानी से छप्पनवीं स्ट्रीट पर बने सैलून में तनिष्क को काम मिल जाने के बाद से उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया था। उसकी आर्थिक तकलीफ़ें तो दूर हो ही गई थीं, उसे शेख़ साहब का अंतरंग सान्निध्य भी मिल गया था।

उसने अंकल का सब सामान लोगों में इधर-उधर बांट दिया और रहने की वह जगह भी छोड़ दी थी। अब वह सैलून के ऊपर बने एक फ़्लैट में वहां के कुछ कर्मचारियों के साथ ही रहता था। शेख़ साहब का पसंदीदा कार्मिक होने के कारण उसका आना-जाना उनके आवास पर भी था।

शेख़ साहब यहां अकेले ही रहते थे, मगर बीच-बीच में उनका परिवार भी कुछ दिन उनके साथ रहने के लिए यहां आता था। उनके परिवार के बीच भी तनिष्क एक घर के सदस्य की तरह ही पसंद किया जाने लगा था।

सैलून में भी तनिष्क अब लोकप्रिय होता जा रहा था। बचपन में ही पिता के साथ फ़ार्महाउस पर जाने व मां के हाथों देखभाल के कारण तनिष्क को शरीरों की देखभाल का अच्छा अभ्यास हो गया था। उसने अपनी मां से तो बदन की मसाज़ सीखी ही थी, बाद के प्रशिक्षणों ने भी उसे इस कार्य में दक्ष बना दिया था।

सैलून में जो भी ग्राहक तनिष्क के पास आता वह ख़ुश होकर जाता था। ऐसे ग्राहकों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी जो केवल तनिष्क से ही काम कराना चाहते थे। कई बड़े और प्रतिष्ठित ग्राहकों के लिए मालिक ने तनिष्क को बाहर भी भेजना शुरू कर दिया था। उसे अच्छी पेमेंट तो मिलती ही थी, कई बार उपहार भी मिलते थे। पिछले दिनों ही उसे शेख़ साहब के एक मित्र ने एक मोटरबाइक उपहार में दी थी जो घूमने के लिए अबूधाबी से यहां आये हुए थे। तनिष्क ने शेख़ साहब के यॉट शिप पर उन्हें एक बार लंबी सैर कराई थी। वे तनिष्क को अपने साथ और भी कई स्थानों पर लेकर गये थे।

किसी बड़े त्योहार के कारण सैलून आज बंद था। वैसे ऐसा बहुत कम ही होता था कि सैलून पूरी तरह बंद हो क्योंकि न्यूयॉर्क शहर में दुनिया के सभी देशों के लोग आते-जाते रहते थे। यदि किसी एक देश या महाद्वीप का कोई बड़ा त्योहार हो भी तो दुनिया के दूसरे ऐसे कोनों के लोग तो वहां आते ही थे जहां उस त्योहार की कोई गहमा-गहमी न सुनी जाती है न समझी।

हां, केवल क्रिसमस जैसे त्योहार जिनकी धमक पूरे संसार में ही रहती हो, ही ऐसे होते थे जब सब इन्हें मनाने में तल्लीन रहते थे। ऐसे समय सैलून बंद भी

रखा जाता था और कर्मचारियों को छुट्टी भी दी जाती थी। कभी-कभी इनमें भी बदलाव आ जाता था जब पुराने ग्राहक ऐसे अवसर पर भी सेवा की मांग करते।

तनिष्क के साथ कम ही ऐसा होता था जब उसकी बुकिंग किसी-न-किसी मेहमान के लिए न हो। लेकिन आज तनिष्क भी अकेला था। उसकी कोई बुकिंग नहीं थी। शेख़ साहब भी परिवार के साथ देश से बाहर गये हुए थे।

वह अकेला ही बैठा था और न जाने क्यों, उसे आज अपने बीते हुए दिन याद आ रहे थे। वह अपने गांव को लगभग भूल ही चुका था। जब से जापान से यहां आया था उसका वापस वहां जाना एक बार भी नहीं हुआ था। उसे तो ठीक से याद भी नहीं था कि गांव में उसका कौन था, कौन नहीं।

वह पार्क में एक बेंच पर अकेला ही बैठा था। वह सामने के कैफ़े से पीने के लिए कुछ लेकर आने की सोच रहा था, तभी उसने देखा कि एक लड़की उसकी ओर चली आ रही है। लड़की अकेली ही थी। लेकिन वह तनिष्क की ओर देखती हुई इस तरह उसके क़रीब चली आ रही थी मानो उसकी कोई पुरानी परिचित हो।

तनिष्क कुछ देर तक तो यथावत् बैठा रहा लेकिन लड़की के उसे देखते हुए इतने क़रीब चले आना अब उसे असहज करने लगा। वह बैठे-बैठे ही कुछ चौकन्ना हो गया और प्रश्नवाचक मुद्रा में लड़की की ओर देखने लगा।

लड़की उम्र में ज़्यादा बड़ी नहीं थी किंतु उसे देखकर सहसा यह अनुमान लगाना सहज नहीं था कि वह किस देश की नागरिक होगी। उसके आत्मविश्वास से ऐसा भी लगता था कि वह चाहे कहीं की रहनेवाली हो, अब वह लंबे समय से अमेरिका में ही थी।

लड़की ने उसके पास आकर उसे अभिवादन-सा करते हुए सिर हिलाया और उसके बिलकुल समीप बैठ गई। पार्क में लोगों की हल्की आवाजाही थी किंतु लड़की के आसपास कोई और नहीं था। तनिष्क एकांत कोना देखकर यहां आ बैठा था पर उसे यह अनुमान नहीं था कि लड़की एकदम इस तरह सटकर उसके पास बैठ जायेगी।

तनिष्क कुछ बोल नहीं पाया। लड़की ही बोली—क्या मेरे यहां बैठने से तुम्हें बुरा लगा?

—नहीं...बुरा क्यों? तनिष्क कुछ सकपकाया।

—क्या तुम मेरे साथ कुछ देर रहोगे?

—कहां?

—यहीं।

...तनिष्क कुछ बोला नहीं पर उसके चेहरे पर जो भाव आया, उससे लड़की

ने अनुमान लगाया कि तनिष्क मानो कह रहा है, क्यों?

लड़की ने प्रश्न का अनुमान लगाकर कुछ देर प्रतीक्षा की कि वह कुछ बोले। पर तनिष्क कुछ बोला नहीं था। बल्कि उसका ध्यान तो इस बात पर भी नहीं गया कि लड़की की अंगुलियां बैंच पर रखी उसकी हथेलियों को स्पर्श कर रही हैं। उसने हाथ हटाया भी नहीं, लेकिन हाथ की मुद्रा को बदलकर लड़की को कुछ संकेत देने की भी चेष्टा नहीं की।

—क्या मैं तुम्हारी गोद में बैठ जाऊं? लड़की ने तपाक् से कहा।

तनिष्क कुछ संकोच के साथ एक ओर को खिसक गया, लड़की से ज़रा दूर। लड़की मायूस नहीं हुई, बोली—कहो, तुमने जवाब नहीं दिया? क्या तुम थोड़ी देर मुझे प्यार करोगे?

—थोड़ी देर क्यों? तनिष्क के मुंह से निकल गया।

—तो ज़्यादा देर करना, हमेशा करना। लड़की ने लापरवाही से कहा।

तनिष्क अब कुछ झिझका। वह मौन रहा किंतु लड़की से थोड़ा और परे खिसक गया।

—तुम मेरी बात का यक़ीन करोगे? क्या तुम मुझे झूठी तो नहीं समझ रहे?

—तुम क्या कह रही हो, मैं कुछ समझ नहीं रहा। तुम झूठ नहीं बोल रही होगी, पर ये सब मैं क्या जानूं? अब तनिष्क ने भी थोड़ा विश्वास से कहा।

—तो चलो, हम इन सब बातों में न पड़ें, तुम केवल मेरा काम कर दो।

—क्या?

—मैंने कहा न, मुझे प्यार कर दो।

—क्यों?

—क्या तुम नहीं कर सकते?

—पर क्यों?

—मैं दुनिया को कभी-कभी बुरा समझने लगती हूं, लेकिन यदि तुम मुझे प्यार कर दोगे तो मैं समझूंगी कि यह इतनी बुरी नहीं है।

—पर...?

—क्या तुम्हारी दिलचस्पी दुनिया की छवि को सुधारने में नहीं है?

—मेरी समझ में तुम्हारी बातें नहीं आ रहीं।

—पर मैं बातें समझने को कहां कह रही हूं?

तनिष्क निरुत्तर हो गया। कुछ देर दोनों इसी तरह चुपचाप बैठे रहे।

—तुमने कुछ नहीं कहा? लड़की ने ही चुप्पी तोड़ी।

—कुछ...क्या कहूं?

—कुछ मत कहो, लेकिन कर दो।

—क्या?

—प्यार।

—कैसे? तनिष्क ने अब कुछ परिहास के-से स्वर में कहा।

—ऐ, तुम इतने छोटे भी नहीं हो...लड़की ने थोड़ी सख़्ती से कहा।

—इतना बड़ा भी नहीं हूं कि तुम्हारी बात समझ जाऊं...मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा तुम क्या चाहती हो, क्यों चाहती हो...मैं किसी मुसीबत में तो नहीं फंस जाऊंगा...तनिष्क ने अब कुछ भोलेपन से कहा।

—फंसकर तुम्हें मज़ा ही आयेगा...लड़की ने कहा।

—और तुम्हें? तनिष्क बोला।

—अभी कह नहीं सकती...लड़की ने रहस्यमयी आवाज़ में कहा।

फिर कुछ देर की चुप्पी रही। लड़की ही फिर से बोली—बोलो, कर दोगे?

—लेकिन दुनिया ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, तुम इसे बुरा क्यों समझती हो? अब तनिष्क ने थोड़ा ज़ोर देकर कहा।

—दुनिया ने कुछ नहीं बिगाड़ा लेकिन यू नो...प्रिवेंशन इज बैटर देन क्योर! लड़की बोली। लड़की की अंग्रेज़ी से तनिष्क को लगा कि वह अंग्रेज़ी बोलने की अभ्यस्त नहीं है। इससे तनिष्क का हौसला थोड़ा बढ़ा। उसे यक़ीन हो गया कि लड़की यहां स्थानीय नहीं है। इससे उसके ख़तरनाक या कोई षड्यंत्रकारी होने की संभावना भी थोड़ी कम हो गई। तनिष्क को लगा कि अब उसके लिए थोड़ी-थोड़ी उत्तेजना उसके शरीर में आ रही है। लड़की ने उसकी कलाई से जो अंगुलियां स्पर्श कर रखी थीं, उस जगह भी तनिष्क को थोड़ी गर्मी अनुभव हुई। फिर भी वह कुछ बोला नहीं।

—दुनिया कुछ बिगाड़े, क्या उससे पहले ही हमें यह जानने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि हम अपना बचाव, ज़रूरत पड़ने पर कैसे करेंगे?

—तुम साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहतीं? अपना परिचय दो और खुलकर बताओ कि तुम मुझसे जो करने को कह रही हो, उसकी वजह क्या है? अब तनिष्क ने कुछ दोस्ताना लहज़े में कहा। अब वह अपनी उम्र से कुछ बड़ा ही नज़र आने लगा था, कम-से-कम समझदारी में...यों वह लड़की से ज़रूर दो-तीन साल छोटा ही रहा होगा।

—तो सुनो, कहूंगी। लड़की बोली।

तनिष्क ग़ौर से उसकी ओर देखने लगा। तनिष्क ने हाथ बढ़ाकर उसकी शर्ट में गले की ओर से अपनी अंगुलियां भीतर की ओर फिरा दीं। तनिष्क को

महसूस हुआ कि उसकी तर्जनी अंगुली लड़की के वक्षस्थल पर उसकी निपल के बहुत समीप से गुज़रकर आई है। लड़की के निपल की गर्मी तनिष्क को तर्जनी के पोर पर महसूस हो रही थी। लड़की ने नज़रें झुका लीं। तनिष्क ने तपाक् से अपनी दूसरी कोहनी को लड़की के गले में कसकर ज़ोर से अपने सीने से भींच लिया। लड़की का निपल उसके सीने पर अब चुभकर महसूस हो रहा था। लेकिन लड़की कुछ बोलती उसके पहले ही तनिष्क ने अपना मुंह उसके होंठों पर रख दिया और एक गहरे चुंबन से लड़की के होंठों के बीच अपनी जीभ को फिराता हुआ उसे चूमने लगा। उसके हाथ का बंधन ज़रा-सा ढीला होते ही लड़की ने गर्दन ज़रा उठाई और बोली—अब कहने भी दोगे?

—क्या कहोगी? कहकर तनिष्क ने उसका एक वक्ष अपने हाथ में लेकर किसी आम की तरह मसल दिया। वह उत्तेजित होने लगा था।

लड़की अपने नुकीले गुलाबी रंगे नाख़ून से उसके गाल को छूती हुई उसके गाल को चुटकी में लेकर मसल रही थी। अपना दूसरा हाथ लड़की तनिष्क के बालों में फिरा रही थी। तनिष्क अब बुरी तरह उत्तेजित होने लगा था।

उसके पेशे में उसे किसी के भी शरीर से खेलते समय उत्तेजना से दूर रहने का अभ्यास कराया गया था। यों भी वह पुरुष और मादा ज़िस्मों को पूरी तरह निर्वस्त्र देखने का आदी था। किंतु ऐसा पहली बार हो रहा था कि लड़की सीधे-सीधे प्रणय निवेदन कर रही थी और स्वयं अभिसार कर उसे खुला निमंत्रण दे रही थी। उसकी बढ़ती उत्तेजना भी लड़की ने भांप ली थी और वह तनिष्क की जांघों पर हाथ फिराने लगी थी।

तभी सामने से गुज़रते एक वृद्ध दंपति में से पुरुष के हाथ से छड़ी के छूटकर गिर जाने की आवाज़ आई और वे दोनों ही सिर उठाकर उस तरफ़ देखने लगे। पुरुष के साथ चलती महिला ने तुरंत पुरुष को थामकर उसी बैंच के दूसरे सिरे पर बैठा दिया जिसके एक सिरे पर तनिष्क और वह लड़की बैठे थे। महिला थोड़ी दूर पुरुष की छड़ी उठाने चली गई और तनिष्क सामने के कैफ़े से कॉफ़ी लेकर आने के लिए उठ गया।

कॉफ़ी पीते हुए तनिष्क और वह अजनबी लड़की सड़क की ओर जाने लगे। कुछ दूर चलकर लड़की भीड़ में गुम हो गई। हाथ हिलाकर तनिष्क भी अपने घर की ओर जाने लगा।

तनिष्क ने न लड़की का नाम पूछा था और न पता, लड़की ने भी कुछ नहीं बताया और कुछ नहीं पूछा...।

लौटते हुए तनिष्क को वर्षों पूर्व गांव में मिला गोमांग संत याद आने लगा

जिसकी पत्नी ने पायजामे के ऊपर से उसकी इंद्री पकड़कर उसके साथ परिवार बना लिया था। तनिष्क मन-ही-मन मुस्कराता हुआ अपने रास्ते पर जाने लगा।

लेकिन घर पहुंचकर तनिष्क ने अपने कमरे की बत्ती जलाई तो मोबाइल की झनझनाहट से उसे पता चला कि लड़की के पास उसका मोबाइल नंबर ज़रूर है, क्योंकि तनिष्क के मोबाइल पर लड़की का संदेश था—

—"मैं अब तुमसे नहीं मिलूंगी। लेकिन आज मैंने तुमसे जो निवेदन किया था वह मेरे काम आया। मैं पिछले तीन साल से जिस लड़के से फ़ोन पर ही बात करके प्रेम करती रही हूं, वह कल पहली बार मुझसे मिलेगा। वह तुम्हारे जैसा ही दिखता है...निश्चय ही तुम उससे ज़्यादा ख़ूबसूरत और स्मार्ट हो। मैं जानना चाहती थी कि प्रेम करके मुझे बुरा तो नहीं लगेगा। काश तुम मेरे सवाल का जवाब पूरा कर पाते।"

तनिष्क को समझते देर नहीं लगी कि लड़की ने उसका नंबर कभी सैलून में आने पर या किसी विज्ञापन-बोर्ड से लिया होगा। तनिष्क को अपनी जांघों के बीच लड़की के नाख़ूनों का ख़ुफ़िया स्पर्श अब रह-रहकर गुदगुदा रहा था।

लड़की के अब मिलने की संभावना नहीं थी क्योंकि वह कल अपने प्रेमी से मिल जानेवाली थी। तनिष्क के सबक़ में और इजाफ़ा हो चला था...रात भी गहराने लगी थी।

छह

सेलिना नंदा ने न्यूयॉर्क में बार-बार आते-जाते रहने की ज़रूरत के कारण एक घर ही बसा लिया था जहां अपने कुछ स्थानीय स्टाफ़ के साथ वह रहती थी। वह दूसरे देशों के शो या प्रोजेक्ट भी करती तो उनकी डील या बातचीत लोग यहां आकर ही करना पसंद करते थे। शूटिंग चाहे बुलगारिया में हो, अजरबैजान में या उज़्बेकिस्तान में, पर प्रोजेक्ट्स सिरे न्यूयॉर्क में ही चढ़ते थे। यहां आकर बातचीत करता हुआ इंसान अपने-आप को दुनिया के सबसे बड़े रंगमंच पर पाता था। लॉस एंजेलस या मयामी के तार भी यहां से सीधे ही जुड़े थे।

उस दिन शाम से ही सेलिना कुछ अनमनी-सी थी। उसे हल्की-सी हरारत के साथ शरीर में थकान-सी भी महसूस हो रही थी। उसका दिल कर रहा था कि कुछ समय के लिए काम से फ़ुरसत पाकर वह थोड़ा आराम करे। भारी-भरकम पार्टियों और वी वी आई पी लोगों के बीच उठने-बैठने के दौर लगातार चलने के कारण बदन बग़ावत-सा कर रहा था।

आज उसने अपने स्टाफ़ में से किसी को तकलीफ़ देने की भी ज़रूरत नहीं समझी क्योंकि वह शाम को ही सबको रिलेक्स रहने का ऐलान कर चुकी थी। वैसे भी उसे यह अहसास था कि लगातार काम से जो हाल उसका हुआ है, वही बाक़ी लोगों का भी होगा।

रात के हल्के खाने के बाद वह अकेली अपने कमरे में थी। उसने कुछ सोचकर छप्पनवीं स्ट्रीट के एक सैलून में फ़ोन मिलाया, जहां वह पहले भी एक-दो बार जा चुकी थी।

—लेकिन आज आ नहीं सकूंगी। सेलिना ने मुलायम-सी आवाज़ में कहा।

—कोई बात नहीं मैम, नो प्रोब्लम...उधर से तसल्ली देती हुई आवाज़ आई। मैं वहीं भेजता हूं...वह बोला।

सेलिना ने अपने वॉचमैन को फ़ोन कर कहा—कोई आएगा। वॉचमैन ने कुछ नहीं बोलकर केवल 'जी...' कहा और फ़ोन रख दिया। कुछ ही समय बाद दरवाज़े पर आहट हुई।

आगंतुक ने कमरे में आते ही उड़ती-सी नज़र डालकर कमरे का मुआयना किया फिर एक ओर रखे स्टूल पर अपना हेलमेट रख दिया।

सेलिना ने अपने बालों का ऊंचा-सा जूड़ा अपने हाथ से ही लापरवाही से बनाया और एक स्कार्फ़ सिर पर डाल रखा था। वह चश्मा लगाकर हाथ में कोई मैगज़ीन लिए बिस्तर पर अधलेटी-सी बैठी थी। घुटनों तक के गाउन से शरीर गले से लेकर पैरों तक ढका था।

आगंतुक युवक ने अपना काला चश्मा भी उतारकर हेलमेट के पास रख दिया। उसके हाथ में एक डॉक्टरों के बैग की तरह का चौकोर-सा बैग था, जिसे उसने दीवार के नज़दीक रख दिया। उसने बैग का हुक खोल दिया और फिर खड़े-खड़े ही अपने जूते उतारने लगा। सफ़ेद जूते बंधे हुए नहीं थे फिर भी उन्हें उतारकर रखने में उसे थोड़ा समय लगा। उसने जुराबें भी उतार दीं।

सेलिना का ध्यान अब तक मैगज़ीन में ही था। युवक ने हल्का-सा अभिवादन किया और कुछ दूर रखी एक कुर्सी को नज़दीक खींचकर उस पर अपनी जैकेट उतारकर रख दी। उसके अभिवादन का जवाब दे दिया गया था। सेलिना ने उसकी ओर देखा नहीं था मगर सिर हिलाकर प्रत्युत्तर दिया जिसे युवक ने देख लिया था। वह कुछ आश्वस्त-सा हुआ। उसने थोड़ा-सा झिझकते हुए अपने लोअर का नाड़ा खोला और धीरे-से उसे उतारकर कुर्सी पर पड़ी अपनी जैकेट के ऊपर ही डाल दिया।

युवक अब टीशर्ट और एक डिज़ायनर शॉर्ट्स में था। वह झुककर अपने बैग से कुछ सामान निकालकर नीचे रखने लगा। उसने कुछ टिश्यू पेपर, नेपकिन और दो-तीन बोतलें निकालकर बाहर रखीं। कुछ छोटी डिब्बियां भी थीं। इन वस्तुओं के बैग से बाहर आते ही कमरे में बेहद मादक-सी ख़ुशबू फैल गई। युवक घुटनों के बल बैठकर एक प्लेट में कुछ बोतलों से कोई पदार्थ मिलाकर एक गाढ़ा लेप बनाने लगा। फिर उसने कांच का एक कलात्मक-सा जग निकालकर इधर-उधर देखा। वह धीरे-से उठकर सामने बने वॉशरूम में गया और थोड़ा पानी भरकर ले आया। उसने पानी को प्लेट के पास ही रख दिया और बैग से एक बड़ा-सा तौलिया निकालकर अपने घुटनों पर डाल लिया। तौलिया से हाथ पोंछकर उसने उसे वापस बैग के ऊपर ही फैला दिया।

सेलिना ने अब मैगज़ीन रख दी थी और चश्मा भी उतारकर हाथ में ले लिया था। वह चश्मे को कभी दांत से पकड़ती तो कभी हाथ में लेकर घुमाने लगती।

युवक ने शिष्टता से खड़े होकर सेलिना से पूछा—मैम, आपको पानी पीना है?

सेलिना ने 'ना' में सिर हिलाया और चश्मे को एक छोटी मेज़ पर टिका दिया। मेज़ पर ही उसने मैगज़ीन को भी रख दिया। सेलिना ने हाथ के क़रीब बने लैंप के एक स्विच को दबाया तो बिस्तर के क़रीब की रोशनी थोड़ी-सी और तेज़ हो गई। एक दूधिया बल्ब के साथ छोटा-सा रुपहला बल्ब भी जल उठा था।

सेलिना ने प्रकाश के ज़रा तेज़ होते ही देखा कि युवक अठारह-उन्नीस साल का एक बेहद स्मार्ट और गोरा ख़ूबसूरत-सा लड़का है। उसके गहरे काले बाल भी बहुत आकर्षक थे और चेहरे के गोरे रंग को और भी उभार रहे थे। लड़का देखने में जापानी या किसी एशियाई देश का दिखाई देता था।

लड़के ने झुककर एक रंगीन-सा नेपकिन उठाया और उसे अपने कंधे पर रख लिया, फिर वह कुछ रुककर इधर-उधर देखने लगा। ऐसा लगता था कि जैसे वह कुछ पूछना चाहता हो। कमरे में एक हल्के संगीत की आवाज़ आ रही थी, युवक इसी संगीत को ध्यान से सुनता हुआ चेहरे पर आश्चर्य और जिज्ञासा के भाव ला रहा था। सेलिना तुरंत समझ गई कि युवक इस संगीत के बारे में ही पूछना चाहता है कि यह कहां से आ रहा है। सेलिना ने कुछ मुस्कराते हुए एक ओर इशारा किया। युवक आश्वस्त हो गया।

युवक कुछ तो संकोच में था और कुछ उसके एकाध शब्द बोलने से सेलिना ने भांप लिया कि उसे अंग्रेज़ी अच्छी नहीं आती है। वह बात नहीं कर पा रहा था। लेकिन एक बार सेलिना के हल्के-से मुस्करा देने भर से उसके हाथ-पैरों में चपलता आ गई। वह अब ज़्यादा कौशल से प्लेट में रखे लेप को एक चम्मचनुमा लकड़ी से मथ रहा था। सेलिना को अपनी सहायिका लड़की के कॉफ़ी बनाने के क्षण याद आने लगे। लेकिन सेलिना जानती थी कि वह सो रही होगी इसलिए उसने कॉफ़ी पीने का ख़याल छोड़ दिया। वैसे भी युवक के पूछने पर वह पानी तक पीने की मना कर चुकी थी। वह चुपचाप लेटी रही। कमरे की गंध बेहद आकर्षक हो चली थी।

लेप को मथकर युवक ने प्लेट वापस नीचे रख दी और उसमें एक बोतल से थोड़ा-सा झागदार पदार्थ छिड़क दिया। एक-दो फूंक मारकर वह उठ खड़ा हुआ।

अब पलटकर युवक बिस्तर के सिरहाने की ओर आया और उसने सेलिना के सिर पर जूड़े के ऊपर फैले स्कार्फ़ को धीरे-से हटाकर एक ओर रख दिया। सेलिना कुछ और नीचे की ओर खिसककर सीधी हो गई ताकि उसका सिर पूरी तरह तकिये पर आ जाये। युवक ने पुनः बैग के पास आकर लेपवाली प्लेट उठाई और फिर से सेलिना के सिर के क़रीब जाकर कुछ बूंदें अपनी मुलायम अंगुलियों से सेलिना के सिर पर लगाते हुए उसका जूड़ा खोल दिया। सेलिना के लंबे घने बाल छितराकर तकिये पर फैल गये। युवक ने एक पल चमकती निगाहों से बालों

को निहारा फिर वह प्लेट को वापस रखने के लिए बैग के पास आ गया। प्लेट नीचे रखकर उसने एक नेपकिन से अपनी अंगुलियों को पोंछ लिया और धीरे-से सेलिना के पैरों की ओर आकर खड़ा हो गया।

सेलिना ने एक पैर को थोड़ा-सा मोड़ रखा था और दूसरा सीधा फैला हुआ था। उसके पैर के नाख़ूनों पर लगी नेलपॉलिश आज सुबह ही उसकी मेकअप-लेडी ने हटाई थी। तीन दिन से आंखों को चुभनेवाले गाढ़े पर्पल रंग की वह पॉलिश उसके पैरों पर थी जो एक शूट के दौरान लगाई गई थी। उसे तैयार करनेवाली लड़की ने सुबह नहाने से पहले रंग उतार दिया था।

युवक ने जब उसके एक पैर को आहिस्ता से उठाकर अपने हाथों में लिया तो उसने मोड़ा हुआ दूसरा पैर भी सीधा फैला दिया। लड़का धीरे-से बिस्तर के एक कोने पर बैठ गया और उसने सेलिना का पैर उठाकर अपनी गोद में रख लिया। सेलिना ने थोड़ा असहज होकर एक ओर करवट ली और स्विच पर हाथ लगाकर वह लाइट फिर से बुझा दी जो उसने बाद में जलाई थी। अब वापस कमरे में थोड़ी मध्यम रोशनी रह गई। यह रोशनी केवल थोड़े-से ही हिस्से में थी मगर इसका उजास कमरे में फैला हुआ था। सेलिना के सिर के क़रीब तो यह अब भी काफ़ी तेज़ थी।

सेलिना के पैर काफ़ी लंबे थे। युवक ने पैर की अंगुलियों को आहिस्ता से चटकाने के बाद जब थाप देते हुए घुटनों की ओर बढ़ना शुरू किया तो उसे काफ़ी समय लगा। युवक को याद आया कि उसकी ट्रेनिंग के दौरान क्वेटा की मर्फ़ी मैडम ने बताया था—यदि पैरों से ऊपर जाते समय बीच में स्किन का कोई भी हिस्सा तुम्हारी अंगुलियों की छुअन से बचकर छूट गया तो वह ग्राहक को अतिरिक्त ख़लिश देगा और उसे मिलनेवाले आराम में पंद्रह प्रतिशत तक की कमी आ जायेगी।

युवक अच्छी तरह जानता था कि सेलिना नंदा जैसे कस्टमर किसी को आसानी से नहीं मिलते और यहां पंद्रह क्या, एक प्रतिशत स्कोर खोने से भी रिपीट होने के चांस ख़त्म हो जाते हैं। ये मौक़े इंसान तो क्या, उनके एंप्लॉयर को भी नसीब और ख़ासी क़ाबलियत के कोम्बो से मिलते हैं। ये मौक़े इंसान को कहीं-से-कहीं ले जा सकते हैं।

सेलिना के घुटनों पर अपनी अंगुलियों को गोल-गोल घुमाते समय तनिष्क को वह पल याद आने लगे जब अंकल ने उसे वेल्डिंग सिखाई थी। आसान काम नहीं है ये, हर पल चौकन्ना रहकर चिनगारियों से बदन बचाना पड़ता है, अंकल ने कहा था।

—कोशिश करो कि कस्टमर कॉटन में रहे। सिल्क तेज़ी से फ़िसल जाती है

और तुम्हें संभलने का मौक़ा नहीं मिल पाता। तनिष्क को ट्रेनिंग क्लास की बातें रह-रहकर याद आ जाती थीं।

तनिष्क के भीतर आते समय सेलिना अधलेटी थी, इसलिए उसकी लंबाई को वह उस समय नहीं भांप सका था पर घुटनों से ऊपर गाउन के किनारों तक पहुंचने में भी ख़ासा फ़ासला पार करना उसे अहसास करा गया कि कस्टमर टीवी पर जैसी दिखाई देती है, उससे कहीं ज़्यादा है।

सेलिना का गाउन सिल्की ही था। पैरों की हल्की जुंबिश से पट खुलने लगे।

तनिष्क ने सेलिना के बालों पर जो लेप लगाया था उसकी कुछ बूंदें टपककर लाइन बनाती हुई सेलिना के तकिये तक आने लगीं, तनिष्क की निगाह पड़ते ही उसने उठकर एक नेपकिन उठाकर उन्हें गिरने से पहले ही पोंछ दिया। तनिष्क ने कुछ सोचकर अपनी टीशर्ट भी उतारकर कुर्सी पर डाल दी। अब वह केवल शॉर्ट्स पहनकर बैठा था। नेपकिन रखने के दौरान उसने ग़ौर किया कि उसके शॉर्ट्स का नाड़ा थोड़ा-सा लटककर जांघ पर आ रहा था। वह उसे पकड़ने के लिए थोड़ा झुका, मगर फिर कुछ सोचकर उसने नाड़ा ऐसे ही लटका छोड़ दिया। ट्रेनिंग के दौरान एक सीनियर की मौज-मस्ती में कही गई बात सहसा उसके दिमाग़ में कौंध गई। वह याद करके मन-ही-मन मुस्करा पड़ा—यदि किसी वेबसाइट का लिंक आसानी से दिख रहा हो तो उसे खोलने में कोई दिलचस्पी नहीं लेता और आप सेफ़ रहते हैं। यदि लिंक न दिखे तो उसे ढूंढकर खोलने की कोशिश लोग ज़रूर करते हैं। उसके साथी ने कहा था।

तनिष्क ने देखा, उसके टीशर्ट उतार देने पर सेलिना ने असहजता की कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है तो वह भी सहज होकर फिर से बिस्तर पर बैठ गया।

तनिष्क ने सेलिना के गाउन को हल्के हाथ से फैलाकर दोनों ओर कर दिया था और अब वह अंगुलियों से जांघों से पेट की ओर जा रहा था। पेट के ऊपरी हिस्से पर रेशमी पर्दे के इधर-उधर हट जाने पर हल्के नीले रंग की ब्रा भी दिखने लगी थी। लेकिन यदि इतने गहरे रंग की ब्रा से मैचिंग पैंटी होती तो वह झीने पीले गाउन से दिखनी चाहिए थी। फूलदार डिज़ायनर गाउन के नीचे ऐसा कोई संकेत नहीं मिल रहा था। इसका मतलब था कि या तो कस्टमर ने मैचिंग इनर्स नहीं पहने या फिर नीचे के भाग में गाउन के नीचे और कुछ नहीं है। यदि पैंटी है भी तो वह सफ़ेद या क्रीम कलर की है। इस कॉम्बीनेशन से तनिष्क के लिए कस्टमर की मानसिकता का आभास पाना थोड़ा-सा मुश्किल हो रहा था। यह एक तरह से तो अच्छा भी था क्योंकि यही संशय उसे अपने ख़ुद के शरीर के तनाव से भी रोके हुए था। इस समय अपने शरीर के तनाव और तापमान पर क़ाबू रहना भी बेहद

ज़रूरी था क्योंकि तनिष्क पूरी तरह ऊपर से नंगे बदन होकर केवल शॉर्ट्स में था। ज़रा-सी हिमाक़त या जल्दबाज़ी एक बड़े अवसरोंवाले पोटेंशियल कस्टमर को हमेशा के लिए पहुंच के उस पार ले जा सकती थी। क़ीमती प्रशिक्षणों में तनिष्क को यह भलीभांति सिखाया गया था।

वह इस समय किसी एशियाई देश के ग्रामीण फ़ार्महाउस के काले-सफ़ेद घोड़ों की तीमारदारी में नहीं था कि कहीं भी थपथपा दे, कुछ भी मरोड़ दे। उसके सामने महादेश की पॉश बस्ती में ऐसा कस्टमर था जो उसकी ज़िंदगी बदल सकता था। उसे कहीं-से-कहीं ले जा सकता था...उसे ज़रा-सी ग़लती से पछतावे के घने जंगलों में छोड़ा जा सकता था, जहां न उजाले पहुंचते न हवायें...! करोड़ों रुपये कमानेवाली सामने लेटी सेलिब्रिटी केवल कोई मादा ज़िस्म नहीं थी जिस पर सुंदर युवा तन-बदन से बाज़ी जीत ली जा सके। वह तनिष्क के कौशल के लिए टास्क थी।

फूंक-फूंककर क़दम रखते तनिष्क ने जब पेट के बीचों-बीच नाभि में अपनी नुकीली-पतली अंगुली घुमाई तो सेलिना के चेहरे पर नूर आया। आगे के रास्ते बड़े दुर्गम थे। लेकिन इस समय सेलिना का खिला चेहरा उसे पर्वतों के बीच से उगते कीर्तिवान सिंदूरी सूरज के मानिंद दिखा। तनिष्क का आत्मविश्वास बढ़ने लगा।

तनिष्क ने पतंग ज़रा नीचे उतारी। काफ़ी ढलान पार हो जाने पर भी रोंये-रेशे या तंतुओं के कोई संकेत नहीं मिले। वस्त्र की एक ही परत थी। पैंटी नहीं थी।

तनिष्क को याद आया कि आमतौर पर सेशन शुरू होते ही कस्टमर एक बार वॉशरूम जाता है, पानी पीता है। उसने पानी के लिए पूछा भी था। लेकिन इनकार हो गया था। अब दो ही संभावनाएं थीं। प्रायः कुछ कस्टमर पूरी तरह वस्त्र-विहीन होकर काम पूरा करवाते हैं; कुछ कपड़े, चिथड़े, चिंदियां नहीं छोड़ते। लेकिन ये दूसरी क़िस्म के कस्टमर काम गहराई से कराते हैं। तनिष्क को पसीना आने लगा।

यहां संभावना ये थी कि कस्टमर ने उसके आने से पहले पानी पिया होगा और अपने वस्त्र-विन्यास को ढीला करने का उपक्रम भी किया होगा। हो सकता है कि पैंटी तब हटा दी गई हो।

ट्रेनिंग के दौरान सिखाया जाता है कि यदि कस्टमर आपके देश या परिचित संस्कृति का हो तो ऐसे मौक़ों पर अभिवादन या संस्कृति के दूसरे सद्भाव-तंत्र काम करते हैं। जैसे आप उन्हें हाथ जोड़ दें, किस करके सिर झुका दें। ये बिलकुल वैसा ही है जैसे आप अपने से अपरिचित कुत्ते के सामने पड़ने पर टोह लेते हैं।

कुत्ता किसी भी देश, किसी भी नस्ल का हो वह दुम हिलाकर या किलकारी भरके आपको निरापद होने का संकेत दे सकता है। यहां तक कि उसका भौंकना भी काटने की इच्छा से वाबस्ता नहीं है। वह भौंककर ख़ुशी या चुप रहकर क्रोध जता सकता है। यहां त्वरित निर्णय की दरकार ज़रूर होती है पर आपके पास विकल्प उपलब्ध रहते हैं। गोया आप प्रशिक्षित रहते हैं।

जब तनिष्क सेलिना के पेट के एक ओर आकर उसकी ब्रा के हुक ढीले कर रहा था तो सेलिना उसकी जांघ पर लटके उसके शॉर्ट्स के नाड़े से खेलने लगी। वह कभी अपने नाख़ूनों से नाड़े के सिरे के धागों को अलग करने की प्रक्रिया करती तो कभी अपनी अंगुलियों के बीच उसे बटकर उस धागे के समान नुकीला करने लगती जिसे ऐंठकर हम सुई के छेद में पिरोते हैं।

और जब सेलिना ने एक ओर करवट लेते हुए समीप रखे स्टूल पर से अपना मोबाइल उठाना चाहा तो थोड़ा-सा ज़ोर लग जाने से तनिष्क का नाड़ा पूरी तरह खुल गया। ऊपर से शॉर्ट्स के ढीला हो जाने के कारण उसके भीतर से तनिष्क का छोटा-सा कोरियन अंडरवियर दिखाई देने लगा। तनिष्क ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

सेलिना ने लापरवाही से मोबाइल पर कोई नंबर मिलाया और उसी तरह बेपरवाही से बातें करने लगी। तनिष्क ने अब उसकी पीठ की ओर हाथ ले जाकर उसकी ब्रा का हुक खोल दिया और धीरे-से खींचकर ब्रा उतारकर एक ओर रख दी। रेशमी गाउन के पट अब भी वक्षस्थल के कुछ हिस्सों को ढके हुए थे पर काफ़ी बड़ा हिस्सा अब तनिष्क के सामने खुला हुआ भी था। तनिष्क ने गाउन के ऊपर से ही एक ओर की गोलाई पर हाथ लगाकर निपल को हल्के-से हाथ से दोनों अंगुलियों के बीच सहलाया तो सेलिना को ऐसा लगा मानो मोबाइल वाइब्रेट हुआ हो।

पर तुरंत ही वह संयत होकर फिर से बात करने में तल्लीन हो गई। तनिष्क को अब सहज होकर अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिल गई थी। उसने अपने शॉर्ट्स को उतारकर एक ओर रखे अपने जैकेट और लोअर-टीशर्ट के ढेर पर उछाल दिया और अंडरवियर की किनारियों को सहलाता हुआ सहजता से बैठ गया।

अब वह अपने दोनों हाथ सहजता से सेलिना के ज़िस्म के ऊपरी भाग को मसलने में चला रहा था। गाउन के पटों ने थोड़ी-सी आड़ केवल पेट के नीचे जंघाओं के ऊपरी भाग पर की हुई थी, लेकिन स्पष्ट हो चुका था कि पैंटी नहीं है। तनिष्क की अंगुलियों का वह चमत्कारिक कौशल अब अपने चरम पर था जिसके

लिए वह अपने संगी-साथियों में तो पहचाना ही जाता था, अपने सैलून के प्रतिष्ठित ग्राहकों की भी पहली पसंद बना हुआ था।

इस हुनर की पराकाष्ठा कोई एक दिन में नहीं परवान चढ़ी थी। वह बचपन से ही इसके लिए कड़ी मेहनत करता रहा था और संयोग से उसे कई बड़े मौक़े और सहयोग भी उसकी दुनिया में मिलते रहे थे। उसने इसके दौरान बहुत-कुछ खोया भी था।

बचपन से अपने पिता को फ़ार्महाउस के जानवरों की तीमारदारी करते उसने देखा। मां आसानिका ने ख़ुद उसके बदन को गठीला और मज़बूत बनाने में कई पापड़ बेले। उसे शरीर को सुख देनेवाली तरह-तरह की मसाज़ के गुर सिखाये। और गोमांग जैसे लामा संत ने इंद्री पकड़कर परिवार बनने और छातियां पकड़ने से रिश्ते बनने-टूटने के रहस्य सिखाये जो अवचेतन में रहते हुए भी उसके ज़ेहन में रमे रहे। आज वह पसीना बहाता हुआ अपनी प्रतिष्ठित और समृद्ध कस्टमर की छातियों से खेल रहा था। शेख़ साहब से भी मुलाक़ात तो उसकी ज़िंदगी का एक संयोग था मगर शेख़ साहब के दिल में जगह बनाकर उसे संपन्नता का यह मुक़ाम दिलाने में उसका हुनर ही काम आया था। ज़िंदगी ने दर्द की फ़सलें उगाना सिखाया और इन्हीं फ़सलों पर उम्मीदों के फल लगे।

उसने इस हुनर में सलाह-परामर्श और प्रशिक्षण तो कई लोगों से पाया मगर अपने अनुभव और प्रयोगों से भी इसमें चार चांद लगाये। सेलिना उसके बनाये लेप की ठण्डक में मदहोश थी, उसकी अंगुलियों की चपल उष्णता में खोई थी और अपने बेशक़ीमती बदन को उसकी ताबेदारी में देकर चैन से लेटी थी। अब उसे पूरा यक़ीन हो गया था कि सेलिना और उसके बीच कोई परदा न था और न रहनेवाला था। उसका आख़िरी आवरण तीन रंगों का वह संक्षिप्त-सा अंडरवियर भी अब कसमसाने लगा था। किसी बांध की तरह जिसकी मौजें बाहर निकलने को दीवार से टकराने लगी थीं। लेकिन वह उन्हें रोके हुए था।

तनिष्क ने सेलिना के बालों को भी अपनी जादुई अंगुलियों से बेहद राहत पहुंचाई थी। और अब ख़ुद तनिष्क ने उन्हें समेटकर एक बड़ी-सी तौलिया में लपेट दिया था। गाउन भी समेटकर एक ओर रख दिया गया था। सेलिना न जाने रात के इस प्रहर में किससे बात कर रही थी। बात इतनी लंबी हो चली थी फिर भी ख़त्म होने का नाम नहीं लेती थी। तनिष्क का जादू फ़ोन पर उसकी आवाज़ में भी शराब घोल रहा था, वह लफ़्ज़-दर-लफ़्ज मादक होती जा रही थी। लेकिन न जाने कौन था संवाद के उस पार, जो न बातें ख़त्म होती थीं और न ही बोलनेवालों का उम्माद।

तनिष्क की प्लेट में घोला गया लेप अब ख़त्म हो गया था। सेलिना के पूरे शरीर पर उस लेप से एक नई ताज़गी आ गई थी और उस लेप को शरीर की त्वचा से एकाकार करने के लिए तनिष्क ने अपनी हथेलियों और अंगुलियों के क़माल से सात जादू रचे थे। अब बदन में ग़ज़ब की ताज़गी आ गई थी।

तनिष्क अब सेलिना के बिलकुल क़रीब उसके शरीर से लगभग सटा हुआ ही बैठा था और दोनों हाथों से बदन को मसलता हुआ शरीर पर लगे उस लेप को त्वचा में ही जज़्ब कर रहा था।

उसे मालूम था कि यदि समय की कमी के चलते या किसी और कारण से इस लेप को शरीर से पोंछ दिया जाये तो कस्टमर को बेचैनी-सी होने लगती है, जिसके कारण कभी-कभी वह संतुष्ट नहीं होता और स्वयं भी दूसरे के शरीर की समीपता चाहने लगता है। फिर भी तनिष्क तेजी से लेप को त्वचा में जज़्ब करने के लिए मेहनत कर रहा था।

सेलिना की बेफ़िक्री से उसे राहत मिली थी और उसका हौसला काफ़ी बढ़ गया था। वह भी काम का तनाव भूलकर तेजी से हाथ चलाने लगा। अब वह अपनी उत्तेजना सेलिना की नज़र से छिपाने की कोशिश भी नहीं कर रहा था। उसे लग रहा था कि यहां वह पूरी तरह मज़दूर है।

उसे न जाने क्यों अपने घर-परिवार की याद आने लगी। उसको मां की याद आने लगी जो बचपन में मसाज़ करते-करते उसे हंसाने की कोशिश किया करती थी। देखते-देखते उसकी अंगुलियां बिलकुल उसी तरह सेलिना के बदन पर चलने लगीं प्यार से, जैसे मां ख़ुद उसके बदन पर चलाया करती थी। मां मज़दूर नहीं थी, पूरे मन से, दिल के आख़िरी छोर से उसे ख़ुश देखने के लिए किया करती थी। उसका भविष्य मज़बूत बनाने के लिए किया करती थी। उसके लिंग में ताकत भरने के लिए किया करती थी।

अपने आपको मज़दूर न समझने का यही तरीक़ा था। अपने कस्टमर को दिल के आख़िरी छोर से ख़ुश करने का यही तरीक़ा था। सेलिना ने भी उससे कोई सीमा, कोई बाधा, कोई संकोच नहीं रखा था। उसे यही उदारता लौटानी थी, उसे अपनी मां को यही उपहार देना था, मां की भावना को ऊंचाइयों पर पहुंचाना था। उसने न जाने क्या सोचा और सेलिना के पेट पर दोनों ओर से झुककर उसके बग़ल में हाथ ले जाकर ठीक उसी तरह ज़ोर से गुदगुदी कर दी, जिस तरह मां उसके मचाया करती थी।

एकाएक उछलकर सेलिना तेज़ी से चौंकी, उसके हाथ से मोबाइल गिरते-गिरते बचा। वह खनखनाकर इतने ज़ोर से हंसी, कि तनिष्क को अपनी भूल का अहसास

हुआ। उसने चौंककर सेलिना के दोनों खुले वक्षों को ऐसे थाम लिया मानो गुदगुदी करने की अपनी शरारत भरी धृष्टता को वापस ले लेगा। सेलिना मुस्कराकर तनिष्क को देखती रही और अपना बदन चुराती रही, कि कहीं ये फिर से गुदगुदी न कर दे।

तनिष्क डर गया था। उसने अनजाने में अपनी कस्टमर इतनी बड़ी सेलिब्रिटी के साथ ऐसा मज़ाक़ कर दिया था कि यदि वह चाहती तो नाराज़ होकर उसे वापस भेज सकती थी...पर उसने ऐसा कुछ नहीं किया। तनिष्क की शरारत को हंसकर झेल लिया। जब वह फ़ोन पर बात करने में तल्लीन रही तो तनिष्क की जान में जान आई। लेकिन वह मन-ही-मन अब भी अपने को अपराधी ही समझ रहा था और अब सेलिना के बग़ल से उठकर उसके पैरों के पास आ गया था। उसका काम वैसे भी पूरा हो चुका था।

अब तो कस्टमर के मूड और इच्छा की बात थी कि वह और किस सेवा की मांग करे।

तनिष्क ने धीरे-से बिस्तर से उतरकर अब अपना सामान समेटना शुरू कर दिया था। वह हाथ धोने के लिए वॉशरूम में गया किंतु जब वहां से वापस लौटा तो उसकी उत्तेजना शांत थी। यद्यपि अभी तक उसने कपड़े वापस नहीं पहने थे। वह बैग से निकाली गई बोतलों और डिब्बियों को वापस संभालकर बंद कर रहा था। जो पेपर नेपकिन उसने इस्तेमाल किये थे उन्हें डस्टबिन में डालने के लिए वह एक छोटे पॉलिथिन बैग में समेट रहा था। नेपकिन्स को झाड़कर तहाकर एक ओर रख रहा था। ज़मीन पर जहां एकाध जगह पर लेप के छींटे पड़े थे, रूई से रगड़कर उसने उन जगहों को साफ़ कर दिया था। वह वॉशरूम में जाकर पेशाब तो कर आया था पर अब उसे हल्की प्यास लगी थी। संयोग से उसी कोने पर रखी मेज़ पर उसे पानी का एक जग और दो-तीन गिलास रखे दिखाई दे गये, जिस पर संगीत बजाने के लिए एक लैपटॉप रखा था और जिसकी ओर सेलिना ने आरंभ में इशारा किया था। उसने शिष्टता से कोने में जाकर गिलास को पानी से भरा और ख़ुद पीने से पहले शिष्टाचारवश पहले एक ट्रे में रखकर वह पानी का गिलास सेलिना के पास लेकर गया। सेलिना ने पानी उसके हाथ से ले लिया और पीकर गिलास एक ओर रख दिया। तनिष्क ने भी पानी पिया और वह अपने सामान के समीप आया।

इसी समय सेलिना ने बात पूरी करके फ़ोन वापस रख दिया। उसने एक उड़ती-सी निगाह घड़ी पर डाली और फिर गाउन को वापस बदन पर लपेटती हुई बिस्तर पर बैठ गई। ज़मीन पर रखे हुए उसके पैर चमक भी रहे थे और उनमें बला की राहत भी महसूस हो रही थी। सेलिना की आंखों से लगता था कि वह तनिष्क

के काम से बेहद ख़ुश हुई है और उसे मन-ही-मन धन्यवाद भी दे रही है।

तनिष्क बोतलों और अन्य सामान को बैग में भरने लगा। इसी दौरान एक नेपकिन से एक छोटा-सा रंगीन पैकेट निकलकर फ़र्श पर गिर गया। सेलिना ने भी उसे देख लिया।

—ये क्या है? सेलिना जानबूझकर थोड़ा ज़ोर देकर बोली।

—जी...कंडोम हैं...तनिष्क सेलिना के देख लेने के बाद बात को छुपा नहीं पाया। सेलिना भी मानो मज़े लेने के मूड में थी, बोली—काम में नहीं लिया?

तनिष्क गहरी नज़र से खड़ा होकर सेलिना की ओर देखने लगा। वह इतना मासूम और घबराया हुआ लग रहा था कि सेलिना हंस पड़ी। तनिष्क एक पल को ये समझ नहीं पाया कि सेलिना मज़ाक़ कर रही है या सच में उसके काम-सेवा में कोई कमी निकाल रही है। यदि यह बात थोड़ी-सी देर पहले हुई होती तो तनिष्क इसे अपने लिए बड़ा इनाम मानता हुआ अपना जहान लुटाने के लिए तत्परता से तैयार हो जाता, किंतु अब वह वॉशरूम जाने के बाद से बिलकुल उत्तेजित नहीं था, यद्यपि कपड़े उसने अब तक पहने नहीं थे। एक ही पल में उसे यह मज़ाक़ समझ में भी आ गया कि सेलिना उससे हंसी-ठट्ठा कर रही है। इस मौक़े का तनिष्क ने पूरा लाभ उठाया, बोला—मैम, एक बार मुझे एक संतजी मिले थे। वो कहते थे कि इसको काम में लेने से परिवार बन जाता है...कहते हुए उसने अपने अंडरवियर की ओर इशारा किया।

सेलिना ज़ोर से हंसी, फिर बोली—कहां से आये थे वो?

—भारत से...मैं जापान का हूं...तनिष्क ने संकोच से कहा।

सेलिना भी एकाएक गंभीर होकर बोली—उन्होंने बिलकुल ठीक कहा था। जानते हो मैं कहां से आई हूं?

—कहां से? तनिष्क भोलेपन से बोला।

—भारत से...इंडिया से...कहकर सेलिना ज़ोर से हंसी। अब तनिष्क तैयार हो चुका था और हेलमेट उठा रहा था।

सात

अल्तमश ने कुल तीन जगह देखी थीं।

एक लेबनान में बेरुत के पास थी। यहां एक द्वीप पर छोटा-सा होटल था। इस होटल के अहाते के बाहर पानी में ही छोटे-छोटे गोल पत्थर पड़े हुए थे। इन पत्थरों पर अलग-अलग देश और अलग नस्लों के लोगों को बैठाकर होटल की छज्जेनुमा बॉलकनी पर सेलिना के लिए भव्य मंच बनाया जा सकता था।

दूसरी भारत में गोवा में थी। यहां एक विशाल जहाज़ पर दर्शकों को चढ़ाकर फ़िल्माया जा सकता था।

तीसरी जगह अमेरिका में ही थी। यह ज़मीन के नीचे एक बड़ा गुफ़ानुमा इलाक़ा था जिसमें भूलभुलैयां की तरह कई पानी की नहरों का बहाव था। यहां दर्शकों को विभिन्न नावों में रखकर पत्थर की गुफ़ाओं के बीच से सेलिना को फ़िल्माया जा सकता था। हाउज़ केवर्न नाम की यह जगह भीड़भाड़ से ज़रा दूर थी। यदि लगकर तत्परता से किया जा सके तो यह एक ही दिन का काम था पर अनुभवी अल्तमश ने पैसे की परवाह न करते हुए सेलिना से दो दिन का समय ले लिया था।

अल्तमश ये चाहता था कि यदि सेलिना थोड़ा समय निकालकर इन जगहों को देख ले और स्वयं ही जगह का निर्णय ले तो बेहतर होता। किंतु सेलिना के लिए यह इतना आसान नहीं था। फिर भी अल्तमश ने सेलिना को विचार करने के लिए थोड़ा समय दिया था। अलबम की डबिंग तो डबलिन में जॉन अल्तमश के स्टूडियो में ही होनी थी। इतनी व्यापक आयोजना और तैयारी को देखकर सेलिना को भी यह पूरी तरह यक़ीन होने लगा था कि अल्तमश को उनका अब तक का किया गया काम बिलकुल भी पसंद नहीं आया है और वह इसे बदलने के लिए इतने मन से काम करने को तैयार हैं। शायद यही कारण था कि अल्तमश पिछले कई महीनों से इस अलबम के रिलीज़ को टालते आ रहे थे। वे स्पष्टतः यह भी नहीं कह पाते थे कि वह काम से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हैं पर इसे ज़ारी करने से पहले भी समय लेना चाहते थे।

जॉन अल्तमश भारत और पाकिस्तान दोनों की ही फ़िज़ां से भलीभांति वाक़िफ़ थे। वे जानते थे कि भारत और पाकिस्तान जैसे विकासशील देशों का माहौल अलग ही होता है। कोई वहां का कलाकार यदि कहीं बाहर जाकर सफल होता है तो वह मन-ही-मन उसके प्रति ईर्ष्या रखते हैं और उस पेशे के लोग उनके कामों में कोई-न-कोई नुक्स निकालते रहते हैं ताकि उन्हें नीचा दिखाया जा सके। जबकि वहां के अवाम की सोच बिलकुल इससे उलट होती है, बाहर सफल होनेवाले लोगों को वहां लोग महान मानने लग जाते हैं।

यही कारण था कि सेलिना के अलबम रिलीज़ में होनेवाली देरी का कोई कारण जॉन अल्तमश ने ज़ाहिर नहीं किया था।

लेकिन अब सब-कुछ तय हो चुका था और जॉन ने पूरी तैयारी कर ली थी कि इस प्रोजेक्ट को किस तरह पूरा करके लॉन्च करना है।

इस बीच सेलिना के कुछ हॉलीवुड प्रोजेक्ट्स पर भी बात चल रही थी। उसने प्राथमिकता से समय देकर अपने देश के स्थानीय प्रोजेक्ट्स को भी पूरा करवा दिया था।

सेलिना के मैनेजर ने अल्तमश के फ़ोन के बाद उसकी डायरी में दो आकस्मिक छुट्टियां दर्ज़ कर दी थीं। ख़ुद सेलिना ने गोवा के विकल्प को अंतिम विकल्प के रूप में रखा था और वह कोई भी अवकाश या मौक़ा मिलते ही पहले बेरुत या बोस्टन जाना चाहती थी। उसने बेरुत के उस होटल की ख्याति सुनी थी और वहां जाना उसकी प्राथमिकता सूची में पहले नंबर पर था।

होटल की जानकारी भी कर ली गई थी और लोकेशन पर हिंदू-मुस्लिम या अन्य एशियाई संस्कृतियों के प्रभाव को देखने के लिए सेलिना ने अपनी एक मित्र को रिसर्च के लिए लगा दिया था। यह एक गंभीर बात थी जिसे अल्तमश जैसा अनुभवी प्रोड्यूसर ही समझ सकता था। किसी भी संगीत की व्याख्या उसे सुननेवाले अवाम की हैसियत, फ़ितरत और सलाहियत के मुताबिक़ होती है और यदि देखने-सुननेवालों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि जो कहा जा रहा है वह सुना-समझा जा रहा है तो प्रस्तुति सफल होती है। अन्यथा दर्शक या श्रोता उसे नकार देते हैं।

पाकिस्तान के मशहूर शायर दानिश जांनिसार ने पिछले दिनों जो गीत अल्तमश को भेजा था उसके शब्द अल्तमश को मन को छूने वाले लगे थे—

रेत के दरिया की आस में पानी
बरखा की चोली में पानी

बादल की झोली में पानी
पानी की हर सांस में पानी

लेकिन इसका संगीत अल्तमश को पसंद नहीं आया था। वह ख़ुद इस पर काम करना चाहता था। अल्तमश की आदत थी कि जब वह काम से समय निकालकर कुछ देर के लिए सैर-सपाटे पर निकलता था तो काम के बाबत बिलकुल नहीं सोचता था। यह ट्रिप उसका ऐसा ही ट्रिप था, सिर्फ़ और सिर्फ़ सैर-सपाटा...ख़ालिस अपने लिए चुना हुआ एकांत। इस बार जॉन अल्तमश सागर के इन अजूबों में खोया रहा।

पानी के नीचे इतना बड़ा बेड़ा देखकर कोई साधारण इंसान तो दांतों तले अंगुली ही दबा ले। इसकी विशालकाय रसोई के बरतन ख़ुद ऐसे लगते थे मानो छोटी-मोटी नावें ही हों। इनमें कभी सात टन मांस रोज पकता था। धरती के किनारों से दूर यह समंदर की एक अपनी ही दुनिया थी। यह विशाल पोत वर्षों पहले कभी विश्वयुद्ध में काम में लिया गया होगा पर अब अल्तमश इसे देखते हुए इसकी विशालता को मन-ही-मन सराह रहा था। इसके चौड़े सीने से लड़ाकू विमान दौड़ाये और उड़ाये जाते थे। किसी विशालकाय खेल मैदान-सा यह जहाज़ अब दुनिया के एक निवृत्त बूढ़े की तरह खड़ा था। जिससे दुश्मन देश की सेनाओं को तो क्या, साथ लेटी मादा को भी डर नहीं लगता था। लेकिन कभी इसी जहाज़ ने देशों के ऊपर तने आकाश की रखवाली की थी। अल्तमश पानी के नीचे की दुनिया में भी ख़ूब घूमा। पनडुब्बी में रहते हुए वह धरती के किनारे-किनारे समंदर की लहरों के दरम्यान मानो किसी विशालकाय मछली की ही मानसिकता में ख़ुद को ढाले रहा।

किसी भी क्षेत्र के संसार के महान कलाकार और महान लोग शायद दुनिया से कुछ समय का संन्यास इसी तरह लेना पसंद करते हों।

दक्षिण अफ्रीका के समीप एक छोटे-से द्वीप में कुछ समय बिताकर जब जॉन अल्तमश वापस जा रहा था तो उसका मन प्रसन्न नहीं था। बल्कि देखा जाये तो मन में एक हताशा भरे खालीपन का अहसास लेकर वह यहां से वापस लौट रहा था। प्रायः कहीं से भी छुट्टी बिताकर लौटने के बाद ऐसी हताशा उसे कभी होती नहीं थी। वह तो तरोताज़गी के साथ ही लौटकर अक्सर अपने काम में वापस जुटा करता था। लेकिन इस बार इस सैर-सपाटे के बाद भी संतुष्टि या ताज़गी महसूस न होने के दो कारण थे। पहला कारण तो ये था कि इस बार अपनी सैर पर वह जिस लड़की को साथ ले गया था, उसने उसे पूरी तरह निराश किया। लड़की काफ़ी लालची और केलकुलेटिव थी। उसकी स्थिति उस लालची बाज़ीगर जैसी थी

जो पब्लिक को खेल-तमाशा दिखाने के बाद दर्शकों को तालियां बजाते छोड़कर पहले उनके सामने ही फेंके हुए सिक्के बटोरने लग जाता है। इस हब्शीपन से पब्लिक को अहसास होने लगता है कि जादूगर उनका मनोरंजन नहीं कर रहा बल्कि कमाई करने आया है। इससे जादूगर की विश्वसनीयता संदिग्ध हो जाती है। दर्शकों का मज़ा लुट जाता है।

छोटे क़द की वह सांवली-सी लड़की संतुष्टि और आनंद के हर क्षण को भुनाने की फ़िराक में रहती थी। यहां तक कि अल्तमश के स्खलित होने के बाद अधोवस्त्र भी पहनने से पहले उसने बिस्तर पर अल्तमश को अपने बच्चे की तस्वीर दिखा दी और कहा कि, वह इस बच्चे को किसी अच्छे बोर्डिंग स्कूल में दाख़िल कराना चाहती है पर वहां दाख़िला बेहद महंगा है। अल्तमश को ऐसी वितृष्णा हुई कि यदि उसने पांच मिनट पहले ऐसा किया होता तो शायद जॉन स्खलित होने से पहले ही अपनी उत्तेजना शांत हो जाने जैसा महसूस करता। उसने मन-ही-मन इस लड़की को फिर कभी अपने साथ न रखने का निर्णय ले डाला। ख़ासकर रात के उम्मीदवारों की सूची में से तो उसका नाम बिलकुल ही निकाल डालने का फ़ैसला अल्तमश ने कर डाला। उसे ऐसी लालची महिला के तन से मिले संतोष के मोती बेहद लिजलिजे और व्यर्थ लग रहे थे।

अल्तमश को अजीब-सा मूड होने और दूसरों के सहारे ख़ुशी कमाने के इस ट्रिप के विफल रहने का एक कारण और लग रहा था। दरअसल जिस होटल में अल्तमश ठहरा था उससे दोपहर को ही वापस लौटते समय उसने एक बड़े ईवेंट की तैयारियां देखीं जिससे उसे लगता रहा कि उसे कल की जगह आज की रात इस होटल में बिताने आना चाहिए था।

जिस वेटर को सुबह अल्तमश ने भारी टिप देकर अपने कमरे में बुलाया था उसी ने बताया कि आज की शाम होटल में एक बहुत बड़ी पार्टी होनेवाली है। उसने बताया कि होटल के नॉर्थ विंग के सभी कमरे ख़ाली रखे गये हैं और केवल साउथ विंग में ही विशेष अतिथिगण ठहराये गये हैं।

एक विश्वप्रसिद्ध सौंदर्य प्रतियोगिता का एक राउंड यहां होनेवाला था जिसमें भाग लेनेवाली औरतों को यहां ठहराया जा रहा था। मॉरीशस में इस राउंड की ख़ासी चर्चा और तैयारियां थीं। यह अद्भुत होता है कि समंदर के किनारे घूमते सैलानियों को सागर तट पर धूप में लेटी किसी युवती के बारे में पता चले कि यह अपने देश के मौजूदा दौर की सबसे ख़ूबसूरत औरत है। किसी डिपार्टमेंटल स्टोर में सैंडल देखती लड़की के बारे में आप सुनें कि वह संसार के एक बड़े देश की सबसे सुंदर महिला के तौर पर यहां आई हुई है। भीड़ भरे बाज़ार में बड़ा-सा हैट

और गहरा काला चश्मा लगाकर आपके बग़ल से गुज़री औरत के बारे में आपको स्थानीय अख़बार बतायें कि वह एक देश में हज़ारों महिलाओं से स्पर्द्धा करके अब आकर्षकतम कन्या के तौर पर यहां इठला रही है। विचित्र और अद्भुत।

लेकिन हर व्यक्ति हर शख़्स से प्रभावित नहीं होता। जिन देशों में महिलाएं लंबी होती हैं वहां के लोग किसी ऐसे देश की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी से भी प्रभावित नहीं होते जहां लोगों का सामान्य कद ही बेहद छोटा होता हो। एक काली औरत उन लोगों को कैसे पसंद आ सकती है जिनका पूरा जीवन ही फ़ेयर एंड लवली के विज्ञापन देखते हुए बीता हो। लेकिन हो सकता है कि उसी काली औरत के देश में सफ़ेद या गोरा होना कोई बीमारी मानी जाती हो। ऐसे में सुंदरता के पैमाने सार्वभौमिक कैसे हो सकते हैं? सर्वमान्य सुंदरता किसे कहा जा सकता है?

...तो शरीर के कुछ माप और त्वचा के रंगों से चुने गये ज़िस्म सिर्फ़ व्यक्तित्व का एक पक्ष या सेगमेंट हो सकते हैं, इनके टाइटल या ताज को कोई सार्वभौमिक नाम कैसे दिया जा सकता है? कैसे किसी को ब्रह्मांड की सबसे सुंदर मादा कहा जा सकता है? जबकि ख़ुद ब्रह्मांड को लेकर संशय बने हों।

यह सब बातें उन पोस्टरों और बैनरों पर लिखी होती थीं जो ऐसी स्पर्द्धाओं का विरोध करनेवाले संगठनों द्वारा लगाये जाते थे। इनमें केवल चंद बुद्धिजीवियों के अलावा और किसी की दिलचस्पी नहीं होती थी। अब दुनियाभर में संचार, संवादतंत्र इतना मुखर था कि नारों, उक्तियों और नामों के द्वारा बुद्धिहीनों का समूह ही बुद्धिमानों को नीचा दिखा सकता था। यदि एक बुद्धिजीवी कहा जा सकता है, दूसरा शरीरजीवी भी बताया जा सकता था।

अल्तमश को दूसरी व्यस्तताओं के चलते लौटना ही पड़ा। वह अच्छी तरह से ये बात जानता था कि घर से लंबे समय की अनुपस्थिति उसके व्यापार को नुक़सान पहुंचाती है।

कोई भी व्यक्ति ये नहीं जानता कि दुनिया में उसका पहला दिन और आख़िरी दिन कहां और किस तरह बीतेगा, लेकिन फिर भी यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि व्यक्ति अपने डेरे की ओर लौटने की ख़्वाहिश रखता है। परिस्थितियां इस ख़्वाहिश को कितने सम्मान से लेती हैं ये अलग बात है।

सेलिना भी अपने काम से फ़ुरसत पाकर कभी-कभी भारत आया करती थी। वह यह अच्छी तरह से जानती थी कि शरीर, मन और आशाएं जीवन में हमेशा ऐसे ही नहीं रहेंगे, एक न एक दौर ऐसा ज़रूर आयेगा जब एक जगह ठहरकर जीना अच्छा लगेगा।

सेलिना ने भारत के एक बड़े शहर के नज़दीक एक ज़मीन का टुकड़ा इस

उद्देश्य के लिए ले रखा था कि वह वहां पर अपने जीने के मक़सद के तौर पर कोई प्रकल्प खड़ा करे। इस ज़मीन को ख़रीदने की सारी कार्यवाही पूरी हो चुकी थी। बल्कि यह भी कहा जा रहा था कि सेलिना के वहां ज़मीन ख़रीद लेने से उस क्षेत्र में ज़मीनों के दाम आसमान छूने लगे हैं। भारत जैसे विकासशील देश में कोई भी गतिविधि रोज़गार, आय, हलचल आदि से जोड़कर ही देखी जाती थी।

इस जगह पर सेलिना ने एक विशाल भवन बनाने का विचार किया था जिसका एक हिस्सा बनना शुरू भी हो गया था। शहर में बहुत-से लोग इस बात से वाक़िफ़ थे कि यह ज़मीन एक स्टार की है और इसी से ये क़यास भी लगाये जाते थे कि यहां क्या गतिविधियां संचालित होंगी। लेकिन बहुत थोड़े-से लोग ऐसे भी थे जो सेलिना नंदा के इस प्रोजेक्ट से परिचित थे, वह यहां विकलांग व अस्वस्थ लोगों के लिए एक आश्रयस्थल बनाना चाहती थी। वह अपनी आय का एक बड़ा भाग इस प्रयोग में लगा रही थी। निःशक्तों, रोगियों, वृद्धों व असहायों के लिए काम करनेवाले शहर के कुछ और ट्रस्ट भी इस परियोजना से जुड़े हुए थे। शहर के एक प्रसिद्ध मनोरोग चिकित्सा केंद्र का प्रबंधन भी इसमें काफ़ी रुचि ले रहा था। यह एक बड़ी समस्या थी कि जो लोग मनोचिकित्सा केंद्र में लाये जाते थे उनके इलाज में लगनेवाले लंबे समय के दौरान उनके परिजन उनसे विमुख होने लग जाते थे। लोग वहां भर्ती कराकर अपने रिश्तेदारों को भूल जाते थे। बहुत कम लोगों को यह उम्मीद होती थी कि मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाने के बाद उनके परिजन वापस पूर्ण स्वस्थ होकर उनके साथ रह सकेंगे। इसलिए जो गंभीर रोगी एक बार वहां आ जाते थे उनकी जीवनभर की परिचर्या और जवाबदेही इसी संस्थान पर आ जाती थी। अतः इस आश्रयस्थल से लोगों को बहुत उम्मीदें हो चली थीं और बड़ी संख्या में लोग उससे जुड़ते चले जा रहे थे।

कई बार ऐसा भी होता था कि लोग अच्छे मक़सद के लिए स्थान तो ले लेते हैं पर व्यापार या नौकरी के चलते इतने व्यस्त रहते हैं कि मक़सद के वास्तविक रूप से आरंभ हो पाने में लंबा समय लग जाता है। यही कारण था कि इस शहर में भी बहुत-सी बड़ी-बड़ी ज़मीनें इसी तरह पड़ी थीं जिन पर कई अच्छे कार्यों की घोषणा होकर उनके नामपट्ट तो लग चुके थे किंतु उन पर वास्तविक कार्य अभी तक शुरू नहीं हो सका था। वैसे भी, अच्छे मक़सद के लिए किये जानेवाले कार्य लोगों के बुरे दिन आने पर ही किये जाते हैं। जब तक कष्ट न आये दूसरों के कष्ट नहीं देखे जा पाते।

लोग अच्छी तरह जानते थे कि इस तरह की प्रायोजनाओं में भ्रष्टाचार भी अपनी चरम सीमा पर होता है। कई बार दिखाया कुछ और जाता है लेकिन होता

कुछ और है। इन्हीं सब कारणों के चलते सेलिना नंदा की ज़मीन से लोगों को आशाएं व अपेक्षाएं भी अधिक थीं क्योंकि लोग यह तो जानते ही थे कि इस मशहूर अभिनेत्री व सेलिब्रिटी ने कई बार सार्वजनिक तौर पर अपने जीवन के मक़सद को उजागर किया था। मीडिया भी इस बाबत बहुत-कुछ लिखता-छापता और बताता रहा था।

कुछ ही दिन बाद जयपुर शहर में बड़े-बड़े होर्डिंग्स और बैनर लगे जिनमें बताया गया था कि सेलिना की कंपनी जल्दी ही इस आश्रयकेंद्र का आरंभ करने जा रही थी। शहर के अख़बारों में बड़े-बड़े विज्ञापन भी छपे और बड़े पैमाने पर वर्कर्स की भर्ती भी आरंभ हो गई। सभी तरह के लोग लिए जा रहे थे।

शहर के एक होटल रामबाग़ पैलेस में इस कंपनी के अधिकारियों ने प्रोजेक्ट के लिए कुछ स्थानीय अफ़सरों की भर्ती के लिए एक छोटा-सा सेमिनार भी आयोजित किया। सेलिना की कंपनी के शीर्ष अधिकारी वहां पहुंचे। कुछ स्थानीय होटलों व अन्य संस्थानों से भी इस सेमिनार में लोगों को विचार-विमर्श के लिए बुलाया गया।

नायलाबाग़ पैलेस के एक पार्टनर मिस्टर जॉर्ज ने इस सेमिनार में कहा—कुछ शहर ऐसे हैं जो संपन्न तो हो गये हैं लेकिन वहां वर्क कल्चर अभी भी गतिशील नहीं है। स्थानीय क्लार्क होटल की मैनेजिंग डायरेक्टर मिस कुकरेजा ने अधिकारियों को चेताया कि इस तरह के काम के लिए भर्ती किये जानेवाले लोग एक ख़ास क़िस्म के होने चाहिए। उनमें जीवन के लिए मक़सद होना चाहिए, लक्ष्य के लिए समर्पण होना चाहिए। सफलता के लिए उत्कट चाह और देर तक कार्य कर पाने की क्षमता भी होनी चाहिए। उनका कहना था कि काम को हल्के-फुल्के ढंग से लेनेवालों, कर्तव्य की तुलना में अधिकार चाहनेवालों से बचा जाना चाहिए। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि वर्क फ़ोर्स को लेकर उन्हें हमेशा ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लोग छोटी-सी बीमारी या हल्की तकलीफ़ में एक-दूसरे को देखने-मिलने जाना पसंद करते हैं। इसके लिए वह अपने संस्थानों के कार्य को भी इस तरह छोड़ देते हैं मानो यह कोई सेकेंड्री कार्य हो और उनका प्राथमिक कार्य है मिलना-जुलना। जबकि यही कार्य उनकी जीविका होता है। वे त्योहारों पर काम को तिलांजलि दे देने के अभ्यस्त हो जाते हैं। जीवन के हर सुख-दुख को अपना काम छोड़कर मनाने के आदी होते हैं। दूर-पास के किसी भी मामले में किसी की मौत उनके लिए पूरे कार्य-व्यापार को हिला डालनेवाली होती है। वे यह समझ ही नहीं पाते कि हर व्यक्ति के लिए मौत एक आवश्यक अंत है। सामान्य परिचित व्यक्ति के देहांत पर भी वे कई प्रहर, कई दिन, कई महीने के शोक तरह-तरह से

मनाते हैं और आर्थिक व सामाजिक गतिविधियों को बुरी तरह अस्तव्यस्त कर छोड़ते हैं। वे ये भूल जाते हैं कि एक व्यक्ति के मर जाने के बाद भी सैकड़ों व्यक्तियों को जीना होता है और इसके लिए ''शो मस्ट गो ऑन...''। जीवन रुक नहीं सकता।

सेलिना ख़ुद तो इस कार्यक्रम में नहीं आई थी परंतु एक भव्य हलचल से कंपनी का काम यहां आरंभ हो गया था। नीमराणा की एक यूनिवर्सिटी को इस कंपनी के मानव संसाधन विकास का काम मिला था। इस सेमिनार की अध्यक्षता एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश महिला ने की थी जो अपना अध्ययन ब्रिटेन से करने के बाद यहां जज बनी थीं और अब एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के प्रबंधन से जुड़ी थीं। सेमिनार में इस बात पर भी व्यापक विचार-विमर्श किया गया था कि ऐसे समाजों में, जो सामंतशाही की गिरफ़्त में रहे हों, कार्य-व्यवहार स्वतः ही अन्यायपूर्ण हो जाता है। वहां भ्रष्टाचरण भी स्वाभाविक रूप से प्रवेश करने लगता है। वहां एक ऐसा समाज पनप जाता है जो योग्यता आधारित न होकर, संबंध आधारित होता है और योग्य व्यक्ति को अनुकूल कार्यपरिस्थिति नहीं दे पाता। वहां चाटुकारिता, चापलूसी, अविवेक व फ़रेब का बोलबाला आसानी से हो जाता है। किसी भी बड़े मक़सद के लिए इस सबसे बचने की सलाह भी वक्ताओं द्वारा दी गई थी।

मीडिया में इस सेमिनार की अच्छी व व्यापक चर्चा रही। किंतु दो या तीन दिन ही गुज़रे होंगे, जब लोगों ने स्थानीय अख़बारों में एक बड़ी विज्ञप्ति देखी, जिसे शहर के किसी धार्मिक संप्रदाय ने ज़ारी किया था। इसमें शहरवासियों से सभी त्योहारों तथा जीवन के जन्म-मृत्यु, विवाह जैसे अवसरों पर होनेवाले सभी कर्मकांडों में बढ़-चढ़कर, तन-मन-धन से भाग लेने की अपील की गई थी। लोगों को चेताया गया था कि वे मृत्यु संस्कारों की उपेक्षा करनेवाले किसी बहकावे में न आयें और ऐसे लोगों की बात न सुनें जो उनकी जीवन-शैली पर किसी भी क़िस्म का कटाक्ष करते हों, उसे अनुपयोगी बताते हों। विज्ञप्ति में सनातन भारतीय जीवन-मूल्यों व परंपरागत मान्यताओं के हवाले से यह भी बताया गया था कि इन पर विदेशी प्रहार के किसी बहकावे में न आयें।

इस विज्ञप्ति के ज़ारी होने के दूसरे ही दिन आश्रयस्थल की ज़मीन पर किये गये आरंभिक कार्यों की तोड़फोड़ का समाचार था। लोगों ने इसका भव्य मुख्य-द्वार तोड़ दिया था और इसके अहाते को घेरनेवाली बाउंड्री वॉल को भी जगह-जगह क्षति पहुंचाई गई थी। इमारतों के लिए जुटाये गये सामान व निर्माण-सामग्री को भी क्षत-विक्षत कर दिया गया था। शहर में लगे होर्डिंग्स व बैनर या तो फाड़ दिये

गये थे या उन पर कालिख पोत दी गई थी।

एक संप्रदाय ने आश्रयस्थल को हटाये जाने की चुनौती देते हुए सरकार से इस ज़मीन का अधिग्रहण कर लेने का आग्रह किया था। ऐसा न होने पर शहर की विधानसभा के निकट एक बड़े धरने का ऐलान भी किया गया था। अहाते पर तैनात सुरक्षाकर्मियों के साथ भी मारपीट की गई थी और कंपनी के कई कर्मचारी रातोंरात काम छोड़कर भूमिगत हो गये थे।

दूसरे दिन पुनः कंपनी की ओर से तथ्यों को सिलसिलेवार रखते हुए एक बड़ी अपील ज़ारी की गई जिसे सभी प्रमुख अख़बारों में छापा गया था। कंपनी ने विनम्र शब्दों में यह खुलासा भी किया कि कंपनी के विभिन्न कार्यों में जिन फ़र्मों को ठेके आदि नहीं मिल सके हैं उन्हीं में से कुछ का इस तरह के प्रश्न उठाने और लोगों को भड़काने में हाथ है।

फिर यह सिलसिला चल निकला। कुछ दिन तक खंडन और मंडन के यह समाचार आते रहे, विज्ञापन आते रहे, ख़बरें आती रहीं।

कुछ अख़बारों के सत्ता से जुड़े होने के आरोप सहित ऐसे समाचार भी आये कि प्रतिदिन की इन विज्ञप्तियों, पेड समाचारों, विज्ञापनों से सरकार करोड़ों रुपये की कमाई कर रही है और समाज की विभिन्न परंपराओं के हवाले से लोगों को बलि का बकरा बनाया जा रहा है। स्थानीय न्यूज़ चैनलों ने पूरे प्रकरण पर दिन-भर लोगों को उलझाये रखा। कई दिनों के लिए विश्व के अन्य समाचार जैसे ताक पर रख दिये गये। शहर के कुछ संस्थान मध्यस्थता व बीच-बचाव के लिए भी सामने आने लगे। कंपनी के साक्षात्कार जो चल रहे थे, वे रोक दिये गये और देश के सुदूर भागों से नौकरी के लिए आनेवाले कई लोगों ने पलटकर अपने-अपने नगर का रुख़ किया। निर्माण-कार्यों के लिए हुए टेंडरों के आधार पर हुए ठेकों में से कुछ को निरस्त करना पड़ा तथा कुछ को व्यवधान के साथ अपनी कार्य-योजना में बदलाव करना पड़ा।

इस बीच देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में सेलिना नंदा के क्लोज़अप्स और पूर्ण पृष्ठीय चित्र बदस्तूर छपते रहे। किसी विश्वसनीय समाचार पत्रिका ने इनके साथ जयपुर की घटनाओं को जोड़ा तो किसी-किसी ने उन घटनाओं का कोई ज़िक्र न करते हुए सिर्फ़ सेलिना नंदा की तस्वीरों को ही तरज़ीह दी। सेलिना नंदा की प्रचारटीम को कई दिनों का आराम हासिल हो गया, जब बिना कुछ किये मैडम के सामने परोसने के लिए सामग्री हर रोज़ मिलती रही।

भारत के न्यूज़ चैनलों व अख़बारों की इस स्थानीय ख़बर को पाकिस्तान के कुछ अख़बारों ने भी उठाया। जॉन अल्तमश के कुछ शुभचिंतकों और पाकिस्तान

में रह रहे परिजनों के माध्यम से यह सारा वाक़या जॉन तक भी पहुंच गया। जॉन ने सेलिना को फ़ोन करने की दो-तीन बार कोशिश की मगर बात हो नहीं पाई। जॉन की ओर से सेलिना को बधाई देने की हिदायत जॉन के दफ़्तर को दी गई।

''मीडिया का ये करिश्मा कोई आज के युग ही की बात तो नहीं है, मीडिया ने यह भूमिका तो युग-युगों से निभाई है। अयोध्या में एक राजा अकाल-मृत्यु, दूसरे राजा के राज्याभिषेक की उसकी मां द्वारा मांग, एक राजपुत्र द्वारा अपनी पत्नी को अयोध्या में ही छोड़ जाने जैसी संभावनाशील स्थितियों के बावजूद तुलसी का कैमरा अयोध्या में नहीं रहा, बल्कि वह दर-दर की ठोकरें खाता हुआ देस-परदेस घूमा और उस सबके लिए जनता के मन में सनसनी जगाई जो अयोध्या में नहीं, बल्कि अयोध्या से दूर घाट-घाट पर घट रहा था...'' जयपुर के अख़बारों में जनता ने ऐसे 'संपादकीय' देखे-पढ़े।

मुंबई के फ़िल्म जगत की ओर से भी इस ख़बर पर अच्छी-ख़ासी प्रतिक्रिया आई। वैसे प्रायः फ़िल्मलोक सितारों के व्यापारिक-व्यावसायिक कामों पर प्रामाणिकता से कुछ नहीं कहता हो किंतु एक अंतर्राष्ट्रीय स्टार के बारे में जानकारी किसी से छिपी नहीं रही। लोगों ने अपनी-अपनी तरह से घटना की व्याख्या करके, अपने-अपने तरीके से प्रतिक्रियाएं भी दीं। लोगों की वर्षों बाद भी ऐसी पड़ताल पढ़ने-देखने को मिली कि फ़िल्म वर्ल्ड से पहले कौन-कौन लोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जुड़े रहे हैं।

इनमें फ़िल्म महोत्सवों के अवॉर्ड-फ़र्श पर अपने वस्त्रों की शोभा बिखराती अभिनेत्रियों से लेकर, हॉलीवुड फ़िल्म के लिए सिर मुंडवा लेनेवाली मॉडल तक को लोगों ने फिर से याद किया। यद्यपि भारत जैसे विविध संस्कृतिवाले देश में महिला के सिर मुंडवा लेने की घटना अब सिनेतारिकाओं से लेकर खिलाड़ियों या राजनीतिज्ञों तक के साथ जुड़ चुकी थी और इसमें नवीनता के कोई तंतु नहीं रहे थे फिर भी पुराने व्यंजनों पर नई चटनियों से आनेवाले चटख़ारों का स्वाद देश ने कभी नहीं छोड़ा था। ख़बर-जगत की तो संजीवनी था यह तथ्य।

कई शहरों में पर्यटक-स्थलों पर सैलानियों को व्याख्या करके घुमानेवाले गाइडों ने तो विदेशियों को ये बताना भी आरंभ कर दिया था कि भारत में विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच बड़े दंगे या उपद्रव किस-किस बात पर भड़के, और कब-कब। लेकिन भारतीय सदाशयता और उदारता के क़ायल इन गाइडों ने विदेशियों के बीच देश का बड़ा-से-बड़ा फ़साद तुरंत भूल जाने के कौशल का बख़ान भी जब-तब ख़ूब किया। विदेशी सैलानी इन गाइडों के समन्वय कौशल को देखकर अभिभूत हो जाते थे और इनकी कही बातों की प्रामाणिकता पर आंखें

मूंदकर विश्वास करने लग जाते थे, कम-से-कम तब तक, जब तक वे यहां रहते।

जॉन अल्तमश ने अब सेलिना नंदा के अलबम की लाँचिंग के बारे में और भी बेचैनी से सोचना शुरू कर दिया था और उन्हें जल्दी ही लोकेशन फ़ाइनल हो जाने का इंतज़ार था।

इस बीच सेलिना नंदा को एक बड़ी हॉलीवुड फ़िल्म और मिल जाने की घोषणा हो गई। उन्नीस सौ सत्तर के आसपास भारत सहित विश्व के अनेक देशों में दिखाई गई एक सफल फ़िल्म का रीमेक प्रोड्यूसरद्वय द्वारा बनाया जा रहा था जिसमें से एक रशिया के थे। इस फ़िल्म का लगभग शेड्यूल तय हो चुका था और इसके बड़े भाग की शूटिंग उज़्बेकिस्तान में होनेवाली थी। मूल फ़िल्म भी उज़्बेकिस्तान में फ़िल्माई गयी थी किंतु उसको अब एक लंबा अर्सा बीत चुका था। इस दौरान विश्वपटल पर कई छोटे-बड़े परिवर्तन हो चुके थे।

यहां तक कि जब यह मूल फ़िल्म आई थी, तब सोवियत रूस का विभाजन नहीं हुआ था। एशिया के इस विशालतम देश का तब दुनिया पर काफ़ी दबदबा क़ायम था और इसे अमेरिका के समानांतर शक्ति माना जाता था। उस समय तक एकीकृत रूस के रहते एशिया में भी चाइना का दबदबा आज जितना नहीं था। चाइना की व्यापारिक तत्परता तब तक दुनिया के सामने नहीं आई थी। चाइना का लौह-पर्दा कुछ समय पहले तक चाइना की नीतियों-कार्यक्रमों को छिपाये हुए था।

लेकिन उदारवादी राष्ट्रपति गोर्बाचौफ़ के कार्यकाल में सोवियत रूस के ये बंध खुल गये और किसी बड़ी गठरी के खुल जाने से उसमें रखे असबाब के बिखरने की तरह तेरह देश अलग-अलग इकाइयों के रूप में बिखर गये। रूस अब अत्यंत सीमित शक्ति के रूप में रह गया और राजनीति ही नहीं, खेलों, साहित्य, शिक्षा, व्यापार, संस्कृति, तकनीक और विज्ञान के साथ-साथ कृषि तक में उसका आधार बेहद हल्का हो गया। अब विश्व मानचित्र पर रूस का वह पहलेवाला दबदबा न रहा।

और उज़्बेकिस्तान भी अब पहलेवाले रूप में न रहा। लेकिन क्योंकि फ़िल्म का कथानक उस धरती से जुड़ा था, इसलिए दोनों प्रोड्यूसरों ने मूल संस्करण की तरह इस रीमेक को भी वहीं फ़िल्माने का फ़ैसला किया। लेकिन...सभ्यता और संस्कृति में कोई देश आसानी से प्रत्यावर्तन का शिकार नहीं होता...आज का उज़्बेकिस्तान भी नहीं। वहां बेहद ख़ूबसूरत और आधुनिक लोकेशनें थीं जो संभावनाओं के द्वार खोलती थीं। फ़िल्म की शूटिंग की भव्य तैयारियां की गई थीं। सेलिना का इसमें आकर्षक रोल था।

आठ

—नहीं-नहीं, इधर नहीं...नो...ओ छोकरी, क्या करता? अरे नहीं...बाबा!

लड़के ने बूढ़े के मिट्टी के बरतन में थोड़ी और शराब डाल दी बोतल से। बूढ़ा कातर-सी दृष्टि लड़की पर डालकर फिर से शराब पीने लगा। बूढ़े की आंखें लाल हो चली थीं। उसे बीच-बीच में हिचकी भी आती थी। लड़का उसके बिलकुल समीप आ गया और उसकी बांह पकड़कर उसका बर्तनवाला हाथ अपने क़रीब लाया और बोतल से झागदार मदिरा उसके पात्र में फिर ऊपर तक भर दी। बूढ़ा आंखें मिचमिचाता हुआ थोड़ा मुस्कराकर बड़ी आत्मीयता से लड़के की ओर देखने लगा। लड़का इस मुस्तैदी से खड़ा था मानो इस बूढ़े को जी भर शराब पिलाना ही उसका कर्तव्य हो।

बूढ़े का ध्यान अब पूरी तरह से लड़की पर से हट गया था। अब उसे इस बात से कोई सरोकार नहीं था कि लड़की अब क्या कर रही है। लड़के ने थोड़ा-सा सहारा देकर बूढ़े को पास पड़ी चारपाई पर बैठा दिया। बूढ़ा बैठना नहीं चाहता था मगर लड़के ने सहारा देने के दौरान उसकी कमर पर थोड़ा बल डाला, मानो वह ज़बरन उसे वहां बैठा देना चाहता हो।

सामने जो पानी बह रहा था वह किसी नदी से ज़्यादा नाला या नहर दिखाई देता था। उसकी चौड़ाई मुश्किल से पच्चीस-तीस फ़ीट होगी। जंगल के इसी भाग में यह नहर इतनी संकरी थी, बाक़ी ज़रा आगे जाते ही इसका पाट काफ़ी चौड़ा हो जाता था। चंद क़दम पीछे की ओर भी इसकी चौड़ाई आगेवाले पाट जैसी ही थी। बस, इसी थोड़े-से हिस्से में पानी एक घुमाव लेकर एक पतली जलधारा के रूप में था। उतना ही पानी जब अपेक्षाकृत कम चौड़े पाट से निकलता तो उसका वेग तेज़ हो जाता था। इस बहाव में वह साफ़ पानी का एक हिमनद जैसा दिखता। पानी की गहराई यहां बहुत थी।

ऊपर से लेकर नीचे तक बेहद भारी ओवरकोट पहने लंबी सफ़ेद दाढ़ीवाला वह सुर्ख़ लाल चमड़ीवाला बूढ़ा शरीर में भारीभरकम था। इस बियाबान में वह क्या करता होगा इसका अनुमान लगाना मुश्किल था। लेकिन एक छोटे-से शेड के पास

किनारे पर एक पुरानी चारपाई और एक स्टूल को देखकर ज़बरन ये अनुमान लगाना ही पड़ता था कि वह बूढ़ा यहीं रहता था। एक छोटे दरवाज़े और एक बेहद छोटी खिड़कीवाला उसका घर, घर कम केबिन ज़्यादा नज़र आता था। घर की खिड़की कई दिन से बंद थी। दरवाज़ा भी ऐसा लगता था मानो कभी-कभी ही खुलता हो। बूढ़े ने पैरों में भारी चमड़े के बूट पहने हुए थे।

बूढ़े की ये पूरी जमा-जायदाद देखकर ऐसा लगता था मानो बूढ़ा किसी सरकारी ड्यूटी पर हो, मगर इस बियाबान जंगल में असंख्य पेड़ों से घिरे सुनसान कोने में ऐसा क्या था जिस पर किसी वॉचमैन को तैनात करने की ज़रूरत पड़े, ये समझ पाना कठिन ही नहीं, असंभव था। बूढ़ा थोड़े-बहुत शब्द अपनी भारी आवाज़ में अंग्रेज़ी में बोलता ज़रूर था मगर उसे अंग्रेज़ी आती नहीं थी। वह जो कुछ बोलता, उसमें अंग्रेज़ी का एकाध शब्द होता, और बाक़ी न जाने कौन-सी भाषा होती थी।

इस तरफ़ ऊंचे-ऊंचे रंग-बिरंगे पेड़ों का घना जंगल था परंतु पानी की इस नहर के उस पार पेड़ भी नहीं थे। सफ़ेद रेत के मैदान को देखकर लगता था मानो इस पर साल के अधिकांश समय बर्फ़ जमी रहती हो। कुछ किलोमीटर तक फैले वीरान मैदान के आगे धीरे-धीरे और ऊंचे होते जाते पहाड़ों की लंबी शृंखला थी। एक क़तार छोड़कर ज़रा आगे के पहाड़ों की चोटी पर बर्फ अब भी जमी दिखाई दे रही थी। रात गहराने पर भी पहाड़ों की चोटी का इस तरह चमकना ये बताता था कि शायद पूर्णमासी के आसपास की ही कोई रात थी। हो सकता है कि वह पूर्णमासी का ही दिन हो। चांदनी रात में चमकता सब-कुछ साफ़ दिखाई दे रहा था, किंतु ये नदी के उस पार की बात थी। नदी के इस पार घने जंगल और असंख्य एक-दूसरे से सटे पेड़ों के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता था।

बूढ़े के ओवरकोट की जेबें बेहद लंबी-लंबी थीं। बाहर से ही देखने पर उनमें न जाने क्या-क्या सामान भरा दिखाई देता था। हो सकता है कि कोई रिवॉल्वर या बंदूक़ या तमंचे जैसी चीज़ भी हो क्योंकि इस सन्नाटे में यदि वह बूढ़ा कोई ड्यूटी दे रहा हो तो निश्चय ही उसे निहत्था नहीं छोड़ा गया होगा।

वैसे भी बूढ़े के पास और कोई बैग, थैला या संदूक़ नहीं दिखाई दे रहा था। जो कुछ था वह उसकी जेबों में ही भरा था। कुछ दूर के फ़ासले पर बना उसका घर, ऑफ़िस या ठिकाना जो भी हो, वह भी बाबा आदम के ज़माने के किसी बंद द्वार से जड़ा हुआ-सा दिखता था। उसमें रखे सामान को यदि किसी आकस्मिक संकट के समय निकालना पड़ता तो ज़रूर बूढ़े को पांच-सात मिनट का समय तो लग ही जाता। बल्कि दरवाज़े को देखकर तो ऐसा आभास होता था कि यह भी किसी तंत्र-मंत्र की शक्ति से या फिर पशुवत् ताक़त से धक्का मारने पर ही खुल

पाता होगा। ऐसे में यदि बूढ़ा वास्तव में किसी कर्तव्यपालन के लिए वहां था तो उसके पास होनेवाला औज़ार-हथियार उसके ओवरकोट की जेब में ही हो सकता था। यहां से कोठरी के पिछवाड़े के गेट की कोई जानकारी नहीं मिलती थी।

बूढ़े ने लड़के को बताया कि एक बड़ी मुर्ग़ाबी के मांस को पत्तों में लपेटकर वह खाने के लिए लाया करता था और एक छोटे हीटर के बीच आग जलाकर उस पर कभी-कभी गर्म कर लेता था। ज़ाहिर है कि हीटर बिजली का नहीं था बल्कि उसमें लकड़ी, काग़ज़ या सूखे पेड़ की छाल डालकर माचिस से ही उसे जला पाना संभव हो पाता था। इस उलझन से बचने के लिए कभी-कभी उसे ठंडा मांस भी खाना पड़ जाता था। वैसे कुछ छोटी चिड़ियां कभी-कभी यहां भी मिल जाती थीं। यहां गर्मी केवल पंद्रह दिन पड़ती थी सालभर में। गर्मी भी बस ऐसी, कि बहते पानी में बर्फ़ की डलियां न आयें। उसे ही बूढ़ा गर्मी कहता था और पूरे साल याद करता था।

बूढ़े ने पिछले सात दिन से मदिरा नहीं पी थी। वह दस-पंद्रह दिन में एक बार ही यहां से अपने गांव जा पाता था और जब भी जाता, मदिरा वहीं से साथ लेकर आता था। बाक़ी दिनों बर्फ़ की गोलियां पड़ा यह पानी उसके लिए पेय होता। यही मदिरा भी और यही जीवन-जल भी।

इतने ठंडे पानी में किसी छोटी-बड़ी मछली की संभावना भी कभी नहीं रहती थी। केवल गर्मी के पंद्रह-बीस दिनों में, जब पानी पूरा पिघला हुआ रहता, कभी-कभार कोई छोटी मछली बहती दिखाई दे जाती थी। वहां मछली को पकड़ पाना आसान नहीं था पर यहां से बहनेवाली मछली जितनी चालाक, बूढ़ा भी उतना ही चालाक। कभी-कभी बूढ़ा उस पर हाथ साफ़ कर ही लेता था। फिर वही रात बूढ़े के लिए जश्न की रात होती।

बूढ़े को कोई आदमज़ात देखे भी कभी-कभी दो-दो दिन गुज़र आते। यहां आता ही कौन था। कभी कोई भटकता हुआ पशुओं को चरानेवाला चरवाहा, कभी-कभी मुर्ग़ाबियों का शिकार करते रोज़ी-रोटी कमानेवाले, और कभी-कभी खुराफ़ातें करनेवाले शरारती बच्चे। साल में दो-एक बार पानी के खेलों में भाग लेने का अभ्यास करते दो-चार युवा भी नदी में अपनी नावों को खेते चले आते। जब वे आते तो बूढ़े को कुछ अच्छा खाने-पीने को मिलता।

कोई-कोई युवक औरत को साथ ले आता तो बूढ़े को पीठ फेरकर अपनी कोठरी भी खोलती पड़ती। थोड़े-बहुत रुपये-पैसे आ जाते बूढ़े की जेब में, फिर कुछ दिन उसके गुलज़ार हो जाते। तब बूढ़ा बीड़ी जैसा भभका छोड़नेवाले सिगार की जगह सफ़ेद खुशबूदार सिगरेट भी पी पाता। पर ऐसी ऐयाशी के दिन सालभर में

अंगुलियों पर गिनने लायक ही आ पाते थे।

बूढ़े की निगाहें बार-बार लड़के के हाथ की बोतल की तरफ़ जातीं और बोतल को आधी भरी देखकर वह जल्दी-जल्दी सुड़कने की कोशिश करता। बूढ़े को वह लड़का बड़ा प्यारा लग रहा था क्योंकि वह हाथ में बोतल पकड़े रहने पर भी ख़ुद नहीं पी रहा था। वरना जवान लड़के तो दूसरे के प्याले में कम डालते हैं ख़ुद ज़्यादा पी जाते हैं। लड़का केवल उसे पिलाने के लिए था।

बूढ़े ने ओवरकोट की जेब टटोलकर कमरे की चाबी को भी हथेली से सहलाकर देख लिया था क्योंकि इतनी मदिरा पी जाने के बाद भी इतना तो वह समझ ही रहा था कि उसे भरपूर शराब पिलाने के बाद लड़का कमरे की चाबी ज़रूर मांगेगा। लड़की की बेसब्री तो वह अभी-अभी अपनी आंखों से देख चुका था। लड़की अभी-अभी अपनी जींस को खोलकर सामने ही पेशाब करने के लिए बैठने लगी थी। बूढ़े ने मुश्किल से उसे रोका और फिर लड़की अपनी जींस की खुली ज़िप से खिलवाड़ करती हुई ज़रा आगे जाकर बूढ़े की कोठरी की आड़ में बैठी।

लड़का उसी तरह खड़ा उसे शराब पिलाता रहा।

वे लोग जिस घने सुनसान जंगल को बूढ़े की आरामगाह समझे थे, असल में वह एक देश की सीमा थी, जहां से इस पतली नदी के पार से दूसरे देश की सरहद शुरू हो जाती थी। किसी तरह इस बेहद गहरी नदी को पार करके उस पार पहुंचा जा सकता था जहां कुछ ही किलोमीटर के फ़ासले पर फ़ॉरेस्ट की एक हेलीकॉप्टर सेवा थी। यहां दिन में दो-तीन बार हेलीकॉप्टर का फेरा होता था जिसमें टिकट लेकर मुसाफिर भी जा सकते थे, बशर्ते उनके पास उस देश का वीज़ा हो।

बूढ़े की नीम बेहोशी में, बिना उसे अपने सीमा पार कर जाने का चश्मदीद गवाह बनाये, वह लड़की और युवक सुबह के धुंधलके में पार निकल गये। बूढ़े को नहीं पता कि उन्होंने उस गहरी नदी को कैसे पार किया। या फिर किसी पूर्व नियोजित षड्यंत्र की तरह उन्हें आसपास के किसी मछुआरे ने मदद देकर नदी पार कराई होगी। बिना बूढ़े की जानकारी के यहां से सीमा पार कर जाना बूढ़े ने पहले देखा नहीं था, पर इसके ख़तरों से वह वाक़िफ़ था। लेकिन यदि ख़तरे के समय ज़ोर से नींद आये तो ख़तरा आधा रह जाता है।

किर्गिस्तान में प्रवेश करके युवक और वह लड़की आसानी से निकल गये। कुछ ही देर बाद उन्हें फ़ॉरेस्ट रेंज का हेलीकॉप्टर भी उपलब्ध हो गया। फ़िल्म 'सिंगिंग सी' की भारी-भरकम यूनिट पिछले दो-तीन दिन से इस पथरीले पहाड़ पर डेरा डाले हुए थी। शूटिंग पूरे ज़ोरों पर थी। किंतु फ़िल्म के एक सहायक निर्देशक

को मोबाइल पर सूचना मिली कि उसकी यूनिट की एक लड़की सेलिना नंदा होटल से चेक आउट कर गई है। उसे बहुत आश्चर्य हुआ। वह हैरानी से इधर-उधर देखता हुआ पास खड़ी अपनी कार के क़रीब गया लेकिन कुछ सोचकर वह वहीं ठहर गया। सेलिना ने निश्चय ही अपने पेमेंट्स कर दिये थे मगर वह कब गई, कहां गई, क्यों गई, कोई नहीं जानता था।

ट्रेड पेपर्स के माध्यम से यह ख़बर मीडिया में भी लीक हो गई कि फ़िल्म 'सिंगिंग सी' से सेलिना नंदा को निकाल दिया गया है। कुछ इने-गिने देशों में ख़बर इस तरह भी पहुंची कि सेलिना ने फ़िल्म छोड़ दी है। क़यास लगाये जाने लगे कि इसके क्या कारण रहे होंगे। लोगों का अनुमान था कि इतनी बड़ी फ़िल्म छोड़ने का फ़ैसला कोई अभिनेत्री क्यों लेगी, ज़रूर उसे निकल ही दिया गया होगा। अटकलों का बाज़ार गर्म हो गया और फिर से एक बार सेलिना नंदा दुनियाभर के अख़बारों और चैनलों पर छा गई।

ऐसी ख़बरों को पढ़कर और चाहे जिसे जो लगा हो, बेरुत में जॉन अल्तमश की बांछें तो खिल-खिल जाती थीं। वह जिस स्टार पर पैसा और समय लगा रहा था, वह बार-बार विश्वभर के मीडिया की सुर्खियां बन जाये, इससे अच्छा और क्या हो सकता था। लेबनान की नेशनल न्यूज़ में भी यह ख़बर स्थान पा गई कि सेलिना नंदा ने बड़े बजट और स्टारकास्ट की फ़िल्म 'सिंगिंग सी' छोड़ दी है। इसका कारण यही था कि जॉन अल्तमश पिछले कुछ घंटों से बेरुत में ही था और लेबनान में प्रेस कॉन्फ्रेंस करने के बाद वहां लोगों को बड़ी-बड़ी पार्टियां देने में मशगूल था। सेलिना की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाली ये ख़बर उसी ने निकलवाई।

रात को दो बजे उसकी आलीशान कार जब सेलिना नंदा को लेकर पहुंची तो सेलिना यह देखकर थोड़ी खिन्न थी कि उसके लिए होटल में अलग से कमरा नहीं रखा गया है बल्कि उसकी ठहरने की व्यवस्था जॉन ने अपने सुइट में ही की है। उसे कुछ अजीब-सा ज़रूर लगा लेकिन वह चेहरे पर कोई भाव लाये बिना अल्तमश के साथ डिनर में शरीक़ हुई।

सेलिना के साथ आये युवक का परिचय जब जॉन अल्तमश को मिला तो उसने क़तई ध्यान नहीं दिया लेकिन तब वह ज़रूर चौंका, जब सेलिना ने एक अजीबो-ग़रीब शर्त रखी।

सेलिना ने जॉन अल्तमश को उस रात जॉन के कमरे में ही उसके साथ ठहर जाने की सहमति तो दे दी, मगर साथ ही यह भी ऐलान कर दिया कि यह युवक भी उन दोनों के साथ उस कमरे में ही रुकेगा।

अल्तमश अजब चेहरे से सब देखता-सुनता रहा।

एक भव्य होटल के आलीशान शाही बिस्तर पर उन तीन लोगों की रात एक साथ कैसे कटी, यह सोचने का समय किसी के पास न था। अल्तमश की तो कुछ सोच पाने की इच्छा भी नहीं थी और ताक़त भी नहीं। किंतु अगली सुबह सभी तरोताज़ा थे। यद्यपि सारे शहर के लिए ही यह सुबह बेहद ख़ुशनुमा थी।

सेलिना और वह युवक पास के ही एक होटल में चले गये थे जहां उन्हें सेलिना के स्टाफ़ के आ पहुंचने की भी सूचना मिल चुकी थी। बेरुत शहर का यह हिस्सा गहमा-गहमी से दूर और अलग ज़रूर था मगर इसकी अपनी चमक और हलचल भी कोई कम नहीं थी। प्राकृतिक नज़ारा तो बेहद मनभावन था। जॉन ने सेलिना के रहने की व्यवस्था यहीं की थी।

प्रकृति की गोद में वह स्थान भी बेहद मनोरम था जिसके कारण अल्तमश और सेलिना ने इस स्थान को चुना था। पानी के आकर्षक उथले बहाव के बीच क़ीमती, पर नैसर्गिक, गोल पत्थरों का बेतरतीब जमाव इस जगह को अलौकिक बनाये हुए था जिसे किसी कलात्मक सोचवाले व्यापारी कुबेर ने आलीशान होटल के अहाते से जोड़कर मानो स्वर्णवर्षा का अपरिमित जंगल बना लिया था। यहां इनेगिने लोग ही थे मगर समग्र दृश्य इस तरह जगमगा रहा था मानो प्रकृति का इंद्रलोक ही धरा पर उतर आया हो।

हलचल का एक छोटा नगर जॉन अल्तमश की अपनी यूनिट ने वहां बसा रखा था। लेकिन इस ख़ुशनुमा सवेरे की शाम बड़ी बेरंग रही।

रात को जब होटल की गाड़ी सेलिना को अल्तमश के सुइट के पास छोड़कर गई, दोनों का ही मूड उखड़ा-उखड़ा-सा था। अल्तमश का मुंह उतरा हुआ था। सेलिना भी चिड़चिड़ी-सी हो रही थी। वह जॉन की किसी भी बात का जवाब सीधे मुंह नहीं दे रही थी। इस समय वह युवक भी सेलिना के साथ नहीं था, बल्कि दूसरे होटल में स्टाफ़ के दूसरे लोगों के साथ ही था। सेलिना ने खाने के लिए मना कर दिया था और अल्तमश ने उससे खाने के लिए आग्रह भी नहीं किया था।

यह ज़िंदगी का शायद पहला मौक़ा था जब जॉन अल्तमश शाम को शराब नहीं पी रहा था। उन दोनों के बीच कोई बात भी नहीं हो रही थी। सिर दर्द के लिए जो हल्की दवा सेलिना ने ली थी वह भी ख़ुद वह अपने पर्स से निकालकर लाई थी, अल्तमश ने न उसका हाल पूछा था और न ही दवा मंगवाने की पेशकश की थी।

उस रात अल्तमश और सेलिना एक साथ एक ही कमरे में, एक ही बिस्तर पर रहे पर आज गंगा मानो उल्टी बह रही थी। सेलिना का दिल चाह रहा था कि अल्तमश उसका हाल पूछे, उसे सांत्वना दे मगर अल्तमश ख़ुद अपने आपमें खोया

हुआ था और कमरे में एक साथ होते हुए भी दोनों अजनबियों की तरह थे। शायद नशे में धुत भी।

वह रात भी कटी। बेहद नीरस, उबाऊ, थकी-थकी...।

सुबह जल्दी ही उठकर अल्तमश होटल से निकलकर नज़दीक के जंगलों में घूमने चला गया। सेलिना के कमरे से भी दोपहर तक कोई हलचल सुनाई नहीं दी, वह शायद देर तक सोती रही। होटल का कोई दक्ष से दक्ष कर्मचारी भी यह समझ नहीं पाया कि जो मेहमान रातभर सोया न हो उसे उठाया कैसे जाये।

इस दूसरी रात को होटल के बाहर ज़बर्दस्त हंगामा हुआ। यदि सेलिना के साथ संजीदा-सा वह युवक न होता तो वहां मारपीट भी हो जाती। सेलिना उस जॉन अल्तमश का मुंह अपने नाख़ूनों से नोंच डालती। उसने एक-दो बार सामान को तो इधर-उधर उठाकर फेंकना भी शुरू कर दिया था।

युवक उसका हाथ पकड़कर ज़बरन उसे कार में न बैठा लाता तो न जाने वहां क्या होता। अल्तमश भी दिखाई नहीं दे रहा था। लोग सब तितर-बितर हो गये थे और केवल होटल के चंद लोग ही बौखलाये-से इधर-उधर दिखाई दे रहे थे।

रात को ही सेलिना लेबनान छोड़ गई। कोई नहीं जानता था कि वह कहां गई है। उसका स्टाफ़ भी जा चुका था और उसे निर्देश भी सेलिना के साथ आये युवक से ही मिल रहे थे। सेलिना से किसी का कोई संपर्क न था।

जॉन अल्तमश की यूनिट ने भी उस तामझाम को समेटने का उपक्रम शुरू किया जिसे जंचाने-सजाने में वे हफ़्तों से लगे थे। ऐसा लगा मानो ताश का कोई महल-सा सजाया गया था जो भरभराकर गिर गया और उसके बाद किसी को अब न बादशाह का पता था और न रानी का...गुलाम का भी नहीं।

बेरुत शहर के एक सिरे पर बसे उस टापू पर ख़ुशनुमा पत्थरों ने पानी के बीच बरसों से खड़े रहकर भी अपमान और अवहेलना का जो मंज़र आज देखा था वह पहले कभी नहीं देखा था।

लोग भी हैरान थे। जो लोग सेलिना की शूटिंगों पर पहले भी रहे थे उन्हें भारी हैरानी हो रही थी। उन्हें तो लगता था मानो किसी ने सेलिना पर कोई जादू-टोना कर दिया हो। काला जादू।

री-टेक पर री-टेक होते जा रहे थे पर सेलिना काम ही नहीं कर पा रही थी। पूरी यूनिट कई बार रिहर्सल और टेक करते-करते आजिज़ आ गई पर सेलिना वह कर ही नहीं पा रही थी जो उससे बार-बार कहा जा रहा था। वह हंसती...फिर हंसती...फिर हंसती...खिलखिलाती...पर जॉन अल्तमश खिलने की जगह मुरझा जाता। उसके चेहरे पर हैरानी, बेबसी, क्रोध, उपेक्षा, आशा, धैर्य...सब आता पर

तसल्ली या संतोष ही नहीं आता।

सेलिना के चेहरे पर भी तनाव बढ़ता जाता। वह पागलपन की हद तक अकेली होती जाती...उसके चेहरे पर जो भाव आते उनमें नशा होता, मादकता होती, खीज होती, आस होती, कातरता होती...पर खिलखिलाहट न होती। न जाने क्या हो गया था इस भावप्रवण अभिनेत्री को, जो अपने निर्देशक का वांछित दे ही नहीं पा रही थी।

उसके साज़िंदे, सहायक, स्टाफ़ सब हैरान थे। उन्होंने अपनी मैडम को दुनियाभर में जैसे जलवे बिखराते देखा था उसका अंश मात्र भी आज नदारद था। लगातार दो दिन की जीतोड़ कोशिशों के बाद भी कुछ न हो पाया। करोड़ों रुपये पानी की तरह स्वाहा हो गये। सबके मूड ख़राब, सबके चेहरे मुरझाये हुए। सब अनमने-से थे। किसी का ध्यान बेरुत शहर की रौनक़ या सैर-सपाटे में नहीं रहा। सब अपने-अपने सामान और हताशा को समेटने में लगे थे। वहां इकट्ठा किये गये लोग यद्यपि अलग-अलग देशों के रहनेवाले थे, और वह भाषा नहीं जानते थे जिसमें संवादों के बीच सब-कुछ बिखर-उजड़ गया था पर तेज़-तेज़ आवाज़ों, भावाभिव्यक्ति और अफ़रा-तफ़री के बीच जो कुछ वहां हुआ था उसका अनुमान लगा पाने में सभी समर्थ थे। उन्हें भी मलाल हो रहा था कि वे एक बेमिसाल यादगार क्षण के सहभागी हो पाने से वंचित हो गये थे। वह नहीं आकार ले पाया, जिसका ख़्वाब यहां सजाया गया था। शूटिंग विफल रही।

किसी मेले की तरह सब डेरे-तंबू उठ गये।

जॉन अल्तमश का दफ़्तर हो या सेलिना नंदा की कंपनी, फ़िलहाल कोई भी यह अनुमान नहीं लगा पा रहा था कि क्षणों की इस विफलता से उन्हें कितना आर्थिक नुक़सान उठाना पड़ा था पर इस घड़ी का ख़ामियाज़ा केवल वर्तमान को ही नहीं, भविष्य को भी होने का पूरा अंदेशा था। दोनों ओर से एक ठंडी चुप्पी इस बात का संकेत थी कि एक शीतयुद्ध का आरंभ अब किसी भी क्षण हो ही जानेवाला था।

होटल को भी अपनी व्यवस्थाओं का मूल्य व लागत वसूलने के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद अपनाना पड़ा। कहीं-कहीं सुरक्षा प्रहरियों का सहारा भी लेना पड़ा। जिन कमरों के भुगतान पूरे नहीं हो सके वहां सामान की ज़ब्ती भी करनी पड़ी। पुलिस की धमकियां भी दोनों ओर से दी गईं।

इस बीच एक उड़ती-उड़ती ख़बर यह भी आई कि जॉन अल्तमश का अपने परिवार से भी मनमुटाव सामने आया है। उसके घर छापा पड़ा है। सेलिना के भी किसी निकट परिजन का स्वास्थ्य पिछले कुछ समय से क्रिटिकल चल रहा था,

इसलिए क़यास लगाया जाने लगा कि वह संभवतः भारत ही लौट गई हो।

कुछ ही सप्ताह गुज़रे होंगे कि सेलिना नंदा एक बार फिर मीडिया की सुर्ख़ी बनी। उसे डबलिन के प्रोड्यूसर जॉन अल्तमश की ओर से क़ानूनी नोटिस भेजा गया था कि उसने एग्रीमेंट के मुताबिक़ काम न करके कंपनी को भारी नुक़सान पहुंचाया है, और एग्रीमेंट के मुताबिक़ एडवांस ली गई साइनिंग राशि तो लौटानी ही होगी, बल्कि तीन गुना हर्ज़ाना भी निर्माता को देना होगा। एक अख़बार में सेलिना से हुए एग्रीमेंट की प्रति भी छपी थी जिसमें साफ़ तौर पर हाईलाइट करके उस क्लाज़ को दर्शाया गया था जिसमें तीन गुनी राशि हर्ज़ाने के तौर पर भरने का ज़िक्र था। सेलिना के प्रतिद्वंद्वियों और विरोधियों की बन आई थी। तरह-तरह से तोड़-मरोड़कर सारे वृत्तांत को पेश किया जा रहा था और सेलिना की प्रतिभा पर भी सवाल उठाये जा रहे थे।

सेलिना के आवास पर होनेवाली बैठकों में अब उसके साथ नामी-गिरामी प्रोड्यूसर्स व सितारों की जगह नामी-गिरामी एडवोकेट्स और क़ानूनी सलाहकार देखे जा रहे थे। दुनिया के नामचीन मध्यस्थ भी सक्रिय थे जो भारी फ़ीस व मुनाफ़े के साथ-साथ सेलिना को यह सलाह देने से भी नहीं चूक रहे थे कि जॉन अल्तमश द्वारा सारे नुक़सान की भरपाई बीमा कंपनी से कर लेने के पश्चात् सेलिना पर इतने बड़े हर्ज़ाने का दावा करने का कोई औचित्य नहीं है।

मुंबई के एक बड़े ज्योतिषी ने एक चैनल के माध्यम से यह राज़ ज़ाहिर किया था कि मशहूर सेलिब्रिटी सेलिना नंदा के नक्षत्र इन दिनों गहरे संकट में हैं और उसे इस ग्रहचाल का मूल्य भारी तबाही से चुकाना होगा।

उन तथाकथित ज्योतिषी महाशय की और भी बन आई जब अख़बारों में सेलिना के उन निकट संबंधी की मृत्यु की ख़बर आई जिनके स्वास्थ्य को लेकर वह पिछले कई सप्ताह से चिंतित देखी जाती थी। कहा जा रहा था कि वह सज्जन केवल परिवार में उसके अभिभावक ही नहीं थे बल्कि पितातुल्य थे और उसका सारा कारोबार देखते थे। प्रेस ने एक बार फिर से सेलिना की तस्वीरों से बेशुमार सफ़े रंग डाले। उसके साथ-साथ कई फ़िल्मी सितारों की जन्मकुंडली छापकर उस पर कई ज्योतिष विशेषज्ञों की टिप्पणियां छापनेवाला एक नियमित कॉलम ही एक मशहूर अख़बार में शुरू कर दिया गया।

राजस्थान के एक संस्कृत विश्वविद्यालय के ज्योतिष विद्या संकाय ने तो परीक्षा में सेलिना नंदा की जन्मकुंडली से संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे। छात्रों को उनकी जन्मपत्री का अध्ययन पाठ्य-सामग्री के तौर पर करना पड़ा।

क़ानूनी परामर्श के दौर पर दौर चलने लगे। इस मामले ने पहला तूल तब

पकड़ा जब सेलिना के नाम पर चलनेवाले कोलाबा के एक ब्यूटी सैलून को वकीलों की फ़ीस चुकाने के लिए बेचना पड़ा। नगर के पॉश इलाके में संचालित होनेवाला यह सैलून सौंदर्य प्रतियोगिताओं की तैयारी कर रही लड़कियों के बीच बेहद लोकप्रिय था। कहा जाता था कि मुंबई के जीवन में सादगी से रहनेवाले अतिमहत्त्वाकांक्षी लोगों को यह सैलून दिल्ली की तड़क-भड़क के मुक़ाबले खड़ा करने का काम भलीभांति कर रहा था।

देश में सेलिना की छवि ख़राब करनेवाली इन ख़बरों के भंवर से उसकी छवि को बचाने के लिए विभिन्न लोकप्रिय चैनलों पर कार्यक्रम दिये जा रहे थे जिन पर भारी ख़र्चा होने लगा था।

इसी बीच शहर की एक पुरानी और लोकप्रिय फ़ैशन मैगज़ीन के कवर पर जब सेलिना नंदा की तस्वीर छपी तो देखनेवाले स्तब्ध रह गये। इस तस्वीर में सेलिना को सिर के बाल पूरी तरह मुंडवाकर दिखाया गया था। अनुमान लगाये जा रहे थे कि यह गंजा सिर किसी बड़ी फ़िल्म की उनकी भूमिका के तहत नहीं, बल्कि उस ऑपरेशन की ओर इंगित कर रहा है जो पिछले दिनों उन पर शहर के एक अस्पताल में अंजाम दिया गया। उन्हें दिमाग़ का कोई रोग होने के क़यास भी लगाये जाने लगे। इसी बीमारी को आधार बनाकर कुछ दिनों में उनके दो-एक फ़िल्मों से अलग हो जाने के समाचार भी छपे। मीडिया को वह कहीं नहीं मिलीं। ढूँढ मचती रही।

उनकी हंसी को लेकर एक वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हुआ और चंद दिनों में करोड़ों लोगों द्वारा देखा गया। इस वीडियो में उन्हें विभिन्न मुद्राओं में हंसते हुए दिखाया गया था। वह विभिन्न वेशभूषाओं और मेकअप में अलग-अलग ढंग से हंसती हुई दिखाई दे रही थीं। यह वीडियो कई टीवी चैनलों पर भी दिखाया जा रहा था। किसी एक ही व्यक्ति के चेहरे पर दर्जनों प्रकार ही हंसी किस प्रकार असरदार रीति से हो सकती है उसकी मिसाल था यह वीडियो। मंद-मंद मुस्कान से लेकर गिरते झरने की तरह निर्बाध हंसी तक इस प्रस्तुति में शामिल थी।

लोग इस वीडियो को सामने रखकर, इसके साथ-साथ ठीक उसी तरह से हंसने का अभ्यास करते थे। शहरों में सुबह के आलम में कई योगा और लाफ़्टर क्लब इस वीडियो को अपने सदस्यों के समक्ष रखकर उन्हें विभिन्न मुद्राओं में हंसाने का उपक्रम करते देखे जाने लगे। इसमें हर रंग की हंसी थी...आंसू निकाल देनेवाली हंसी से लेकर फूल खिला देनेवाली हंसी। गाती हंसी, ख़ामोश हंसी... लरज़ती हंसी...उन्मादी हंसी... फ़रियादी हंसी...कातर हंसी...बंजर हंसी...रुलाती हंसी तो हंसाती हंसी।

नौ

मसरू अंकल के दुनिया से चले जाने के बाद तनिष्क चाहे शहर की भीड़ में घिर गया हो, पर वह भीतर से बिलकुल अकेला हो गया था। उसने छप्पनवीं गली के अपने सैलून से बहुत पैसा कमाया, नाम भी कमाया और अपने ग्राहकों का सुकून कमाया पर उसका जी यहां से अब उचाट होने लगा था। वह कभी भी समय मिलने पर बड़े अदब से वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के पास बने एक स्मृति पूल पर जाता था जिसकी दीवार पर सैकड़ों और लोगों के साथ उसके मसरू अंकल का नाम भी हमेशा के लिए खुद गया था। वह उनके नाम पर पीला गुलाब का फूल लगाकर आता था।

लेकिन अपना अकेला होना अब तनिष्क को अखरने लगा था। उसका मन अब शेख़ साहब की बातों में भी नहीं उलझता था क्योंकि वह अपने कारोबार को और ज़्यादा फैलाने के सिलसिले में इधर-उधर घूमते रहने लगे थे।

जब किसी ज़मीन में किसी पौधे की जड़ें कसमसाने लगें तो समझो पौधे के दिन वहां पूरे हुए। तनिष्क ने भी अपने देश जापान वापस लौटने की कोशिशें शुरू कर दीं। उसके सामने सबसे बड़ा सवाल यह था कि वह जापान में अब कहां जायेगा। अपने देश की ख़ुशबू और याद के अलावा ऐसा कुछ नहीं था जो तनिष्क को जापान के अपने गांव में वापस बुलाये।

एक दिन तनिष्क ने फ़ैसला कर लिया कि वह न्यूयॉर्क छोड़ देगा। अमेरिका छोड़ देगा। उसने शेख़ साहब को एक शाम जब अपने फ़ैसले के बाबत बताया तो उन्होंने उसे गहरी नज़र से देखने के अलावा और कुछ नहीं कहा। तनिष्क भी चुपचाप उनके पैर को अपनी गोद में रखकर धीरे-धीरे अपना काम करता रहा।

लेकिन कुछ ही देर बाद शेख़ साहब का रुख़ पलटा। लगता था जैसे उन्होंने मन-ही-मन तनिष्क के बारे में कुछ सोच लिया हो। वह उसे अपने से सटाते हुए बोले—जापान ही जाना है?

—तो और कहां? तनिष्क ने भोलेपन से कहा।

—पाकिस्तान जाओगे? शेख़ साहब ने कहा।

—पाकिस्तान? वहां कौन है...मेरा मतलब वहां क्या है, वहां क्यों? तनिष्क ने ज़रा उत्साह से पूछा।

—यदि जापान में तुम्हारे घर में कोई नहीं है, घर नहीं है तो तुम पाकिस्तान चलो, मैं वहां भी कुछ शुरू करना चाहता हूं।

—तो पाकिस्तान की जगह हिंदुस्तान में कीजिये न...अचकचाते हुए तनिष्क ने कहा।

—हां-हां एक ही बात है...हम कश्मीर जाएंगे। शेख़ साहब ने खुलासा किया।

—वहां क्या सोचा है आपने? शेख़ साहब के मुंह लगे तनिष्क ने सीधे ही उनसे पूछ लिया।

—वहां मेरा एक दोस्त है। बड़ा नेता बन गया है। कहता है कश्मीर के व्यापार-धंधे सब चौपट हो गये हैं। सरकार वहां फिर से रोज़गार-पानी मुहैया करके लोगों को बसाना चाहती है, जो लोग मुल्क़ से चले गये हैं उन्हें फिर से बुलाना चाहती है। वहां जगह भी मिलेगी, पैसा भी मिलेगा। हम अपना काम वहां भी शुरू कर सकते हैं।

शेख़ साहब की बात ख़त्म होते ही तनिष्क की आंखों में चमक आ गई। उसे यहां से निकलकर एशिया जाने और अपने मुल्क़ के नज़दीक हो जाने के ख़याल ने ही राहत दी। और शेख़ साहब से काम-धंधे का आसरा मिल जाने से तो मानो उसे मनचाही मुराद ही मिल गई। उसने शेख़ साहब की हथेली को जिस गर्मजोशी से पकड़ा उससे वे समझ गये कि तनिष्क को उनका प्रस्ताव पसंद आया है। उनके लिए तो दुनियाभर में अपना कारोबार फैलाने की ख़्वाहिश में एक और ठिकाने का इजाफ़ा था मगर तनिष्क के लिए जीवन के बड़े बदलाव का अवसर था।

रात को जब अपने कमरे पर आकर लेटा तो तनिष्क ख़यालों में खो गया। उसे याद आया कि उसके गांव में उससे मिला बौद्ध लामा कश्मीर से ही तो आया था। उसे लामा की याद बेहद मुलायम गर्मजोशी के साथ थी। लामा ने कहा था कि अगर पायजामे के ऊपर से कोई लड़की इंद्री पकड़ ले तो उसके साथ परिवार बन जाता है। तनिष्क मन-ही-मन मुस्कराने लगा।

यहां तो उसने न जाने कितनी इंद्रियां पकड़ीं, न जाने कितनी छातियां पकड़ीं पर कभी कहीं उसका परिवार नहीं बना। उसका घर नहीं बसा। उसे कश्मीर की याद किसी केसर की क्यारी की तरह आने लगी। यद्यपि वह स्वयं कभी भी कश्मीर गया नहीं था। किंतु वह कश्मीर से आये लामा से मिला था। उसने लामा से कहानी भी सुनी थी।

उसने ये भी सुना था कि कश्मीर के लोग बहुत भोले होते हैं, तभी तो उन्हें चारों तरफ़ से हाथ पकड़कर लोग खींचते हैं। लामा ने बताया था कि एक तरफ़ से चीन खींचता है, दूसरी तरफ़ से पाकिस्तान और तीसरी तरफ़ से तिब्बत खींचता है...लेकिन कश्मीर का असली रास्ता चौथी तरफ़ से ज़्यादा शिद्दत से जाता है जहां उसे हिंदुस्तान खींचता है, भारत...जिसका वह अभिन्न हिस्सा है। कश्मीर के लोग बहुत भोले भी होते हैं और बहुत ख़ूबसूरत भी। वहां की लड़कियां तो संगमरमरी ज़िस्मवाली परियां होती हैं। वे और जगहों की तरह अपनी जांघें उघाड़े नहीं घूमतीं, अपने वक्षों पर बैठने के लिए परिंदों को आकर्षित नहीं करतीं। वे तो पर्दे में फुलवारी छिपाकर छनी हुई सुगंध चारों ओर फेंकती हैं। गुलाबी ज़िस्म, काले-सुनहरे बाल, लाल क़ुदरती होंठ और मासूम मछलियों-सी आंखें। वहीं किसी की छाती पकड़ेगा तनिष्क, और उन्हें अपने बच्चे के दूध का बर्तन बना डालेगा। कोई लड़की हाथ से न पकड़े न सही, आंखों से ही उसकी इंद्री पकड़कर तो देखे...तनिष्क को न जाने क्या-क्या सोचते नींद आई पर आई बड़ी सुकून की। सुबह भी बहुत देर तक सोता रहा।

सैलून में भी अब धीरे-धीरे उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगा। अब वह पहले की तरह अपने ग्राहकों से मुस्तैदी से पेश नहीं आता था। ग्राहक भी उसकी पेशेवर नज़रों को पहचानकर उससे तटस्थ व्यवहार करते हुए विमुख-से होने लगे थे। अब अधिकांश ग्राहक उसी से काम कराने के लिए ज़ोर नहीं डालते थे। उसे सैलून के बाहर होटलों और घरों से बुलावे भेजनेवालों की संख्या भी अब घटने लगी थी। पर इस सबसे वह विचलित नहीं होता था क्योंकि जो कुछ हो रहा था वह ख़ुद उसके फ़ैसले के कारण और व्यवहार में बदलाव के कारण हो रहा था। उसके पास पैसे की कोई कमी नहीं थी। विशिष्ट ग्राहकों से और सैलून से उसे भरपूर पैसा मिला था। साथ ही मसरू ओस्से का देहांत वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के हमले के हादसे में होने के कारण उसे वहां से भी भारी मुआवज़ा मिला था। अपने अंकल का एकमात्र वारिस भी वही था। मसरू के लिए कोई संदेश या खोज-ख़बर और कहीं से नहीं मिली थी। अंकल केवल उसके थे, वह उनका। उसके मन में अंकल के लिए अपार श्रद्धा थी। उसे याद है कि कभी जब अंकल बहुत देर काम करके हारे-थके घर आते थे तो उसका मन पसीज जाने पर वह उनके पैर दबाने या सेवा करने की पेशकश करता था मगर अंकल प्यार से उसके गाल थपथपाते हुए हमेशा टाल जाते थे। थके होने पर भी उससे कोई सेवा नहीं करवाते थे, उल्टे घर के काम में भी अकेले ही लगे रहते थे। उन्होंने हमेशा उसे अपने बच्चे की तरह रखा।

तनिष्क को एक लाड़-प्यार भरी ज़िंदगी दी थी उन्होंने। तनिष्क भी उनकी

एक तस्वीर हमेशा अपने पास रखता था। तनिष्क सोचता था कि जब कभी ख़ुद उसका परिवार बसेगा और उसके बच्चे होंगे तो वह अपने परिवार से अंकल का परिचय दादा की तरह ही करायेगा, अर्थात् अपने पिता की तरह। ख़ुद अपने असली पिता का तो उसे अब चेहरा भी ठीक से याद नहीं था जो बचपन में ही उसे छोड़कर ताईवान चला गया था। हां, अपनी मां से ज़रूर उसे लगाव था और उसे वो नहीं भूला था। वह जानता था कि यदि मां आसानिका पराई हुई तो अपनी मर्ज़ी से नहीं हुई, एक अजनबी के द्वारा उसे बरगलाने से हुई। जिसके लिए मां को कभी दोषी नहीं माना था तनिष्क ने। मां को जो चाहिए था, वह तो तनिष्क दे नहीं सकता था। वह सुरक्षा उसे अजनबी में मिली। सहारा मिला।

ख़ैर! ये सब पुरानी बातें थीं, अब तो ख़ुद तनिष्क का कंधा किसी को आसरा देने के लिए छटपटाता था। तनिष्क की आंखें किसी बसेरे का द्वार खोलने के लिए चमकती थीं। मिले कोई माक़ूल-सा द्वार...और वह चाबी घुमाये ताले में। खोल ले अपनी ज़िंदगी का दरवाज़ा। और बस्ती बस जाये।

तनिष्क पढ़ा-लिखा नहीं था। लेकिन इतना उसे मालूम था कि यहां अमेरिका में बैंक अपने रखे हुए पैसों पर ब्याज़ नहीं देते थे। वह यह भी जानता था कि अपना पैसा सोने-चांदी के रूप में रखना भी सुरक्षित नहीं है क्योंकि एक देश से दूसरे देश जाने पर सीमाओं पर कड़ी चौकसी रहती है और सुरक्षा जांच होने पर अपने असबाब और मिल्क़ियत पर पूरी जवाबदारी निभानी पड़ती है। इस मामले में उसे सबसे ज़्यादा भरोसा शेख़ साहब पर ही था। वह जानता था कि शेख़ साहब के पास रखा उसका पैसा महफ़ूज़ रहेगा और वे कभी भी अमानत में ख़यानत नहीं करेंगे। आख़िर जिस इज़्ज़तदार आदमी ने तनिष्क से अपना कुछ नहीं छिपाया, वह उसकी दौलत में क्या दिलचस्पी लेगा।

और एक दिन तनिष्क भारत में आ गया। पहले दिल्ली उतरा और दिल्ली के विशालकाय इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर पांच घंटे बिताकर श्रीनगर जानेवाले जहाज़ में चढ़ गया।

डल झील के सामने बने एक होटल में कॉफ़ी पीते हुए तनिष्क ने जब बाहर का नज़ारा देखा तो उसे एक सुकून-सा तो मिला, पर साथ ही अंदर-ही-अंदर एक बेचैनी भी मिली। अमेरिका के मुक़ाबले यह बहुत पिछड़ा हुआ-सा इलाक़ा लगा। ऐसा लगता था जैसे वह कोई जगमगाता महानगर छोड़कर किसी गांव या क़स्बे में आ गया हो। ऐसा नहीं था कि तनिष्क ने गांव देखे न हों, पर यहां का वातावरण उसे बड़ा बेतरतीब, उखड़ा-उखड़ा और असुरक्षित-सा लगा।

कुछ संयत होने के बाद जब वह होटल का अपना कमरा बंद करके बाहर

घूमने निकला तो उसकी मुलाक़ात सांझा नाम के एक लड़के से हो गई जो डल के किनारे अपना छोटा-सा बज़रा लेकर किसी टूरिस्ट की तलाश में था। तनिष्क ने अपने अकेलेपन को काटने के मक़सद से सांझा के बज़रे को चार-पांच घंटे के लिए बुक कर लिया और ख़ामोश-सी डल में सांझा की पतवार चलने से लहरें उठने लगीं। चप्पू चलाता हुआ यह युवक तनिष्क को कश्मीर के बारे में लगातार बताता जा रहा था। कश्मीर क्या था, क्या हो गया, फ़िज़ाएं कैसे बदलीं, ख़ौफ़ कैसे मंडराया और कभी धरती की जन्नत कहा गया ये शहर कैसे अपने रहवासियों को स्वर्गवासी होने के अहसास कराने लगा।

तनिष्क अब एक मालदार विदेशी सौदागर था, आंखें मूंदे हुए लेटा हुआ चुपचाप सब सुनता रहा। पानी के बीच में ही जब कोई कश्ती क़रीब से गुज़रती तो सांझा तनिष्क को बताता कि छोटे-छोटे सौदागर इसी तरह से टूरिस्ट लोगों को ढूंढ-ढूंढकर अपना माल बेचते हैं और गुज़ारा करते हैं। किसी असबाब भरी नाव को सांझा तनिष्क के लिए इशारे से रोक देता तो तनिष्क उसका दिल रखने के लिए मोलभाव करने लग जाता। पर उसे ये देखकर बेहद बेचैनी-सी होती थी कि माल की क़ीमत यहां बहुत कम है और वह बेतरतीबी से, घटिया तरीक़े से बेचा जाता है। वह भाव-ताव पूछकर छोड़ देता और कश्ती आगे बढ़ जाती।

वहां बिकनेवाली खाने-पीने की चीज़ों को देखकर भी तनिष्क को थोड़ी निराशा होती। चीज़ें वहां अच्छी, साफ़-सुथरी पैकिंग में नहीं बेची जाती थीं। दामों को लेकर भी काफ़ी रद्दोबदल चलती रहती थी। तनिष्क को वह सौदा-सुलफ़ न तो प्रामाणिक लगता और न हाईजीनिक। वह जिस देश से आया था, और उसके जिस शहर से आया था, वह हर चीज़ को एक प्रणालीबद्ध साफ़-सुथरे तरीक़े से देखने और पाने का आदी था। उसे कभी-कभी लगता था कि कहीं उसने यहां आकर ग़लती तो नहीं की।

लेकिन जब उसे गांव में लामा की सुनाई कहानियां याद आतीं तो वह मन-ही-मन कुछ संयत होता और उसे लगता कि शायद धीरे-धीरे उसका मन यहां लग जायेगा। यहां आदमी वक़्त पर सवार था, वक़्त आदमी की पीठ पर नहीं था। अब ज़िंदगी में ठहराव चाहते तनिष्क के लिए यह एक बड़ी बात थी।

वह घंटों सड़क पर ख़ाली टहलता। वह डल झील में कभी-कभी तैरता भी। वह होटल की छत पर ख़ाली बैठकर आसपास की हलचल और नज़ारों को देखता। श्रीनगर चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ था। वह सुबह के समय लंबी-लंबी सैर पैदल ही कर आता। कुछ ही दिनों में उसने श्रीनगर को अच्छी तरह देख लिया। वह अभी तक होटल में ही था मगर अब उसकी बात एक मकान के लिए भी

किसी से हो गई थी, जो कुछ ही दिनों में उसके लिए ख़ाली हो जानेवाला था।

तनिष्क ने यहां आकर अपने लिए स्थानीय लोगों जैसे कपड़े ख़रीदे थे और वह कभी-कभी पठान सूट, कुरता-पायजामा या कमीज़-पैंट पहनने लगा था। उसका गोरा जापानी चेहरा उसे स्थानीय लोगों के बीच आकर्षण की वजह बनाता था पर वह लोगों में घुलता-मिलता जा रहा था।

उसकी शेख़ साहब से फ़ोन पर बात होती रहती। वे उसे सलाह देते रहते थे। वह ख़ुद अपने स्तर पर भी कोई काम के लायक जगह ढूंढने की तलाश में रहता था। उसका मन अब किसी और कारोबार में हाथ आज़माने को भी कुलांचें भरता रहता था। यहां उसे ज़िंदगी आसान लगती थी। उसे लगता था कि यहां कोई भी काम आराम के साथ किया जा सकता है। ख़र्चे भी बहुत ज़्यादा नहीं थे। शहर छोटा-सा था।

एक दिन होटल की लॉबी में बैठा हुआ तनिष्क वहां रखे अख़बार उलट-पलट रहा था और सामने टीवी चल रहा था। अख़बार हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी में थे। तनिष्क कोई भी भाषा अच्छी तरह से पढ़ना नहीं जानता था, मगर वह केवल उलट-पलटकर तस्वीरें देखता हुआ ही अखबार पढ़ रहा था। कभी-कभी कोई-कोई शब्द उसे समझ में भी आ जाता था।

एकाएक तनिष्क एक अख़बार का पन्ना देखकर उछल पड़ा। अख़बार में सेलिना नंदा की एक बड़ी-सी रंगीन फ़ोटो थी। तनिष्क इस फ़ोटो को तो आंखें बंद करके भी पहचान सकता था। उसके हाथ-पैरों में तरंगें-सी उठने लगीं। उसे सहसा समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, किसे बताये कि इस फ़ोटोवाली लड़की को वह अच्छी तरह पहचानता है। सिर्फ़ पहचानता ही नहीं है बल्कि इसके शरीर के पोर-पोर से परिचित है। उसने एकदम से उल्लसित होकर सामने काउंटर पर बैठे होटल मैनेजर से अख़बार का वह पन्ना मांग लिया और उसे लेकर सहेजता हुआ तुरंत अपने कमरे की ओर जाने लगा। जाते-जाते वह मैनेजर को यह बताना नहीं भूला कि इस तस्वीरवाली मैडम को वह जानता है। मैनेजर ने आश्चर्य से उसे देखा और फिर ठंडेपन से कहा—इसे आप ही क्या, सब जानते हैं सर।

तनिष्क उसकी बात अनसुनी करके अपने कमरे की ओर चला गया और रास्ते में मिले एक वेटर से भी वह बोला—देखो, देखो, ये मैडम है न, इसे मैं जानता हूं। वेटर उसे अचंभे से देखते हुए चला गया।

तनिष्क अपने कमरे में पहुंचकर फिर से उस तस्वीर को देखने लगा। वहां कुर्सी पर बैठे-बैठे तनिष्क ने कई बार फ़ोटो को देखा। बिलकुल वही थी। तनिष्क इसे कैसे भूल सकता था?

लेकिन वह किसी को यह भी नहीं बता पा रहा था कि वह उसे कैसे जानता है? कहां देखा है उसे, क्यों जानता है?

तनिष्क ये किसी को बताना भी नहीं चाहता था कि वह तस्वीरवाली लड़की से कैसे मिला था, कहां मिला था। लेकिन यह बताये बिना कोई उसकी बात को गंभीरता से नहीं लेता था। एक और जवान-सा वेटर जब उसे दिखा तो उसने भी लापरवाही से तनिष्क से यही कहा—इसे सब जानते हैं, बहुत बड़ी हीरोइन है...जब इसकी पिक्चर लगती है तो सारे शहर में इसके पोस्टर लगते हैं।

तनिष्क उसे कैसे बताता कि वह सबकी तरह नहीं, उसे और भी ज़्यादा जानता है, और भी नज़दीक से...लेकिन किसी को कुछ बता नहीं पाता। उसने तस्वीर को संभालकर अपने बैग में रख लिया।

उस दिन के बाद से जब भी तनिष्क कोई अख़बार पड़ा देखता, तो उसे उठाकर अवश्य खोलता। वह तस्वीरों को भी ध्यान से देखने लगता। उसे यहां आकर ही यह पता चला था कि सेलिना नंदा बहुत बड़ी हीरोइन है और वह इसी देश की है। तनिष्क अपने इस गौरव प्रमाणपत्र को किसी को दिखा नहीं सकता था किंतु इससे मन-ही-मन उसका कलेजा चौड़ा हो जाता था कि इस लड़की से उसकी पहचान है। तय था कि यदि वह कभी उसके सामने पड़ता तो ज़रूर ही वह उसे पहचान जाती। पर वह कैसे मिलता, क्यों मिलता...और लड़की उससे क्यों मिलती...ये सब कल्पना से परे था। अब तनिष्क कभी-कभी टीवी पर चलनेवाली फ़िल्मों पर भी ध्यान देता था कि शायद किसी फ़िल्म में उस लड़की पर उसकी निगाह पड़ जाये।

इससे धीरे-धीरे वह स्थानीय टीवी और अख़बारों से भी अपना एक जुड़ाव महसूस करने लगा था। तनिष्क एक बार उन सज्जन से भी जाकर मिल आया था जिनका पता उसे अमेरिका में शेख़ साहब ने दिया था। उन्होंने तनिष्क से शेख़ साहब के कारोबार के हाल-समाचार तो बड़ी गर्मजोशी से पूछे थे मगर इसके बाद कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं ली थी। तनिष्क से भी उन्होंने बेहद औपचारिक तरीक़े से बस इतना कहा था कि वह कभी-कभी उनसे मिलता रहे। तनिष्क की इच्छा फिर कभी उनके पास जाने की नहीं हुई। शेख़ साहब से भी उसके रिश्ते कोई ज़्यादा समीप के होने का कोई सुबूत तनिष्क को नहीं मिला।

तनिष्क अब शहर में ही एक छोटे-से मकान में शिफ़्ट हो गया। यहां पर मकान का मालिक ख़ुद तो साथ में नहीं रहता था पर पास के बाज़ार के कुछ लोग उसे जानते थे। तनिष्क जगह मिल जाने के बाद अब बाज़ार में भी धीरे-धीरे अपनी दुनिया जमाने की कोशिशों में जुट गया। तनिष्क का मन अब अपने पुराने काम

से बिलकुल हट चुका था। शेख़ साहब से उसे अब किसी तरह की मदद मिलने की उम्मीद नहीं लग रही थी। शेख़ साहब ने जिस आदमी का संपर्कसूत्र दिया वह भी तनिष्क को बहुत भरोसेमंद नहीं लगा था।

उसने एक बार फिर केवल और केवल अपने ख़ुद के भरोसे पर अपना काम खड़ा करने की ठान ली और जल्दी ही वह बाज़ार में एक दुकान हासिल करने में कामयाब हो गया। कश्मीर में हैंडीक्राफ़्ट और यहां की कारीगरी से सजे वस्त्रों व अन्य सामान का यह व्यवसाय तनिष्क को पसंद आ गया और देखते-देखते बाज़ार में एक दिन ''मसरू हैंडीक्राफ़्ट एंपोरियम'' का एक बोर्ड टंग गया।

तनिष्क का घर व दुकान नज़दीक ही होने से उसकी ज़िंदगी में अब एक सधाव-सा आ गया। वह अकेला था, फिर भी दिन-रात की मेहनत से उसने जल्दी ही स्थानीय बाज़ार में अपनी साख़ जमा ली। उसने दो लड़के अपने एंपोरियम पर काम करने के लिए भी रख लिए जिनमें से एक उसके साथ घर पर भी रहने के लिए आ गया। लड़के स्थानीय थे और शेख़ साहब के मित्र की जानकारी से मिले थे। मेहनत और ईमान उनका अपना था। जल्दी ही वह तनिष्क के अच्छे सहयोगी बन गये और तनिष्क का यह नया कारोबार चल निकला।

घूमने-फिरने से तनिष्क को कभी कोई परहेज़ नहीं रहा था। नई जगहें देखना और नये लोगों से मिलकर उन्हें अपना बना लेना उसकी फ़ितरत में था। वह लड़कों के भरोसे दुकान छोड़कर अब नये-नये उत्पादों की खोज-ख़बर लाने के लिए निकलता और ज़रूरत पड़ने पर कई जगह से सामान की ख़रीद करता। इस बाज़ार में ज़्यादातर कश्मीर घूमने आनेवाले सैलानी ही आते थे और इनको पसंद आनेवाली एक से एक नायाब चीज़ लाने के लिए तनिष्क हर समय बेताब रहता। देशभर में कई यात्राएं उसने अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए भी कर डालीं। स्थानीय वेशभूषा में तनिष्क सहसा देखने पर कश्मीरी ही दिखता, और हिंदी व उर्दू जैसी बोली-भाषाओं पर भी उसने अच्छी पकड़ हासिल कर ली।

दुकान में काम करनेवाले रूबैद और हसन मसरू साहब को तनिष्क का पिता ही समझते थे और नियम से दुकान में लगी उनकी तस्वीर पर फूल चढ़ाया करते थे। तनिष्क ने भी कभी उन्हें मसरू अंकल के बारे में कुछ बताया नहीं था। तनिष्क भी कभी-कभी दुकान में बैठा पुराने दिनों की यादों में खो जाता था।

सुबह जब हसन ने मसरू साहब की तस्वीर पर फूल रखकर अगरबत्ती जलाई तो तनिष्क चौंक गया। माचिस की तीली की लौ और अगरबत्ती के दरमियान उठी छोटी-सी चिनगारी ने उसे उम्र का वो पहला दिन याद दिला दिया जब वह मसरू साहब से पहली बार मिला था। वेल्डिंग करते मसरू साहब ने तब

ऐसी ही एक चिनगारी उड़ाई थी जिसने तनिष्क की ज़िंदगी में उजाला कर दिया। मन-ही-मन तनिष्क मसरू अंकल को याद करता और फिर आनेवाले ग्राहकों की ख़्वाहिशों में खो जाता। दुकान पर भीड़ दिनोंदिन बढ़ती जाती थी।

एक दिन सुबह नहा-धोकर तनिष्क जब दोपहर में अपने एंपोरियम पर पहुंचा तो उसे ज़रा आश्चर्य-सा हुआ। वैसे बात बड़ी नहीं थी, मगर उसने दुकान में ऐसा पहले कभी देखा नहीं था, इसलिए चौंका।

दुकान में एक महिला हाथ में एक बैग लिए काउंटर के पास रखी कुर्सी पर बैठी थी और उसके साथ में एक लड़की भी थी जो हाथ में कॉफ़ी का एक प्याला लिए ख़ामोशी से कॉफ़ी पी रही थी। रूबैद और हसन दोनों काउंटर के इस तरफ़ विनम्रता से खड़े थे। दुकान में कोई और ग्राहक नहीं था।

तनिष्क के भीतर आते ही दोनों लड़के ज़रा-से असहज हुए और फिर उसे अभिवादन करके यथावत् खड़े हो गये। महिला और लड़की उसी तरह बैठे रहे। तनिष्क ने ज़रा जिज्ञासा से उनकी तरफ़ देखा पर कोई कुछ नहीं बोला। महिला ने बड़ा-सा हैट लगा रखा था और उसके चेहरे पर बड़ा-सा काला चश्मा भी था। झुर्रीदार उस सांवले-से चेहरे को देखकर तनिष्क ज़रा अचरज में पड़ा। महिला देखने से जापानी दिख रही थी। हो सकता है वह चाइना या तिब्बत से भी हो परंतु उसके साथ बैठी लड़की तो निश्चय ही जापानी दिख रही थी। तनिष्क भला उसे पहचानने में भूल कैसे कर सकता था। लड़की का रंग गोरा था और उम्र लगभग पच्चीस वर्ष रही होगी। महिला साठ पार की थी और अपेक्षाकृत सांवली थी। अब तनिष्क की जिज्ञासा इन महिलाओं का परिचय जानने के लिए उतावली-सी लगी। अब तक तो वह यही समझ रहा था कि आनेवाली औरतें हसन या रूबैद की परिचित होंगी, इसलिए वह इन्हें बैठाकर कॉफ़ी पिला रहे हैं और इस तरह से स्वागत कर रहे हैं। किंतु जापानी महिलाओं से उन दोनों का सरोकार क्या और किस तरह हो सकता था।

महिला ने भी तनिष्क को ग़ौर से देखा और यह भांप लिया कि सफ़ेद पठान सूट पहने होने पर भी यह युवक जापानी ही है। उसने हल्का-सा एक अभिवादन तनिष्क की ओर उछाला। इस बाज़ार में विदेशी सैलानी आते ही रहते थे, और चाइना, तिब्बत या जापान से किसी पर्यटक का चले आना भी कोई अजूबा नहीं था। फिर भी तनिष्क के लिए अजूबा था तो ये जानना कि हसन व रूबैद उनकी ख़ातिर किस बिना पर कर रहे हैं और वे इन महिलाओं के बाबत क्या जानते हैं। क्या महिलाओं ने कुछ कहा है, या किसी परिचय का हवाला दिया है, यही जानना चाहता था तनिष्क।

महिला के साथ आई लड़की बिलकुल ख़ामोश थी और इस तरह बैठी थी मानो वह कुछ नहीं जानती, और उसे किसी भी बात से कोई सरोकार नहीं है। उसने तो कॉफ़ी का कप भी इसलिए हाथ में पकड़ लिया क्योंकि सामने खड़े दो संजीदा-से युवकों ने इसे ऑफ़र किया था।

मगर महिला के चेहरे पर बातों के मेले लगे थे। ख़याल आ भी रहे थे और जा भी रहे थे। वह कुछ बोल नहीं रही थी मगर ऐसा लगता था कि उसकी बंद पोटली में बोल-ही-बोल हैं...बोलने पर आयेगी तो समय कम पड़ जायेगा, वहां खड़े लोगों की दुनिया हिल जायेगी, और ख़ुद उसकी अपनी दुनिया भी डगमगायेगी। उसके साथवाली लड़की अब कभी महिला की ओर देखती थी और कभी तनिष्क की ओर...उसके सुर्ख़ लिपस्टिक लगे होंठ बुदबुदाते थे, मानो कह रहे हों कि कुछ है तो सामने क्यों नहीं आता?

दोनों लड़के भी शायद इस उम्मीद में चुप खड़े थे कि पहले दूसरा कुछ बोले। या शायद महिलाओं की उपस्थिति में तनिष्क से उनके बारे में कुछ बोलने में संकोच से हिचकिचा रहे हों।

रूबैद तो तनिष्क को सर ही कहता था मगर हसन क्योंकि घर में भी तनिष्क के साथ ही रहता था और उससे कुछ खुला हुआ था, तनिष्क को 'ब्रदर' कहता था। कभी-कभी भाईजान भी। उसी ने पहल की। धीरे-से बोला—भाईजान ये...ये लोग आपके अब्बू के बारे में पूछ रहे थे।

—अब्बू के बारे में? तनिष्क कुछ समझा नहीं। वह महिला की ओर देखने लगा। मानो उससे ही जानना चाहता हो कि वे लोग कौन हैं और क्या जानना चाहते हैं।

लड़की एकाएक ख़ाली प्याला रखकर तेज़ी से खड़ी हो गई। जैसे उसे इस धीमे वार्तालाप से असुविधा हो रही हो। सब लोग इकट्ठे होकर खड़े थे, और कोई कुछ नहीं बोल रहा, यह लड़की को अखर रहा था।

महिला भी झटके से खड़ी हुई और दीवार पर टंगी मसरू अंकल की फ़ोटो के पास आकर तेज़ी से बोली—मेरा हसबैंड...पति।

तनिष्क लड़खड़ाकर काउंटर के समीप आया और इतने में ही महिला ने ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। किसी की समझ में नहीं आया कि क्या किया जाये...लड़की ने अपना रूमाल महिला की ओर बढ़ाया और तनिष्क ने अपने दोनों हाथ...मानो महिला को थामना चाहता हो।

दस

जो बातें तनिष्क के बार-बार पूछने पर भी मसरू अंकल टाल जाते थे और कभी नहीं बताते थे, वे सब एक खुली किताब की तरह अब तनिष्क के सामने पड़ी थीं।

अंकल अपने परिवार से किस बात पर इस क़दर नाराज़ थे कि कभी उन्हें न तो याद किया और न ही किसी से मिलने की कोशिश की, यह जानना अब बहुत ही आसान हो गया था। दो गुलाक़ातों में तनिष्क ने सब-कुछ जान लिया। बल्कि वह अंकल के परिवार को अपने घर ही ले आया। लेकिन जिस परिवार को अब तनिष्क ने देखा था वह भी पूरी तरह अंकल का नहीं था।

अनन्या अंकल की सगी बेटी नहीं थी बल्कि अंकल की शादी बाद में उसकी मां से हुई, वह पहले से ही अपनी मां के साथ थी। अब अनन्या लेह में रहती थी और वहां एक मठ में बच्चों को पढ़ाती थी। उसकी मां ने भी पति के छोड़कर चले जाने के बाद लेह आकर ही एक दुकान में फूल-माला व गुलदस्ते बनाने का काम शुरू कर दिया था।

मां-बेटी श्रीनगर घूमने आई थीं और यहां बाज़ार में घूमते हुए इस एंपोरियम में चली आईं। यहां मसरू अंकल की फ़ोटो लगी देखकर मां को यक़ीन हो गया कि जिस दुकान के नामपट्ट पर अपने पूर्व पति का नाम लिखा देखकर वह अचंभित हुई है, वह वास्तव में उसके पति से ही वाबस्ता है। यहां आकर जब अपना परिचय उसने दुकान के लड़कों को मसरू अंकल के रिश्तेदार के रूप में दिया तो लड़कों ने सामान्य शिष्टाचार के तहत उन्हें भीतर बैठाकर आदर के साथ तनिष्क के आने तक रोक लिया। और इस तरह तनिष्क को अपने दिवंगत अंकल के बारे में और जानने को मिला।

दोनों मां-बेटी एक बेहद सस्ते-से होटल में ठहरी थीं और जैसे ही तनिष्क ने उन्हें होटल छोड़कर घर चलने की पेशकश की, थोड़ी-सी ऊहापोह के बाद वे मान गईं। शाम को तनिष्क के साथ अपने सामान सहित वे घर आ गईं। सामान भी क्या था, बेटी का एक छोटा सूटकेस और मां का एक बैग। थोड़े-बहुत कपड़े और महिलाओं की ज़रूरत व आदत का छोटा-मोटा थोड़ा-सा सामान।

तनिष्क और उसके साथी हसन ने चंद रोज़ के लिए अपने घर को भी गुलज़ार देखा। अनन्या ने आते ही ऐलान कर दिया था कि वे लोग चार-पांच दिन के लिए ही श्रीनगर आये हैं, इसके बाद उन्हें वापस लेह लौटना होगा जहां मां-बेटी दोनों ही काम करती थीं। तनिष्क ने भी इससे ज़्यादा रुकने के लिए उन पर विशेष ज़ोर नहीं डाला।

लेकिन इन तीन-चार दिनों में तनिष्क को भी मसरू अंकल के परिवार व ज़िंदगी के बारे में पता चला, तो अनन्या और उसकी मां को भी जापान छोड़ने के बाद मसरू ओस्से कहां रहे, कैसे रहे, किसके साथ रहे, यह सब जानकारी मिली।

चार दिन बाद दोनों वापस चली गईं। लेकिन अब उनके लिए तो श्रीनगर आने का एक स्थान हो ही गया था, तनिष्क के भी लद्दाख-लेह जाने-आने का रास्ता खुल गया। तनिष्क अनन्या की मां, अंकल की पत्नी को मां ही कहता था। मगर ये भी अच्छी तरह जान गया था कि अनन्या अंकल की सगी बेटी न होने के कारण किसी भी तरह तनिष्क को अपने भाई के रूप में नहीं देखती है।

वैसे भी अनन्या अपने में खोई रहनेवाली, और अपने काम से काम रखनेवाली लड़की थी। उसने बौद्धमठ में नन्हे लामाओं को पढ़ाने के काम में अपने को पूरी तरह झोंक रखा था। उसकी मां की भी दुकान में पुरानी नौकरी थी। तनिष्क ने दोनों को वापस जाते समय अपनी दुकान से कीमती उपहार दिये। उनके चले जाने के बाद तनिष्क के मन में एक कशमकश और शुरू हो गई। वह सोचने लगा कि मसरू अंकल ने उसे तो अपने साथ रखकर उसका पालन-पोषण किया ही है, उनकी मृत्यु के बाद भी उनके नाम पर बड़ी रकम मुआवज़े के तौर पर उसे मिली है। क्या ऐसे में उसे अंकल के परिवार को वह पैसा दे देना चाहिए जो उनके देहांत के बाद मिला है।

तनिष्क कुछ निर्णय नहीं कर पाया। उसने अपने आपको समझाकर आश्वस्त कर लिया कि वह एक साथ कोई रक़म अंकल के परिवार को न देकर समय-समय पर इनकी मदद करता रहेगा। उन्हें मौक़े-बेमौक़े तोहफ़े देकर अपना ऋण चुकाता रहेगा। क्योंकि अभी तो वह ख़ुद भी कहां जानता था कि अंकल का अपनी पत्नी से मनमुटाव या अलगाव किस कारण हुआ था? अंकल उनसे ख़ुश या संतुष्ट थे या नहीं? यदि ख़ुश होते तो उन्हें छोड़कर चले क्यों जाते? और अनन्या की मां से अंकल की शादी किस तरह हुई? एक पुत्रीवाली महिला को उस सीधे-सरल व्यक्ति ने क्यों स्वीकार किया था? और यदि स्वीकार किया था तो अस्वीकार किस बात पर कर दिया! दर्जनों प्रश्न थे, जिनका उत्तर समय के गर्त में दबा था। ऐसे में भावुक होकर बड़ी राशि उन्हें पकड़ा देना कोई बुद्धिमानी तो नहीं हो सकती थी।

तनिष्क सोचता तो सोचता रह जाता।

तनिष्क समय मिलने पर एक पड़ोस में रहनेवाले वृद्ध से उर्दू और हिंदी सीखता था। वैसे दिनभर हसन और रूबैद से बातें करते और उनकी बातें सुनते-सुनते उसे बोलचाल का तो काफ़ी अभ्यास हो चला था किंतु कुछ दूर पर रहनेवाले एक रिटायर्ड शिक्षक शराफ़त अली उसे रात के वक़्त सिखाने भी लगे थे। शुरू में तो दोस्ताना हुआ, मगर बाद में बातों-बातों में शराफ़त अली साहब ने जब अपनी मालीहालत का रोना रोया तो हंसी-हंसी में एक दिन तनिष्क से ये पेशकश ज़बान से निकल गई कि वे उसे हिंदी-उर्दू सिखायेंगे और वह उन्हें तीन-चार सौ रुपये माहवार दे देगा।

रोज़ रात खाने के बाद तनिष्क और शराफ़त अली मिलने लगे। सबक़ भी होता और गप्पबाज़ी भी। शराफ़त अली साहब ने ही तनिष्क को बताया कि हिंदुस्तान-पाकिस्तान जैसे मुल्क़ों की आबादी बेइन्तिहा घनी है जबकि जापान, ऑस्ट्रेलिया, रशिया जैसे देश लोगों/आबादी की कमी से जूझ रहे हैं।

तनिष्क को बड़ा अचंभा हुआ। हां, ऐसा है ये तो उसने देखा है, मगर ऐसा क्यों है, इसका क्या कारण है इस पर कभी उसका ध्यान नहीं गया।

यह सही है कि इन संपन्न देशों में रोटी है, रोज़गार है, ज़मीन है, पैसा है, लेकिन उसे भोगनेवाले नहीं हैं। हैं भी तो दिनोंदिन घटते जा रहे हैं। जबकि हिंदुस्तान-पाकिस्तान के लोग तादाद में ख़ूब हैं। इतने हैं कि संभाले नहीं संभल रहे, इधर-उधर निगाह डालिये, दुनिया के सब मुल्क़ों में इनकी तादाद बढ़ती जा रही है। हिंदुस्तान-पाकिस्तान में तो आबादी उफ़नते दूध की तरह सरहद के बर्तन से निकलती जा रही है। मुल्क़ का ये दूध बहता हुआ दुनिया के तमाम देशों में जाता जा रहा है।

हां ऐसा तो है...तनिष्क सोचता।

—आपको पता है, यहां एक औरत और मर्द बीस से तीस साल तक उपजाऊ होते हैं। मतलब कि साथ मिलकर उम्र के बीसवें साल से पचासवें साल तक औलादें पैदा करते हैं। जबकि संपन्न कहे जानेवाले देशों में औरतें तीस-पैंतीस साल के बाद शादी और बच्चे की बात सोचती हैं। बच्चे भी इस दौरान बस एक. ..बहुत हुआ तो दो। और चालीस की होते ही तौबा।

—पर अब तो पाकिस्तान-हिंदुस्तान में भी ऐसा है।

—जी नहीं...जाइये हुज़ूर...क्या बात करते हैं, बीस-तीस बरस में पांच-छह तो मामूली बात है।

—अच्छा ज़नाब, इसकी वज़ह क्या है?

—वज़ह ये है कि जापान जैसे मुल्क़ में लोग अपने काम के दीवाने होते हैं। सुबह से लेकर रात तक आदमी अपनी ड्यूटी के पीछे पागल रहेगा। अब ऐसा थकामांदा आदमी घर जाकर औरत पे पड़ेगा कि गद्दे पे पड़ेगा? और साहब मानो या न मानो, पर यही वजह है कि औरत नीचे से निकलकर दूसरे की हो जाती है। अरे भैया ज़मीन तो उसी की होगी न जो हल चलाये! कि उसकी होगी, जो बाड़ बांध के ख़ाली पड़ी छोड़ दे?

तनिष्क की हिंदी और उर्दू तेज़ी से सुधरने लगी। उसे अब अपनी दुकान के लिए माल लाने को जब इधर-उधर जाना पड़ता तो ज़बान को लेकर बिलकुल परेशान नहीं होना पड़ता था। वह राजस्थान जाकर जयपुरी बंधेज भी लाता, तो शोलापुर जाकर शोलापुरी भी, कोल्हापुर की चप्पलें भी उठा लाता तो उड़ीसा की साड़ियां भी। कलकत्ता, मुंबई, दिल्ली सब देख आया तनिष्क। लखनवी चिकन यूपी से कश्मीर में आता। यहां का पशमीना भी चारों तरफ़ जाता। तनिष्क के लिए अब मसरू अंकल की ज़िंदगी के सवाल बहुत अहम नहीं रह गये थे।

वह लद्दाख भी हो आया था। अनन्या मठ में ही रहती थी। केवल सुबह थोड़ी देर मिलने आ पाती। मां के पास रुकने में तनिष्क को संकोच हुआ। एक-दो दिन में ही वापस लौट आया। मां भी तो काम पर जाती थी।

अब तनिष्क अख़बार भी ख़ुद ही पढ़ने लगा था। दुकान के कामकाज में उसे चिट्ठी-पत्री कराने के लिए हसन का सहारा पहले की तरह नहीं लेना पड़ता था अब। अब पहले की तरह सिनेमा देखने जाने का चाव भी उसे नहीं रहा था। उसने बहुत समय से उस लड़की का नाम या तस्वीर भी अख़बारों और टीवी में नहीं देखी जिसकी तस्वीर उसने बैग में संभालकर कभी रखी थी। उसका नाम भी वह अब भूल चला था।

तनिष्क भी अब बत्तीसवें साल में क़दम रख रहा था। कभी-कभी उसका जी चाहता था कि अब उसका घर-परिवार हो। लेकिन अब तक कोई ऐसा भी नहीं मिला था जो उससे इस बारे में बात करे और न ही किसी लड़की ने उसकी...उसके घर में कोई ऐसा कहनेवाला भी तो नहीं था। लद्दाख में आंटी ज़रूर थी पर उसे तो अनन्या का ख़याल ही नहीं रहता था तो तनिष्क का क्या रखती।

अनन्या का ख़याल? तनिष्क ने सोचा।

तनिष्क ने मां से पूछा था कि अनन्या कोई संन्यासिनी बनी है क्या? या केवल लामाओं को पढ़ाने के लिए ही वहां रहती है?

मां ने छोटे-से उत्तर से टाल दिया—वो क्या बनी है, वही जाने!

—तो आप ही उसका घर बसाने के बारे में कुछ क्यों नहीं करतीं? तनिष्क

ने कहा।

—मेरे हाथ में होता तो सब कर लेती। तेईस साल की उम्र में मैंने अपना घर तो दूसरी बार बसा लिया था।

—अच्छा आंटी, क्या मैं पूछ सकता हूं कि आप मसरू अंकल से कब मिली थीं?

—हां, जब अनन्या छह-सात साल की थी तब।

—क्यों? मेरा मतलब है कि अंकल से आप क्यों मिलीं...आप तो शादी से थीं न...तनिष्क ने यह अटपटा-सा सवाल झिझकते हुए पूछा।

—क्या करती, इसका बाप मेरी तरफ़ देखता भी नहीं था, अपने काम में डूबा रहता...।

—आपके साथ ही रहा...या छोड़ गया था।

—वो क्या छोड़ता, मैं ही आ गई।

—फिर अंकल को क्यों...?

—अरे, मैं क्या ज़िंदगीभर दूसरे का हुक्का ही भरती रहती, मेरा हुक्का कौन भरेगा? मां ज़ोर से झल्लाकर बोली।

इससे आगे कुछ पूछने की हिम्मत तनिष्क को नहीं पड़ी।

अनन्या की मां से जब-जब भी तनिष्क का मिलना हुआ, एक बात तो उसने ख़ुद ही अपनी आंखों से देख ली थी, मां की ज़बान बहुत कड़वी थी। वह बात-बात में अपमानित और निरुत्तर कर देनेवाले बोल बोल दिया करती थी। सामनेवाला बस तिलमिलाकर रह जाता। तनिष्क को ये समझने में देर न लगी कि संजीदा-से सीधे-सादे मसरू अंकल इन तेज़तर्रार आंटी के साथ क्यों नहीं रह पाये होंगे। लेकिन दम आंटी की बात में भी था। उसने मसरू अंकल को कभी किसी महिला से अंतरंग बातें करते या दोस्ती करने की कोशिश करते हुए भी नहीं देखा था, जबकि उनकी उम्र ऐसी नहीं थी कि वे इन सब बातों से बैरागी बने रहें। तनिष्क सोचता, तो ग़लती केवल एक पक्ष की नहीं दिखाई देती।

तनिष्क ने अमरीका में अपने काम के दौरान मिलनेवाली ट्रेनिंग में एक बात और भी सीखी थी। उन्हें बताया गया था कि औरत और मर्द के ज़िस्म में एक बुनियादी फ़र्क़ होता है। मर्द अपने आप अपने बारे में, अपनी ज़रूरतों के बारे में जान जाता है मगर औरत को ये बात तभी समझ में आती है जब कोई उसे बताये। अपने आप कोई लड़की गृहस्थों-सी बातें नहीं जान पाती। या तो लड़की को बड़े-बूढ़ों के बीच बैठने की आदत हो, या फिर कोई लड़का उनके गुप्तांग या अन्य निजी भागों को छू दे, तभी उन्हें इससे मिलनेवाले सुख का आभास हो पाता है।

लड़के समय आने पर अपने बदन को मिलनेवाला सुख ख़ुद ढूंढ लेते हैं। लड़कियां नहीं ढूंढ पातीं।

तनिष्क कभी-कभी अनन्या को याद करने लगा था।

एक दिन अनन्या का फ़ोन आया कि वह एक दिन के लिए श्रीनगर आ रही है। तनिष्क को अच्छा लगा।

अनन्या मठ में जिन बालकों को पढ़ा रही थी उन्हें श्रीनगर के एक विद्यालय में लाया जा रहा था। घुमाने और किसी अतिथि से मिलवाने के लिए। अनन्या को उनके साथ ही आना था।

लद्दाख से एक बस से सुबह जल्दी ही निकलकर बच्चे श्रीनगर की ओर आ रहे थे। रास्ता लंबा और थकानेवाला था। फिर बच्चों का शैक्षणिक भ्रमण था इसलिए उन्हें रास्ते में पड़नेवाले विशेष स्थानों को दिखाने का प्लान भी बनाया गया था।

सुबह अपने मठ से निकलकर बच्चे दोपहर तक एक बेहद मनोरम स्थान पर पहुंचे जहां उन्हें कुछ समय रुककर भोजन भी करना था। एक के बाद एक किलकारियां भरते हुए बच्चे जब बस से उतरे तो गुरुद्वारे का यह प्रांगण मानो गुलज़ार हो गया। यह पहाड़ी रास्ते पर बना एक विशाल गुरुद्वारा था जिसकी सब व्यवस्थाएं भारत की सेना देखती थी। सेना से संचालित होनेवाले इस धर्मस्थल में बेहद स्वच्छता तो थी ही, अनुशासन भी था।

गुरुद्वारे के भव्य प्रांगण के एक ओर ऊंचा-सा पहाड़ भी था। कहा जाता था कि इस गुरुद्वारे की स्थापना सिखों ही नहीं, मानवता के धर्मगुरु नानक देव के समय में हुई थी। वे यहां पर बैठकर एक बार यात्रा के दौरान अपनी सामान्य पूजा-अर्चना कर रहे थे, तभी पहाड़ से एक बड़ा भारी विशाल पत्थर लुढ़कता हुआ नीचे गिरने लगा। लोग कहते थे कि वह कुछ डाकुओं का काम था।

तत्कालीन प्रत्यक्षदर्शियों ने इतिहास में दर्ज़ किया था कि यह पत्थर ठीक उनकी पीठ की सीध में इस तरह गिर रहा था कि वे निश्चय ही इसके नीचे दबकर काल के गर्त में समा जाते। किंतु वे अविचलित-से बैठे पूजा करते रहे और पत्थर उनकी पीठ के ठीक पीछे आकर टूटकर बिखर गया। पत्थर का एक कंकड़ जितना छोटा टुकड़ा भी उनके शरीर पर नहीं लगा। तभी से इस जगह का माहात्म्य था और यह स्थल बना हुआ था।

बच्चों को यहां का भोजन भी बहुत पसंद आया और स्थान भी। रास्ते में बच्चों ने सिंधु नदी तट के दर्शन भी किये। इसी रास्ते पर वह भव्य स्मारक भी पड़ता था जो भारत और पाकिस्तान के बीच कारगिल में हुई झड़प के स्मृतिचिह्न

की तरह बनाया गया था।

कारगिल से होते हुए बस जब श्रीनगर पहुंची तब तक रात हो चली थी। अगली सुबह बच्चों को व्यस्त कर देनेवाला कार्यक्रम था, इसलिए तनिष्क से मिल पाने के लिए अनन्या के पास रात का ही समय था। वह तनिष्क से मिलने चली आई।

तनिष्क अनन्या के आने की ख़बर से सुबह से ही उत्साहित और प्रतीक्षारत था। उसने आज हसन को भी एक दिन की छुट्टी दे दी थी। हसन अपने मित्रों के साथ घूमने चला गया।

तनिष्क और अनन्या खाना खाकर जब घर लौटे तो काफी रात हो चुकी थी। उसे यह भी घर पहुंचकर ही पता चला कि हसन आज घर पर नहीं है और तनिष्क वहां अकेला ही है। अनन्या ने एक बार कहा कि वह वापस चली जायेगी क्योंकि उसे विद्यालय में बच्चों के साथ ही ठहरना है। किंतु तनिष्क ने उसकी बात को अनसुना कर दिया।

वह सोने की व्यवस्था में इस तरह तल्लीन हो गया कि उसने अनन्या को और कुछ कह पाने का अवसर ही नहीं दिया। अनन्या सचमुच एक पर्स ही साथ में लिए चली आई थी और उसके पास रात को बदलने के लिए कपड़े भी नहीं थे।

किंतु तनिष्क न जाने आज किस मूड में था, उसने कोई बात नहीं सुनी। उसने हाथ पकड़कर अनन्या को अपने डबलबैड पर ही लगभग खींच-सा लिया। अनन्या भी कुछ कह नहीं सकी और चुपचाप तनिष्क के समीप लेट गई।

कमरे में अंधेरा था। सुगंध थी।

अंधेरे में भी अनन्या को यह दिखाई दे रहा था कि तनिष्क उसके पास चले आने की तैयारी कर रहा है। उसे यह चिंता थी कि वह रात को बदलने के लिए कपड़े तक नहीं लाई है और वही कपड़े पहनकर लेट गई है जिन्हें सुबह भी पहनकर उसे जाना होगा।

किंतु शायद तनिष्क को सब ध्यान था। उसने अनन्या की बातें अनसुनी करके भी सुनी थीं। थोड़ी देर बाद बिस्तर के पास रखी एक कुर्सी पर जहां तनिष्क की कमीज़ और पायजामा पड़ा था, उनके ऊपर ही अनन्या का फूलदार टॉप और काली स्कर्ट भी आ गई। अब अनन्या के कपड़े ख़राब हो जाने या उन पर सिलवटें पड़ जाने की कोई आशंका नहीं थी। तनिष्क तो जैसे किसी वर्षों के भूखे-प्यासे की तरह था जिसके सामने भोजन की थाली चली आई हो। उसकी चपलता से लग रहा था कि थाली का भोजन तो भोजन, कौन जाने आज थाली भी बचेगी या नहीं।

अंधेरे में ही उजाले होने लगे।

तनिष्क की अंगुलियों ने अनन्या की ब्रा हटाकर मानो कोई देदीप्यमान लट्टू जला लिया। हल्की-सी जुंबिश से उसने करवट बदली और उसके होंठ लट्टू के इस स्विच को जैसे दांतों से खोलने का उपक्रम करने लगे।

अनन्या के मुंह में दुनिया घुल गई। तनिष्क उसके ऊपर था। तनिष्क की स्थिति उस किंग मिडास जैसी हो गई जिसे चारों ओर सोना-ही-सोना दिखाई दे रहा था। वह दोनों हाथों से, दसों अंगुलियों से, दोनों होंठों से, बत्तीसों दांतों से बिखरा हुआ सोना समेटने में हलकान हुआ जा रहा था। काम बहुत था, समय केवल एक रात का। सांसें तेज़-तेज़ चलकर मानो रात को ज़्यादा-से-ज़्यादा पी लेने को उतावली थीं। अनन्या की सांस किसी फुलवारी की तरह से तनिष्क के बग़ल के रोंयों को बहलाती थी। तनिष्क कमर के संगमरमर पर बार-बार फ़िसलता। अनन्या की अंगुलियां उसके बालों में ऐसे विचरण करतीं जैसे फूलों के झुंड ने मानो तितलियों को बदहवास कर रखा हो। कमरे में चूमने की आवाज़ें मधुमक्खियों-सी बिखर रही थीं। तनिष्क के पैर मुलायम बिस्तर पर पड़े अनन्या के टख़नों को किसी धुनिया की मानिंद धुन रहे थे। उसकी मुट्ठियां अनन्या की छाती की अमराई को उसके हलक़ में निचोड़ देना चाहती थीं। अनन्या की जीभ ने तनिष्क के गालों पर बिखरी चाँदी पर बला की डस्टिंग की थी। सुख रंगीन मछलियों की तरह उछल-मचलकर दो बदनों के पोर-पोर में जा रहा था। गुल बिजलियों के नशीले आलम में भी ये रंगीन करेंट किसी मेले में थिरक रही नर्तकी-सा थिरक रहा था।

बंद कमरे की सांस रोके खड़ी हवायें भी कहीं अनन्या के वस्त्रों को मैला न कर डालें, इस ख़याल से तनिष्क की सफेद बनियान और अधोवस्त्र ने छलांग लगाकर कुर्सी पर उन्हें ढक लिया था। और उनकी चांद रात जैसी रोशनी आंखों को चुभ न सके, इस कोशिश में अनन्या की ब्रा और सिल्की नीली पैंटी ने तनिष्क के कपड़ों को कुर्सी पर लपेट लिया था ताकि वे उद्दंड शरारती बालकों की भांति वहां से वापस लौट-लौटकर न आ पायें।

बिस्तर की चादर ने ज़लज़ला तो देखा...प्रलय से पहले का तांडव भी देखा। और अब तनिष्क का सूरज और अनन्या का चंद्रमा आमने-सामने थे। एक दिशा में झरने का उद्दाम वेग था तो दूसरी दिशा में अनंत प्यास।

धरती के राग उठने लगे थे, आसमान के सुरों से मिल जाने के लिए। क़ायनात गा रही थी। आलम उनींदा था। होश सुस्ता रहे थे। उमंगें अठखेलियां कर रही थीं। जैसे किसी जंगल के सारे पंछी-परिंदे चहचहा रहे हों।

सन्नाटों के पास कहने के लिए कुछ नहीं था, आवाज़ों के पास सुनने के लिए। उल्काएं एक-एक करके चटक रही थीं...आकाश पस्त हो जाने को बेताब

था। अब कहीं कुछ न था। कोई बाधा किसी आवेग के आड़े न आती थी। दुनिया रची जाती थी। पत्थरों से समंदर उमड़ता था। श्रद्धा मनु से मिल रही थी। सर्जना आकार ले रही थी। हीरे की कनियों पर मोती बहने लगे।

रुकी-ठहरी हवायें फिर चल पड़ीं। रात ने दिन के लिए रास्ता छोड़ दिया।

सुबह विद्यालय के अहाते में चहल-पहल थी। बड़े मैदान को एक लाल पट्टी से दो भागों में बांटा गया था। एक ओर श्रीनगर स्कूल के बच्चे थे दूसरी ओर लेह के मठ से आये नन्हे लामा। सामने विशाल मंच था जिस पर चहल-पहल होने में कुछ देर थी।

अनन्या सही समय पर पहुंच गई। तनिष्क उसे छोड़ने आया था, मगर भीतर किसी से मिला नहीं था। बाहर से ही हाथ हिलाकर अनन्या को लौटने का संकेत कर, वह वापस चला गया। अनन्या आज बहुत तरोताज़ा और खिली-खिली लग रही थी। बच्चे भी उसे देखकर आनंद और ख़ुशी से हाथ हिला रहे थे। मंच के पास कुछ बच्चियां प्लेटों में गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां लेकर अतिथि पर पुष्प वर्षा करने के लिए तैयार थीं।

अगले दिन श्रीनगर के सभी अख़बारों और टीवी चैनलों पर यही ख़बर थी। निशात बाग़ के पास आयोजित होनेवाले उस भव्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि न आ सके। यहां पर अमेरिका के एक विख्यात म्यूज़ियम में दिखाई जानेवाली डॉक्यूमेंट्री की कुछ शूटिंग होनेवाली थी। आतंकवाद को लेकर बनाई जा रही इस फ़िल्म में शहर के बच्चों को बड़ी संख्या में इकट्ठा किया गया था। लेकिन ऐन समय पर घोषणा हुई कि शूटिंग रद्द कर दी गई थी। इसका कारण क्या रहा, इस बारे में प्रामाणिक खबर किसी को भी नहीं थी परंतु बताया जा रहा था कि इस प्रोजेक्ट से जुड़े डबलिन के एक बड़े निर्माता के अरेस्ट हो जाने के कारण प्रोजेक्ट भी रुक गया था और शूटिंग को भी रद्द कर दिया गया था। कुछ अख़बार इस विघ्न में आतंकवाद का समर्थन करने के आरोपी देश का हाथ देख रहे थे। इस फ़िल्म का निर्माता भी इस्लामाबाद से जुड़ा था और इसकी शूटिंग पेशावर, लाहौर, श्रीनगर आदि स्थानों पर होनी प्रस्तावित थी। डबलिन के निर्माता का हाथ आतंकवादी विस्फ़ोटों में पाया गया था।

तनिष्क ने जब सुबह यह ख़बर पढ़ी तो उसने अनन्या को फ़ोन किया। कार्यक्रम स्थगित हो जाने के कारण बच्चे आज ही वापस लौट रहे थे। उनको शहर में घुमाने-फिराने का कार्यक्रम भी बहुत सीमित कर दिया गया था। उन्हें वापस ले जाने की तैयारी शुरू हो गई।

तनिष्क ने अनन्या से कहा कि वह अपनी छुट्टियां लेकर यहीं रुक जाये।

ख़ुद अनन्या भी अब यही चाहती थी। लेकिन उसका बच्चों के साथ वापस लद्दाख लौटना बेहद ज़रूरी था। कार्यक्रम रद्द हो जाने के बाद उन लोगों को सरकार से मुहैया करवाई गई सुरक्षा के चलते अनन्या को स्कूल प्रशासन ने छुट्टी नहीं दी। तनिष्क ख़ुद अनन्या से मिलने और उन लोगों को विदा करने के लिए वहीं आ गया।

पंद्रह-बीस मिनट का ही समय मिल पाया दोनों को। लेकिन इस थोड़े समय में ही जीवन के बड़े निर्णय ले लिए गये।

अनन्या ने नौकरी छोड़ देने का मन बना लिया था। वह तनिष्क से शादी कर लेने के प्रस्ताव पर भी सहमत हो गई थी। बल्कि ख़ुश थी इससे।

हाथ हिलाकर अनन्या की बस को विदा करते हुए तनिष्क बेहद ख़ुश था। तय हुआ था कि अनन्या एक बार वहां पहुंच जाने के बाद नौकरी से त्यागपत्र दे देगी और फिर हमेशा के लिए तनिष्क के पास आ जायेगी।

अभी तो तनिष्क और अनन्या ने लद्दाख में मां को भी अपने इस फ़ैसले की जानकारी नहीं दी थी परंतु वे दोनों ही जानते थे कि मां उनके इस फ़ैसले से ख़ुश ही होगी और हो न हो, वह स्वयं भी लद्दाख में अपनी नौकरी छोड़कर उन लोगों के साथ रहने वहीं आ जायेगी। अब जब अपने घर की दुकान श्रीनगर में खुल चुकी हो तो मां के वहां किसी दुकान के लिए फूलों के कारोबार का कोई औचित्य न था। वह यह काम यहां आकर भी कर सकती थी।

तनिष्क को अब उस शादी की तैयारी करनी थी जिसकी सुहागरात वह पहले ही मना चुका था। अनन्या अब तन-मन से उसकी थी। अनन्या के साथ रात बिताकर वह बेहद ख़ुश था। अनन्या को भी भरपूर ख़ुशी हुई। तनिष्क का परिवार बन जाने का सपना पूरा हुआ और ढेर सारे नन्हे लामा उसका परिवार बन जाने के साक्षी रहे। बच्चे कहां जानते थे कि उनकी अनन्या मैडम श्रीनगर जैसे ख़ूबसूरत शहर से क्या लेकर जा रही है! वह तो हाथ हिलाते तनिष्क को देखकर ख़ुशी से हाथ हिलाते रहे...बस चल पड़ी।

ग्यारह

'अगर ज़मीन पर लकीर खींचने में हज़ारों निर्दोष मासूम लोगों की जानें जाती हैं तो ऐसा करने की ज़रूरत क्या है?' यही थीम थी वाशिंगटन डीसी के एक म्यूज़ियम के लिए बननेवाली फ़िल्म की। लेकिन इस परियोजना को रद्द कर दिया गया। इसके लिए जो धन दिया जा रहा था वह न केवल रोक दिया गया, बल्कि उसकी वसूली भी शुरू हो गई। जिस यूनिट को यह प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया था, उसमें कुछ लोगों को आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त पाया गया। पिछले दिन यूरोप के एक देश में हुए सनसनीखेज़ सिलसिलेवार धमाकों के पीछे भी इन्हीं लोगों का हाथ पाया गया। पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान से डबलिन के इस स्टूडियो के तार जुड़े थे। स्टूडियो सीज़ कर दिया गया। बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारियां हुईं। जॉन अल्तमश नाम भी सुर्ख़ियों में उछला।

इस बात का खुलासा हुआ कि शूटिंग यूनिटों के बहाने विभिन्न देशों में मनोरम एकांतवाली लोकेशंस पर न केवल भारी संख्या में आतंकवादी कार्यों के लिए युवाओं को भर्ती किया गया, बल्कि उन्हें विधिवत् प्रशिक्षित भी किया गया। भव्य फ़िल्मों व लंबे सीरियलों पर पैसा पानी की तरह बहाने की आड़ में आतंक से जुड़ी मुहिमों को रसद और मदद पहुंचाई गई। आधी-आधी रात को मशहूर धुनों पर थिरककर अभ्यास कर रहे युवाओं के माध्यम से शहरी-ग्रामीण बस्तियों में ड्रग्स और दूसरी नशीली दवाएं पहुंचाई गईं। इन ख़ौफ़नाक कामों के लिए सिनेजगत में मौक़ा देने का लालच देकर लड़कों और लड़कियों को आकर्षित किया गया। कई देशों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय पुलिस दल को भी चौकन्ना होकर इन गतिविधियों पर ध्यान देने के लिए भारी धनराशि ख़र्च करनी पड़ी। कई अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियां संदेह के घेरे में आईं। इनमें न फ़िल्मी दुनिया को छोड़ा गया, न खेलों को और न साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को। सौंदर्य प्रतियोगिताओं तक की छानबीन और कड़ी कर दी गईं। गांजा, चरस, कोकीन, अफ़ीम और हेरोइन के जल्वे सूंघे गये।

जिन लोगों ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हवाई हमले के बाद प्रतिक्रियास्वरूप

कला-चित्रकला, संगीत या खेलों के प्रतिस्पर्द्धियों के रूप में हवाई यात्राएं कीं उनकी गतिविधियों को भी कड़ी सुरक्षा जांचों से गुज़रना पड़ा। ऐसा लगता था मानो कुछ लोगों के दिमाग़ी असंतुलन के कारण मानवता का समग्र इतिहास दो क़दम पीछे खिसक गया हो। चंद लोगों का फ़ितूर जांच के नये-नये दस्तूर ईज़ाद करता चला गया और अंतर्राष्ट्रीय पेचीदगियां बढ़ती चली गईं।

भारत में आतंकवाद को लेकर लोगों की उकताहट इस क़दर बढ़ी कि अगले आम चुनावों में कश्मीर जैसे अलग-थलग पड़े, विशेष प्रावधानों का दंश झेल रहे राज्य में भी नये दल, नये लोग सत्ता में आने लगे। वर्षों से बरगलाये गये कश्मीर के आवाम को मुख्य राष्ट्रीय धारा में लाने के लिए मनाया जाने लगा। ऐसी कोशिशें तेज़ हुईं कि लोग देशभर की बदलाव की बयार को यहां भी महसूस करने की मानसिकता में आयें। लोगों को समझाया गया कि चमन और गुलशन में कोई बुनियादी फ़र्क़ नहीं है। और कमल नीलोफ़र को ही कहते हैं। कमल गुलाबी हो या नीला, अमन से ही वाबस्ता है। उन्हें समझाया गया कि वे ख़ूनी पंजों को पहचानना सीखें, विदेशी हाथ की नीयत से वाक़िफ़ हों। धर्मों के पर्दे में घूमते अधर्मों से सचेत रहें।

ऐसी कोशिशों का असर कोई एक दिन में तो दिखाई देता नहीं है, मगर श्रीनगर और कश्मीर के दूसरे हिस्सों में रौनक़ें लौटने लगीं।

तनिष्क के आवास पर तो लोगों ने ग़ज़ब की रौनक़ देखी। गोरे-चिट्टे जापानी दूल्हा-दुल्हन को पठान सूट और सलमा-सितारे जड़े शरारे में देखा तो लोगों ने चार चम्मच बिरयानी ज़्यादा खाई। शादी का इंतज़ाम भी बेहद शाहदिली से किया गया था। बाज़ार के तमाम लोगों ने इस शादी में शिरकत की।

तनिष्क ने तो न्योता न्यूयॉर्क में भी कई लोगों को भेजा था मगर वहां से कोई नहीं आ सका। शेख़ साहब ने भी जवाहरात की एक अंगूठी पैग़ाम के साथ भेजी पर खुद इस मौक़े पर नमूदार न हो सके। उनकी किसी और अवसर पर आने की उम्मीद बरक़रार रही। लोगों ने मसरू एंपोरियम के मालिक मसरू ओस्से साहब को तो नहीं देखा था मगर उनकी परित्यक्ता बीवी को शादी में थिरकते ज़रूर देखा। शामियाने में बौद्ध लामाओं की भी कमी नहीं थी। सारा इंतज़ाम तनिष्क के दोस्तों ने किया था। रूबैद और हसन भी अपने साथ दोस्तों की पूरी जमात ले आये थे। खुद वो दोनों भी तैयारियों में एक टांग से नाचते-दौड़ते फिरे। आखिर उनके मालिक की शादी थी।

शराफ़त अली के साथ-साथ उनके दोस्त ख़ुर्शीद साहब भी चले आये दावत में, यहां तक तो ठीक था, मगर जब लौटते समय उन्होंने मरहूम मसरू खां की

तारीफ़ों के पुल बांधने शुरू किये तो शराफ़त अली हत्थे से ही उखड़ गये, बोले—अरे जनाब, आप दावत में शरीक़ होकर आ रहे हैं...कम-से-कम ये तो देख लेते कि दूल्हा-दुल्हन जापानी थे। ये मसरू खां-मसरू खां किसे कहे जा रहे हैं आप?

ख़ुर्शीद साहब झेंपकर रह गये।

—लेकिन इस शादी में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी तो थे, कौन नहीं था! उन्होंने झेंप मिटाते हुए कहा।

लेकिन ये शराफ़त अली साहब का ही क़माल था जो दूल्हा फ़र्राटे से उर्दू में बात कर पा रहा था। उन्हें अपने हुनर की एक सनद और मिल गयी थी।

इस शादी के बाद से मसरू हैंडीक्राफ़्ट एंपोरियम का रुतबा भी बढ़ गया और रौनक़ भी। अब वहां मालिक की कुर्सी पर अनन्या भी बैठी दिखाई देती थी और कभी-कभी अनन्या की मां भी। तनिष्क ने अब अपने लिए ज़्यादा समय इधर-उधर आने-जाने और व्यापार को और बढ़ाने के लिए रख लिया था। अनन्या की मां ने अपना पुराना काम यहां भी शुरू कर लिया था। वह क़िस्म-क़िस्म के फूल मंगवातीं और अपने हाथों से एक से एक नायाब गुलदस्ते तैयार करतीं। उनके फूल और मालाएं शहर में दूर-दूर तक जाते। जहां कोई बड़ा फंक्शन होता, अनन्या की मां के हाथ के बने हार और गुलदस्ते वहां जाते। पास-पड़ोस के बुजुर्गो ने उन्हें गुलबानो ही कहना शुरू कर दिया था। वैसे भी अनन्या की मां का नाम ज़रा लंबा था जो आसानी से किसी की ज़बान पर चढ़ता न था। अब कौन वहां उन्हें नरीशिमा-नरीशिमा कहे। वे गुलबानो नाम से ही पहचानी जातीं।

गुलबानो की बदौलत ही मसरू एंपोरियम के फूल ही नहीं और बहुत-से सामान, लद्दाख भी जाने लगे। वे लद्दाख में इतनी पुरानी थीं कि कोई-न-कोई उन्हें जानने-पहचाननेवाला लद्दाख से यहां श्रीनगर भी आता ही रहता।

एक बार तो लद्दाख की सैनिक छावनी में उनके हाथ का बना हुआ इक्यावन किलो फूलों का गुलदस्ता गया, जिसे पानी से तर करते हुए छावनी के एक बड़े अफ़सर की कार लेकर गई। पचास मालाएं उसके साथ अलग से गईं। कहते हैं पुराने ज़माने की एक मशहूर हीरोइन का वहां सम्मान किया था लोगों ने, उसी के स्वागत-सत्कार के लिए गये थे ये फूल और गुलदस्ते।

लद्दाख जैसी रूखी सैनिक छावनी में हीरोइनें भला क्या करने आतीं। मगर मुंबई की एक हीरोइन बुढ़ापे में जब बीमार हुई तो डॉक्टरों ने आबोहवा बदलने के लिए उसे पहाड़ पर जाने को कहा।

वह लद्दाख चली आई। गुज़रे ज़माने की अभिनेत्री को अब यहां कौन पहचानेगा यही सोचकर वह आई थी और अपने होटल से रोज़ सुबह सैर के लिए

पैदल ही सड़क पर निकलती थी। मोटर-साइकिल से जाते सेना के जवानों ने उसे सड़क पर घूमते हुए ही पहचान लिया। फ़ौरन गाड़ी मोड़ी, और दुआ-सलाम हुआ।

हीरोइन सकते में...लो यहां भी पहचान गये लोग।

शाम को उसी को छावनी में बुलाकर सैनिकों ने उसका इस्तक़बाल किया और इतना ही नहीं, दावत के बाद उसकी पुरानी पिक्चर 'मेरे महबूब' भी देखी गई। गद्‌गद् हो गई बीमार-बूढ़ी नायिका। अब तो बस क़िस्सों में थी। दुनिया से तो रुख़सत हो ली।

तनिष्क अब ज़्यादातर शहर से बाहर ही रहता था। उसने कारोबार को बढ़ाने के लिए ख़ूब भाग-दौड़ की।

एक दिन तो ग़ज़ब ही हो गया। बातों-बातों में लोगों को मालूम पड़ गया कि अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर गिरने के हादसे में जान जाने के कारण वहां से मुआवज़े के तौर पर तनिष्क के पिता मसरू साहब को बहुत पैसा मिला था।

बस, बात एक कान से दूसरे मुंह सफ़र करती-करती न जाने कैसे पुलिस तक पहुंच गई। पुलिस पीछे पड़ गई तनिष्क के। दो-चार दिन सब काग़ज़ात, पासपोर्ट और न जाने क्या-क्या दस्तावेज़ लेकर उसे पुलिस थाने के चक्कर काटने पड़े। पर बात जैसे आई, वैसे ही गई।

सब काग़ज़ात तनिष्क के पास थे, शक-शुबहा की कोई गुंजाइश न रही। और तो क्या होना-जाना था, थाने पर तैनात एस आई मीणाजी से तनिष्क की अच्छी दोस्ती हो गई। दो-चार रोज़ में उठना-बैठना शुरू हो गया। दोस्ताना-सा हो गया और इसी दोस्ताने में मीणाजी ने तनिष्क को कभी जयपुर आने की दावत दे डाली। विकास मीणा जयपुर के पास ही दौसा का रहनेवाला था और पिछले कुछ समय से यहां तैनात था।

विकास मीणा ने ही तनिष्क को बताया कि टूरिस्ट लोग अगर हिंदुस्तान में आते हैं तो जयपुर ज़रूर आते हैं। दिल्ली और आगरा के बाद सीधे जयपुर का ही रुख़ करते हैं। विकास ने कहा—अगर तुम जयपुर अपना सामान पहुंचवाने का इंतज़ाम कर सको तो वहां बड़ी संभावनाएं हैं।

तनिष्क को और क्या चाहिए था। उसने झटपट विकासजी से सब संपर्क-सूत्र ले लिए और जल्दी ही वहां जाने के मंसूबे भी मन-ही-मन बांधने शुरू कर दिये। कश्मीर से माल जयपुर जाने और जयपुर से श्रीनगर जाने-आने में विकासजी के लिए अपने विकास की भी थोड़ी-बहुत संभावना बनती थी।

तनिष्क ने राजस्थान में घूमने की बहुत-सी जगहों के बारे में सुना था। वह जान गया था कि राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, जैसलमेर जैसे शहर भी

अच्छे टूरिस्ट स्पॉट हैं। उसका इरादा कभी घूमने के ख़याल से भी ऐसी जगहों पर जाने के लिए होता था।

शादी के बाद से अनन्या को घुमाने-फिराने के लिए भी वह दिमाग़ दौड़ाता ही रहता था। वैसे भी मां के यहां होने और सब काम अच्छी तरह संभाल लेने से उन दोनों को बाहर जाने में कोई परेशानी नहीं थी। घर पर काम के लिए हसन भी था ही। मीणाजी के बताये हुए पतों पर तनिष्क ने हसन से ही पत्राचार कराना भी शुरू कर दिया था। ख़ुद विकासजी भी बीच-बीच में जब जयपुर जाते थे तब तनिष्क को किसी काम के लिए पूछ ही लेते थे।

एक दिन शराफ़त अली ने मौक़ा देखकर ख़ुद तनिष्क से पूछ डाला—तनिष्क साहब, शादी की इतनी जानदार दावत और इतनी शानदार बीवी के बाद तो आपके हनीमून की ख़बर का इंतज़ार था? क्या हुआ!

—अरे मौलवी साहब, अनन्या का और हमारा साथ तो ख़ूब हो चुका है, अब हनीमून कैसा। तनिष्क ने ज़रा शरमाते-झिझकते हुए कहा। शराफ़त अली भी उम्र में उससे बड़े ज़रूर थे मगर दोनों का दोस्ताना ऐसा था कि बातों में कोई परदादारी नहीं थी।

शराफ़त अली ने फ़ौरन तनिष्क को समझाया—मियां तुम दस हनीमून मना चुके होगे, कोई बात नहीं, मगर निक़ाह क़बूल करने के बाद का ये हनीमून देखना सबसे असरदार होगा, और सबसे जायज़ भी। जाओ और ज़रूर जाओ, अपनी बेगम को लेकर। ये ही तुम्हारा असली हनीमून होगा।

—इसमें क्या असली और क्या नक़ली। तनिष्क ने बेपरवाही से कहा।

—अब तक तुमने सौ बार शौक़िया तौर पर बदन से पानी छलकाया होगा, मगर अब जो करोगे वो आस-औलाद का छींटा होगा। इसमें परिवार की ख़ुशहाली की दुआ होगी। आस का छींटा! उछालो आसमान की तरफ़।...तनिष्क और अनन्या दो दिन बाद श्रीनगर हवाई अड्डे पर थे। बेगम को पहलू में लेकर दो घंटे बाद उन्हें जयपुर के लिए प्लेन लेना था।

तनिष्क कॉफ़ी के दो कप लेकर लॉबी में इंतज़ार करती अनन्या के पास आकर बैठा तो वह शीशे की खिड़की से उस पार विमानों की ओर देख रही थी। बैठते ही बोला—क्या सोच रही हो मैडम?

—कुछ नहीं।

—ऐसा कैसे हो सकता है, शौहर साथ में हो और तुम कुछ न सोचो! तनिष्क ने ज़रा शरारत से कहा।

अनन्या झेंप गई, लेकिन फिर तुरंत ही संयत होकर बोली—मैंने तो सोचा था

कि तुम मुझे अमेरिका में ले जाकर वो सारी जगहें दिखाओगे, जहां तुम बालक से युवक बने...तुम तो व्यापार-यात्रा पर ले आये मुझे। जयपुर तो तुम काम से ही जाना चाहते थे न। ये तो बस शहद और चांद निकला।

तनिष्क चौंका—अरे, इतनी-सी बात? चलो तो जयपुर तुम बिज़नेस ट्रिप पर ही चलो। हनीमून हम अमेरिका में ही मनायेंगे...तुम्हें न्यूयॉर्क ले चलूंगा। देखना उस शहर की रंगत...उसी ने मुझे बनाया है...वह वास्तव में दुनिया का सबसे क्रियेटिव शहर है, भव्य और आलीशान भी। वहां जाकर मम्मी भी देख लेंगी कि मसरू अंकल कहां काम करते थे। उनकी याद में उस दीवार पर लिखे उनके नाम पर फूल भी चढ़ा लेंगी जहां दुनियाभर के लाखों लोग ट्विन-टॉवर्स हादसे में गुज़रे लोगों को याद करने हमेशा आते रहते हैं। अब तो ख़ुश। तनिष्क ने कॉफ़ी के कप से मुंह लगाते हुए कहा।

—तो हमारे हनीमून पर मम्मी भी चलेंगी? अनन्या ने बनावटी गुस्से से कहा।

—अरे बाबा, तुमसे तो जीतना मुश्किल है, टीचर हो न तुम, हम तो हमेशा तुम्हारे शागिर्द ही रहेंगे। तनिष्क ने कहा। अनन्या कॉफ़ी पीते-पीते हंस पड़ी।

तनिष्क बोला—फिर तो ऐसा करो, हनीमून पर मम्मी नहीं चाहिए, तो इसे हनीमून रख लेते हैं, न्यूयॉर्क बाद में घूमने चलेंगे।

—हनीमून जयपुर में, यहां क्या ख़ास होगा? अनन्या ने कहा।

—अरे देखना, ख़ास क्या होता है, गिनना...रात को पांच हनीमून एक साथ न मनाये तो कहना...तनिष्क ने आंखों में शरारत भरके कहा।

—कहीं धंधा चौपट न हो जाये जनाब का...अनन्या ने कहा।

फिर कुछ रुककर हंसते हुए बोली—सुबह सोते ही रह जाओगे, सब काम रखे रह जायेंगे तुम्हारे।

लोग सामान उठा-उठाकर गेट की तरफ़ प्रस्थान करने लगे थे। तनिष्क ने भी बांह पकड़कर अनन्या को उठाया और दोनों विमान में बैठने के लिए चल दिये।

जयपुर एयरपोर्ट से निकलकर तनिष्क और अनन्या सीधे होटल ग्रांड उनियारा आये जहां विकासजी ने उनके लिए कमरा बुक करवा दिया था। यह एक ख़ामोश, लेकिन साफ़-सुथरी-सी जगह थी। इसके पार्श्व में एक मनोरम पहाड़ी थी जिस पर एक क़िलेनुमा शक्ल में जयपुर के राजपरिवार का पुराना महल था।

लोग कहते थे कि जब राजमाता गायत्री देवी जीवित थीं तब यहां काफ़ी हलचल रहती थी। लेकिन उनके गुज़र जाने के बाद राजपरिवार शहर के बीचों-बीच चंद्रमहल में ही रहने लगा और यह जगह सूनी हो गई। यहां एक शिव-मंदिर

ज़रूर नया बना था जो वर्ष में एक बार जनता के लिए खुलता था। इसी के पास पहाड़ी के एक सिरे पर सफ़ेद संगमरमर से बना एक भव्य मंदिर था जिसे देखने देश-विदेश से हज़ारों लोग आते-जाते रहते थे।

दुनियाभर में गुलाबी नगर के नाम से विख्यात इस शहर की आबोहवा में सियासत और सामंतशाही एक साथ घुली-मिली थी। यहां राजनीति ने कई गुल खिलाये थे। लोगों की सामंतशाही सोच भी इस शहर को ख़ूब फली-फूली थी। कहते हैं, यहां एक राजा ने तो तवायफ़ पर आधा शहर लुटा दिया था।

तनिष्क और अनन्या जब घूमने निकले तो उनके साथ विकासजी ने कोई गाइड करवा दिया था। उसी ने उन्हें बताया कि इस भव्य मंदिर के बनने के पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है। इसे किसी धर्म की आस्था या राजा की मन्नत ने नहीं बनवाया, बल्कि शहर के एक अरबपति उद्योगपति की पत्नी का हठ इसके मूल में था। पत्नी की सहेली ने एक मंदिर का निर्माण किया था। वह इन्हें भी अपना बनवाया हुआ मंदिर दिखाने ले गई। अरबपति महिला ने मंदिर में जाकर चढ़ाने के लिए कुछ प्रसाद साथ रख लिया। किंतु आधुनिक सोच की उनकी सहेली ने कहा कि उनके बनवाये मंदिर में उन्होंने केवल दर्शन करने का प्रावधान रखा है, प्रसाद चढ़ाने का नहीं।

महिला को प्रसाद नहीं चढ़ाने दिया गया। वे कहती रहीं कि वे प्रसाद ले ही आई हैं तो इसे चढ़ा देने में क्या हर्ज़ है, वापस ले जाना ठीक नहीं। पर उनकी सखी न मानी। उन्हें प्रसाद वापस ही ले जाना पड़ा।

इस तरह एक अतिसंपन्न महिला के विराट अहम को भारी ठेस लगी और उन्होंने पहाड़ी के पास ख़ाली पड़ी भूमि को मुंहमांगे दामों पर ख़रीदकर यह नया मंदिर बनवाया, जो भव्यता में उनकी सहेली के मंदिर से कई गुना आगे था। प्रसाद यहां भी नहीं चढ़ाया जाता था किंतु भव्य मंदिर की देखभाल हेतु दान की राशि ज़रूर यहां स्वीकार की जाती थी।

शहर में घूमते हुए तनिष्क और अनन्या को यह भी बताया गया कि यहां कभी एक प्रसिद्ध अभिनेत्री-स्टार ने भी, बरसों पहले किसी मक़सद से विशाल भूमि-खंड खरीदा था किंतु स्थानीय राजनीति के चलते उनके इस भूमि आवंटन को रद्द कर देना पड़ा था। उन्होंने फिर कभी यहां का रुख़ नहीं किया।

विकासजी के बताये संपर्कों पर बातचीत करने और व्यापारिक नज़र से शहर की हैंडीक्राफ़्ट संभावनाओं को परख लेने के बाद देर शाम को तनिष्क और अनन्या वापस लौट आये। अपने होटल में आकर चैन मिला। खाना खाने की भूख दोनों में से किसी को भी नहीं थी। वे दोनों घूमने के इरादे से होटल के पिछवाड़े

की ओर पैदल ही निकल गये। रेत का एक बड़ा-सा मैदान था और उसके पार राजपरिवार के पुराने महल का अहाता दिखाई दे रहा था। महल के एक ओर विशाल बुर्ज़ बना हुआ था। किंतु अब रात हो जाने और अंधेरा हो जाने के कारण किसी की आवाजाही नहीं थी। तनिष्क को रेत में चलना अच्छा लग रहा था। मंदिर के पिछवाड़े की ओर से भी एक पतली पगडंडी इस तरफ़ आ रही थी। इस पगडंडी के एक ओर अत्यंत दीन-हीन निर्धन लोग इस तरफ़ बैठे थे। ऐसा लगता था मानो मंदिर की चहल-पहल के बीच सामने की ओर भीख मांगने के मक़सद से बैठे भिखारी, निर्बल व अपंग लोग मंदिर का कोलाहल ख़त्म हो जाने के बाद यहां आ बैठे हों और भीख में मिले भोजन को बांट-फैलाकर पेट भरने के जुगाड़ में लगे हों।

इस दृश्य से नज़र व क़दम बचाते हुए तनिष्क और अनन्या रेत में आगे की ओर निकल गये। सन्नाटा भयावह लग रहा था। सुनसान बस्ती में दूर-दूर तक इंसान के दर्शन नहीं हो रहे थे। दूर दिख रहे बुर्ज़ की रहस्य भरी ख़ामोशी उन दोनों को आकर्षित कर रही थी। दोनों चले जा रहे थे। मानो ऐतिहासिक महल के समीप बुर्ज़ को छूकर लौटना चाहते हों। शहर की रोशनी भी इस हिस्से में आकर धीरे-धीरे मंद होती हुई जैसे पूरी तरह गुल हो चुकी थी।

आसमान में हल्के दो-चार तारे, और कुछ दूरी पर उदास-सा टंगा चांद भी दिखाई दे रहा था। रोशनियों के मेलों और चकाचौंध को छोड़ आये तनिष्क और अनन्या को ये रंग भी भा रहा था और वे उजाड़, वीरान, ख़ौफ़नाक सन्नाटे में भी बढ़े जा रहे थे। मानो वीरानों से खेलना उन्हें ख़ूब आता हो।

तनिष्क ने धीरे-से अनन्या का हाथ पकड़ लिया था जिससे अनन्या के मन का भय ज़रा कम हो गया था। वैसे अनन्या भी बेहद कठोर परिस्थितियों में पली लड़की थी, उसे किसी चीज़ या बात का भय नहीं सताता था। वर्षों से वह लेह की एकांत पहाड़ी पर बने मठ में लामा बच्चों की देखभाल कर रही थी इसलिए सन्नाटों की भी वाक़िफ़ थी और जीवन के बेरंग लम्हों की अभ्यस्त भी। हां, तनिष्क से मिलने के बाद से ज़िंदगी के अनुराग फिर से सींचे जाने लगे थे तो ज़रा मुलायम हो गया था उसका ज़मीर।

पर अब जब तनिष्क आगे बढ़ा जा रहा था तो उसका हाथ थामे रेत में पांव गड़ाती वह भी खिंची चली जा रही थी। रेत बार-बार जूतों में भर जाने के कारण तनिष्क ने जूतों के मोटे सफ़ेद तस्मे खोलकर ढीले कर लिए थे ताकि बार-बार उन्हें आसानी से पैर से निकालकर मिट्टी झाड़ सके। कभी-कभी वह जूतों को उतारकर हाथ में भी ले लेता था जिससे सफ़ेद लंबे-लंबे फीते झूलते हुए दिखाई देते थे और

कभी तनिष्क के घुटने, तो कभी अनन्या के टख़ने से टकराते भी थे। रेत की ख़ूबी ये थी कि ये कपड़ों या जूतों पर लगकर भी इन्हें गंदा या मैला नहीं करती थी। सफ़ेद झक जूते वैसे ही एकदम शफ़्फ़ाक चमकते रहते और रेत उन पर से झड़कर गिर जाती। रेत कुछ ठंडी भी लगती थी। तनिष्क बीच-बीच में अनन्या की हथेली को हल्के से दबा भी देता था जिससे अनन्या के डरते ज़ेहन के दालान में मानो कोई छोटा-सा दिया जल जाता था। उसके उजास में अनन्या तनिष्क से कुछ और भी सट जाती थी। तनिष्क दूसरे हाथ से कभी-कभी अनन्या के पेट को घेर भी लेता था। अनन्या जब उसके नज़दीक आती तो वह गर्दन झुकाकर उसका मुंह चूम लेता था। और तब अनन्या को लगता कि ये अंधेरे कम हैं, इन्हें और भी घना होना चाहिए। मंदिर के पिछवाड़े का कोलाहल अब पूरी तरह पीछे छूट चुका था। खाने के लिए बंदरबांट करते अपंग, भिखारी भी अब शायद उनींदे-से होने लगे हों, क्योंकि उनका कोई स्वर यहां तक नहीं आ रहा था।

चाल और रफ़्तार में कोई कमी न देखकर अनन्या ने कुछ फुसफुसाहट भरी आवाज़ में पूछा—चढ़ने का इरादा है क्या?

तनिष्क ने चमकती आंखों से उसकी ओर देखा। वह फिर बोली—उस सामनेवाले बुर्ज़ पर चढ़ाई करके ही रुकोगे क्या? कहां जा रहे हो? तनिष्क कोई जवाब देता उसके पहले ही बग़ल की एक झाड़ी से ज़ोर से हंसने की आवाज़ आई।

अनन्या डरकर तनिष्क के सीने से चिपक गई। लेकिन तनिष्क ने तेज़ खोजी नज़रों से झाड़ी की ओर देखा। वहां से कोई जानवरनुमा छायाकृति धीरे-धीरे चलती हुई झाड़ी के दूसरी ओर अंधेरे में विलीन हो गई।

—शायद कोई जंगली जानवर है। तनिष्क ने कहा।

—लेकिन...लेकिन...ये आवाज़ हंसने की...।

—हां, तुम्हें भ्रम हुआ होगा, आवाज़ इसी जानवर की है। शायद कोई कुत्ते की आवाज़ होगी। तनिष्क ने कहा।

—क्या कहते हो तनिष्क, ये कुत्ते की आवाज़ नहीं थी। अनन्या उसके सीने से अलग होते हुए बोली।

—अरे बाबा, वह जो भी था, देखो निकलकर भाग गया है अंधेरे में।

—पर वह था क्या?

—शायद कोई सुअर होगा...

पर तभी आवाज़ फिर आई। तनिष्क भी ठिठक गया। इस बार आवाज़ किसी के रोने जैसी थी। अनन्या ज़ोर से तनिष्क के पेट पर हाथों का घेरा डालकर चिपक गई। बोली—ये क्या कर रहे हो, कहां ले आये, चलो वापस। वह चीखी।

तनिष्क ठहरकर इधर-उधर देखने लगा। उसने अनन्या को ज़ोर से भींच रखा था। आवाज़ फिर आई, ये उसने भी साफ़ सुना था। आवाज़ किसी औरत के रोने और हंसने के बीच की-सी आवाज़ थी।

—चलो वापस...अनन्या ने भीगे-से स्वर में कहा।

—शायद कोई पागल है...पर है कहां? तनिष्क ने बुदबुदाकर कहा।

—कहीं भी हो, तुम चलो यहां से। अनन्या बुरी तरह डर गई थी। अनन्या ने तनिष्क से अलग होकर क़दम वापस पीछे की ओर मोड़े।

—शायद इस बुर्ज़ के भीतर है कोई?

—तनिष्क! ज़ोर से चीख़ी अनन्या। तुम चलो यहां से। आये ही क्यों यहां पर...मुझे डर लग रहा है...।

—तुम मोबाइल देना ज़रा...तनिष्क ने अनन्या की ओर हाथ बढ़ाया। शायद मोबाइल से वह टॉर्च जलाकर देखना चाहता था। तनिष्क अपना मोबाइल होटल में चार्ज़ पर लगाकर छोड़ आया था।

—नहीं, तुम चलो। अनन्या ने विनती-सी की।

—एक मिनट...इस बुर्ज़ की सीढ़ियों पर शायद...।

तनिष्क की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि आवाज़ ज़ोर से फिर आई। और उसने देखा कि आवाज़ बुर्ज़ की सीढ़ियों से नहीं, बल्कि बुर्ज़ के एक ओर से एक बड़ के पेड़ से आई। ज़ोर से हंसने की आवाज़ थी।

और तभी तनिष्क के रोंगटे खड़े हो गये। बड़ के पेड़ की एक नीची-सी डाल पर एक पागल औरत दोनों टांगें नीचे लटकाकर बैठी थी और इस कातर दृष्टि से तनिष्क की ओर देख रही थी मानो उससे उतारने की विनती करती हुई गुहार लगा रही हो। वह अजीब-सी आवाज़ में रो रही थी। कभी-कभी बीच में हंसने की आवाज़ से लगता था कि वह निश्चित ही पागल है।

अनन्या पलटकर कुछ दूरी पर ठिठक गई। अब तनिष्क उस औरत की ओर बढ़ रहा था। अनन्या चीखी—आ जाओ तनिष्क।

—क़माल करती हो, डरो मत। देखो, ये शायद पेड़ पर चढ़ गई है और अब इससे उतरा नहीं जा रहा।

—वह पागल है तनिष्क! अनन्या फिर बोली।

—पर इंसान तो है...।

तनिष्क धीरे-धीरे बढ़ता हुआ पेड़ के नज़दीक जाने लगा। मोबाइल की टॉर्च की रोशनी होते ही तनिष्क एक बार फिर ठिठका। अनन्या भी चीख़ पड़ी। लड़की बिलकुल नंगी थी और उसके उलझे फैले बाल किसी झाड़ी की तरह उसके कंधों

पर आ रहे थे। शरीर पर जगह-जगह खरोंच और चोटों के निशान थे।

—तनिष्क प्लीज़...अनन्या लगभग रोने को हो आई।

तनिष्क ने धीरे-से अपनी जेब से बड़ा-सा अपना रूमाल निकाला और उसे झटकारकर पागल लड़की की जांघों पर फैला दिया। लड़की का रोना या हंसना तो रुक गया था पर उसकी लाल आंखों में डबडबाई नज़रों से तनिष्क आंख न मिला सका। अनन्या भी सांस रोके सब देखती रही।

तनिष्क ने अपने दोनों हाथ लड़की की बग़लों में बढ़ाते हुए उसकी निर्वस्त्र छातियों की ओर से नज़रें हटा लीं। मानो वह किसी बच्चे की तरह गोद में लेकर लड़की को पेड़ से उतारना चाहता हो।

लड़की पहले तो कुछ सकुचाई फिर उसने अपना बोझ तनिष्क के फैले हाथों में डाल दिया। वह तनिष्क के हाथों में झूल गई। तनिष्क ने बिजली की-सी फ़ुर्ती से लड़की को उतारकर ज़मीन पर खड़ा कर दिया।

लेकिन लड़की ज़ोर से ठहाका मारकर हंस पड़ी। उसने ऐसा ठहाका लगाया कि तनिष्क की दुनिया हिल गई। लड़की किसी बच्चे की तरह खिलखिलाती हुई तेज़ी से बुर्ज के अंदर की ओर भाग गई। सीढ़ियों के पास जाते-जाते उसकी टांगों से तनिष्क का रूमाल भी गिर गया।

लेकिन तनिष्क के रोंगटे फिर खड़े हो गये, वह बेहोश होते-होते बचा। लड़की की बग़ल में उसके हाथ लगते ही लड़की जिस तरह से हंसी थी, वह अपने आपको संभाल न सका और हैरानी से बुर्ज़ की सीढ़ियों की ओर लंबे-लंबे डग भरता हुआ जाने लगा। उसे दुनिया प्रलय का तांडव करने सरीखी दिखाई दी।

—तनिष्कऽऽ! पूरी ताक़त से अनन्या चीख़ी। अब उसमें कोई भय नहीं, जैसे किसी दैवी शक्ति का वास था।

—आओ वापस...ऽऽऽ। उसने आदेश-सा दिया।

तनिष्क धीरे-से पीछे पलटा और थोड़ी ही देर बाद, तनिष्क व अनन्या होटल की ओर लौट रहे थे। अब अनन्या उससे दूर-दूर चल रही थी। वह भी जैसे अपने आपे में नहीं था।

तनिष्क को ऐसा लग रहा था मानो बाइबिल में लिखी इबारत की भांति दुनिया को बुर्ज़ की सीढ़ियों से फिर से बनने की प्रतीक्षा हो। वह ज़्यादा पढ़ा-लिखा कहां था, उसने तो अंधकार और प्रकाश का ये आसमानी खेल अपनी दुकान में लगे बाइबिल के एक कोट में पढ़ा था।

अब अनन्या आगे-आगे थी और तनिष्क पीछे-पीछे।

बारह

—चलो, पहले मैं मम्मी का एक फ़ोटो खींच देती हूं, फिर मम्मी हम दोनों का फ़ोटो खींच देगी। अनन्या ने चहकते हुए कहा।

अनन्या, तनिष्क और अनन्या की मम्मी अमेरिका के वर्जीनिया स्टेट के मशहूर नेशनल पार्क के मुख्य गेट पर खड़े थे, जहां से टिकट लेकर वे एक रात पार्क में ही बिताने के लिए भीतर जानेवाले थे। और भी पर्यटक आते जा रहे थे। एक के बाद एक गाड़ियां आतीं और उनमें से अलग-अलग देशों से आये सैलानी विभिन्न दृश्यों को आंखों से भी बटोरते और कैमरों से भी। कुछ चहलक़दमी के लिए उतरते।

उन तीनों को वहां खड़े देखकर एक महिला अपने आप ही वहां चली आई। उसने शायद अनन्या की बात सुन ली थी, वह मुस्कराती हुई बोली—चलिए आप तीनों ही एक साथ खड़े हो जाइये, मैं आप तीनों का फ़ोटो एक साथ खींच दूंगी। उसने तनिष्क के हाथ से कैमरा लेते हुए कहा।

तनिष्क की बग़ल में खड़ी अनन्या के पास ही उसकी मम्मी भी आकर खड़ी हो गईं। महिला की बात सुनकर उनकी बांछें खिल गई थीं। महिला फ़ोटो खींचकर कैमरा लौटाते हुए बोली—मैं माता-पिता की क़ीमत जानती हूं...आई नो द इंपॉर्टेंस ऑफ़ पेरेंट्स...वे ज़्यादा समय तक हमारे साथ नहीं रह पाते।

अनन्या की मम्मी का अंतर महिला की बात से भीग गया।

जब तनिष्क ने अनन्या को अमरीका घुमाने लाने का कार्यक्रम बनाया था तो मम्मी से भी साथ चलने का आग्रह कर लिया था। तनिष्क ने कहा—वैसे भी मम्मी अकेली तो कभी यह जगह देखने कहां आ पायेंगी, हमारे साथ घूम लेंगी। उनसे मसरू अंकल के संबंध चाहे कैसे भी रहे हों, कम-से-कम अपनी आंखों से देख तो लेंगी कि उनसे दूर होने के बाद उनके पति ने कहां समय बिताया। किसके साथ।

जब से अनन्या की मम्मी को तनिष्क से यह जानकारी मिली थी कि मसरू अंकल ने अमेरिका आने के बाद कभी किसी महिला से संबंध नहीं रखा, न ही दोबारा

शादी की तो उनकी नज़रों में मसरू ओस्से के लिए मान-सम्मान कुछ बढ़ ही गया था। और तनिष्क को भी वह पुत्रवत् स्नेह ही देने लगी थीं जो जीवनभर न केवल उनके पति के साथ रहा, बल्कि अब उनका दामाद था। दामाद भी ऐसा, जिसने उनकी बेटी के मन से बैराग की भावना को हमेशा के लिए दूर भगाकर उसके मन में प्रीत का अनुराग जगा दिया था और उसे पक्की गृहस्थिन बना दिया था।

तनिष्क ने उन दोनों को न्यूयॉर्क शहर दिखाया। वह घर भी उन लोगों ने देखा जहां मसरू अंकल के साथ पहली बार जापान छोड़ आने के बाद तनिष्क रहा था। अनन्या और उसकी मम्मी तनिष्क की बातें सुनकर ख़यालों में खो जाते थे। उन्हें इस बात पर बड़ा अचंभा होता था कि आख़िर तनिष्क और मसरू ओस्से के बीच कौन-सा रिश्ता था जो वे दोनों एक साथ अपना देश छोड़कर यहां चले आये और फिर उनके जीवनभर दोनों साथ रहे। तनिष्क ने उन्हें छप्पनवीं गली का वह सैलून भी दिखाया जिसमें बहुत समय तक काम करके तनिष्क ने अपनी जीविका कमाई थी।

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर भी वे लोग देखने गये। अनन्या की मम्मी ने भी पूल की दीवार पर मसरू के नाम पर फूल चढ़ाया और फिर थोड़ी देर तक सिर पर स्कार्फ़ डालकर आंखें बंद करके उसके सामने खड़ी रहीं। उन चंद लम्हों के लिए वे केवल नरीशिमा बन गईं और मन-ही-मन अपने उस पति को याद करती रहीं जिससे कभी उन्होंने प्यार किया था। न जाने क्यों, वह किन घड़ियों में उनसे दूर हो बैठीं, अब उन्हें इस बात का पश्चाताप भी होता था।

तनिष्क ने शेख़ साहब के बारे में भी पूछताछ करके पता किया किंतु उसे बताया गया कि वह अब यहां नहीं रहते। वह देश छोड़कर वापस कहीं और चले गये थे। तनिष्क को एक ख़ालीपन-सा ज़रूर महसूस हुआ क्योंकि वह अब शेख़ साहब को बताना चाहता था कि उसने कश्मीर में उनके कहने पर ही अपना व्यवसाय खड़ा कर लिया था। उसे महसूस हुआ कि वह कश्मीर में शेख़ साहब के उन दोस्त से भी बाद में कभी नहीं मिला है जिनका संपर्कसूत्र लेकर वह यहां से गया था। बाद में यहां अपने एक साथी से तनिष्क को दबी ज़बान में यह जानकारी भी मिल गई कि शेख़ साहब भी आतंकवादी गतिविधियों की धरपकड़ होने पर भूमिगत हो गये थे। अंडरग्राउंड होने के दौरान उनकी खोज-ख़बर यहां किसी को नहीं मिली थी।

जिन दिनों अलकायदा संगठन पर अमरीकी संदेह, हमले और ओसामा बिन लादेन की हत्या की ख़बरें आ रही थीं, उन दिनों से ही शेख़ साहब को वहां किसी ने नहीं देखा था। उनके ठिकानों पर भी या तो ताले लगे हुए थे या फिर वहां

अजनबी लोग ही तनिष्क को मिले।

तनिष्क शेख़ साहब को तलाश करने के दौरान अनन्या और उसकी मम्मी को साथ लेकर भी नहीं गया था कि कहीं शेख़ साहब मिलें, तो उसके परिवार के सामने उनके मुंह से कोई ऐसी-वैसी बात न निकल जाये जिससे कोई संदेह हो। अब ये ही तो तनिष्क का परिवार था। पर शेख़ साहब जैसे भी हों, तनिष्क एक बार उनसे मिलना ज़रूर चाहता था।

तनिष्क को एक हल्की कसक इस बात की ज़रूर रही कि शेख़ साहब मिलते तो वह उन्हें उर्दू में बात करके ख़ुश कर देता। उसने उर्दू अब न केवल अच्छी तरह से सीख ही ली थी, बल्कि वह धड़ल्ले से बोलने भी लगा था।

सैलून में भी अब लगभग सारा स्टाफ़ बदल चुका था और उसे वहां सभी अजनबी दिखाई दे रहे थे।

वर्जीनिया का यह नेशनल पार्क तनिष्क को बहुत पसंद था। वर्षभर में मौसम के साथ-साथ यहां पेड़ों का रंग बदलना उसे अद्भुत लगता था और चमत्कृत करता था। पेड़ तो हरियाली के प्रतीक थे। पर यही हरियाली मौसम के बदलने के साथ अपना मिज़ाज बदलती तो तनिष्क को कौतूहल होता था। पेड़ पीले पड़ते-पड़ते एकाएक नारंगी होते और फिर सुर्ख़ लाल हो जाते। सर्दी के बढ़ने के साथ-साथ यह लाल रंग भूरे रंग में बदलता और फिर से पत्ते झड़ने लग जाते। पेड़ नग्न हो जाते। उनका लिबास पूरी तरह उतर जाता और जब सर्दी में तापमान गिरने के साथ-साथ बर्फ़ गिरती तो सारा आलम सफ़ेद हो जाता। पेड़ों के पत्र-विहीन तने और शाख़ाएं बर्फ़ में दबे मासूम प्राणियों-से खड़े रह जाते। पतझड़ रास्तों को भर देता और जिन शोख़-चटख़ पत्तों पर कभी मौसम की बहार आई रहती वही अब ख़ामोश होकर ज़मींदोज़ हो जाते थे। बर्फ़ में तो उन पर क़दमों के पड़ने की खड़खड़ भी सुनाई नहीं देती थी। हरियाली और रास्ते सब बेजान वीरानों में तब्दील हो जाते थे। इस तरह क़ुदरत भी इन जीवंत पेड़ों के कसमसाने के साथ-साथ कई रंग बदलती है, ये देखना तनिष्क को अच्छा लगता था।

जब घूम-फिर कश्मीर वापसी के लिए तनिष्क अनन्या और उसकी मम्मी के साथ जेएफके एयरपोर्ट आया तो जितना ख़ुश था उतना ही भीतर से कहीं अनमना-सा भी। कहते हैं कि इंसान जिस शहर में अपनी किशोरावस्था बिताता है उससे वह मन से जीवनभर के लिए जुड़ जाता है। तनिष्क तो यहां बच्चे से किशोर हुआ था, और किशोर से ही नवयुवक भी। इस शहर के साथ उसकी उम्र के कमसिन पड़ावों की यादें वाबस्ता थीं। वह तेज़ी से भागती ट्रेन व टैक्सी से अपनी निगाह की बदौलत इस शहर की हवाओं को छू लेने को उतावला रहता था।

एयरपोर्ट पर आकर चेक इन कर देने के साथ ही उसके मन की कसक अब फिर से धूमिल पड़ती जा रही थी। सामान विमान में भीतर जा चुका था। सुरक्षा जांच भी हो चुकी थी। मम्मी हाथ में एक छोटे बैग में खाने-पीने का सामान लिए लॉबी में बैठी थीं। अनन्या और तनिष्क एयरपोर्ट के लंबे गलियारे में टहल रहे थे। दोनों ही अपनी-अपनी परंपरागत कश्मीरी वेशभूषा में थे।

तनिष्क ने देखा, अनन्या चलती-चलती किसी दुकान में घुस गई। वैसे भी विमान उड़ने में अभी एक घंटे का समय था और उनकी सभी औपचारिकताएं पूरी हो चुकी थीं। तनिष्क बाहर खड़ा-खड़ा ही अनन्या के वापस लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। शीशे के पार से अनन्या दिखाई दे रही थी। वह किसी किताबों की दुकान में घुसकर रास्ते में पढ़ने के लिए कोई नॉवल ढूंढ रही थी। तनिष्क की किताबों में कोई दिलचस्पी नहीं थी, मगर वह मन-ही-मन ये सोचकर ख़ुश हो रहा था कि चलो, ये अगर रास्ते में पढ़ने के लिए कुछ ले लेगी, तो उसमें लगी रहेगी और तनिष्क को आराम से सोने के लिए मिल जायेगा।

तभी चहकती हुई अनन्या शीशे का दरवाज़ा खोलकर बाहर निकली। उसके हाथ में एक किताब थी। शायद कोई उपन्यास था। तनिष्क ने लापरवाही से उसका एक हाथ पकड़ा और दूसरे से उसके हाथ की किताब लेकर उलटने-पलटने लगा। नॉवल था—'अक़ाब'।

—इसका क्या मतलब होता है? तनिष्क ने भोलेपन से पूछा।

—क्यों, रात देर-देर तक मौलवी साहब की बज़्म में समय काटकर लौटते हैं जनाब, मुझे बताया जाता है कि उर्दू-हिंदी की तालीम ले रहे हैं...फिर इतना भी नहीं समझते? अक़ाब माने ईगल।

—ओह, तो हम इंसानों के अब ये दिन आ गये कि हम बग़लगीर होकर बैठे रहेंगे और मोहतरमा परिंदों के ख़यालों में खोई रहेंगी? तनिष्क मासूमियत से बोला।

—क्या आपको मालूम नहीं कि परिंदे कितने भी ऊंचे आसमान में उड़ें, उनकी परवाज़ दाना-पानी के लिए उन्हें ज़मीन पर लाती ही है।

—तो फिर इंसान और परिंदों में फ़र्क़ ही क्या रहा? तनिष्क ने कहा।

—फ़र्क़ क्यों होगा, दोनों ही तो क़ुदरत की नेमत हैं।

—यही तो मैं पूछ रहा हूं मैडम, कि इंसानों के बीच बैठे-बैठे एकाएक परिंदों का ख़याल कैसे आया आपको?

—देखूँ तो सही क्या-क्या सीखा है इंसान ने परिंदों से और क्या-क्या सिखाया है उसे? सच पूछो तो कवर पेज पर अक़ाब की इन आंखों ने ही मुझे बेबस किया।

—मुझे तो लगता है कि परिंदों को आसमान में उड़ते देखकर ही हमारे ये

विमान बने होंगे। परिंदों को आसमान से उतरकर किसी मासूम चिड़िया पर झपटते देखकर ही ये आतंकवादी गतिविधियां पनपी होंगी। धरती पर पड़े मृत जानवर आकाश के इन भूखे पक्षियों को ज़मीन पर खींच लाते हैं। परिंदे सिर्फ़ पेट भरने के लिए ही धरती पर नहीं उतरते, तुमने देखा नहीं था वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के यादगार म्यूज़ियम में, किस तरह से आकाश से उतरते विमान धरती पर कामकाज में लगे निर्दोष लोगों को बुरी तरह नेस्तनाबूद कर गये?

—ओह, बात को कहां से कहां ले गये तुम तनिष्क। वैसे भी, विमान ख़ुद चलकर आग बरसाने और विध्वंस फैलाने नहीं आये थे, इंसान की बददिमाग़ी और ख़ूनी ख़्वाहिशें ही ठेलकर उन्हें वहां लाई थीं। विमान तो ये सारे भी हैं, जिनमें सवार होकर हम-तुम अपने घर पहुंचनेवाले हैं। आकाश में विचरण करना इंसान की आदम चाह है।

—और शायद चाह पर विराम लगाना वक़्त की आदत। तनिष्क बोला।

—ये भी ज़रूरी है...अनन्या ने मानो हार मानना नहीं सीखा था।

—क्या, आदमी की महत्त्वाकांक्षाओं का दमन? तनिष्क ने कहा।

—हां, बिलकुल। यदि वक़्त ऐसा न करे तो एक ही आदमी सारी दुनिया पर अकेले जीने के अधिकार ख़रीद ले, आदमी की लालसा का कोई अंत थोड़े ही है। धरती सबके लिए जीने को पूरी है पर यही एक आदमी की महत्त्वाकांक्षा के लिए शायद कम पड़ जाये? लोग ज़मीन पर कितनी भी सीमा-रेखाएं खींच लें, किंतु मानवता की ज़रूरत तो इन सब सीमा-खंडों में ही रहेगी।

तनिष्क चलते-चलते ठहर गया। अनन्या एकाएक अपने हाथ में पकड़ी किताब और अपना पर्स तनिष्क को पकड़ाकर तेज़ी से जाकर सामने रेस्टरूम का दरवाज़ा खोलकर उसमें दाख़िल हो गई। तनिष्क इधर-उधर देखता हुआ वहीं टहलता रहा।

तनिष्क टहलते-टहलते ज़रा आगे निकल आया। अनन्या को कुछ ज़्यादा ही समय लग रहा था। शायद सुबह जल्दी होटल से निकलने की हड़बड़ी में पेट साफ़ न हो पाया हो।

तनिष्क एक दुकान में टंगे सामान को देख ही रहा था कि उसे शीशे के काउंटर पर रखी अपनी अंगुलियों पर हल्का-सा स्पर्श अनुभव हुआ। उसने चौंककर देखा और ये सोचकर अपना हाथ ज़रा आगे सरका लिया कि शायद किसी ने ग़लती से उसके हाथ पर अपना हाथ अनजाने में रख दिया होगा। वह उधर देखे बिना फिर से अलमारी में रखे सामान को यथावत् देखता रहा।

तनिष्क को यह अच्छी तरह से याद था कि यहां आमतौर पर लोग एक-दूसरे

की ओर देखते नहीं हैं। इसका कारण यह था कि यहां दुनियाभर के सभी देशों के, विभिन्न नस्लों के लोग एक साथ होते हैं। वे सब एक-दूसरे के स्वभाव, तौर-तरीक़ों के बारे में जानते नहीं हैं। इससे ज़रा-सी चूक से किसी के मन में कोई ग़लतफ़हमी या शंका घर कर सकती है अतः प्रायः लोग एक-दूसरे से नज़रें नहीं मिलाते। यदि ग़लती से या संयोग से कभी किसी से नज़र मिल भी जाये तो लोग या तो अनदेखी करते हैं या फिर सायास मुस्कराकर सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की कोशिश करते हैं ताकि सामनेवाला अपमानित या नाराज़ न महसूस करे। कोई-कोई अपने देश के अभिवादन को भी रिवाज़ानुसार दोहरा देते हैं जिससे अजनबी यह सोच ले कि व्यक्ति उन्हें नुक़सान नहीं पहुंचा रहा।

लेकिन तनिष्क ने अंगुलियों का दबाव अपने हाथ पर फिर से महसूस किया। अब उसने झटके से उस अजनबी की ओर देखा जो उसे बार-बार स्पर्श करने की कोशिश कर रहा था।

अजनबी के बाल सुर्ख़ लाल थे। उसने काला चश्मा लगा रखा था। और लंबे-से ओवरकोट से उसका शरीर ढका हुआ था। अजनबी काउंटर के दूसरी ओर था, जिसका अर्थ था कि वह संभवतः दुकानदार ही था और यह उसी की दुकान थी। भव्य और आलीशान! वैसे भी न्यूयॉर्क एयरपोर्ट पर सारी दुकानें भव्य और आलीशान तो थीं ही। अजनबी को देखकर तनिष्क सहसा अनुमान नहीं लगा सका कि उसे कौन-सी भाषा आती होगी। फिर भी उसने अजनबी की ओर देखकर धीरे-से 'हाय' कहा।

अजनबी ने अब उत्साहित होकर उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और एयरपोर्ट की गहमागहमी के बीच आगे बढ़कर उसे गले से लगा लिया। उसकी गर्मजोशी से तनिष्क कुछ झिझका और पीछे हटने लगा। मगर अजनबी ने उसे दूर होने का मौक़ा नहीं दिया और फिर से गले लगा लिया।

तनिष्क ने कुछ सकपकाकर पीछे देखा, उसे लगा कि अनन्या ज़रूर ही पीछे आ रही होगी। पर अनन्या दिखाई न दी। तनिष्क फिर से अजनबी की ओर मुख़ातिब हुआ। अब तक दोनों में से कोई कुछ बोला नहीं था। पर अब, अजनबी के होंठ खुले, बोला—पेड़ मौसम बदलने पर फ़ॉल कलर के असर से पहचाने नहीं जाते।

ओह! तनिष्क के बदन में जैसे करेंट लगा। वह उछल पड़ा। उससे कितनी बड़ी भूल हुई। वह शेख़ साहब को इस लिबास और गेटअप में पहचान नहीं पाया। उसे सपने में भी ये गुमान नहीं था कि शेख़ साहब वेश बदले हुए यहां इस तरह से मिलेंगे। उन्होंने एक कुर्सी खिसकाई और ज़बरन तनिष्क को बैठा दिया।

और अब अपनी फ़र्राटेदार उर्दू में तनिष्क ने अपने घर, परिवार और अनन्या

के बारे में जल्दी-जल्दी सब बता डाला। शेख़ साहब ने भी बेहद मंद, दबी आवाज़ में अपनी आपबीती सुनाई कि किस तरह उन्हें देश छोड़कर बाहर जाना पड़ा। ट्विन-टॉवर्स हमले के संदर्भ में हुई धरपकड़ में उन पर भी आंच आई। उन्हें भारी जुर्माना तो देना ही पड़ा कुछ समय क़ैद में भी रहना पड़ा। और सब-कुछ बीत जाने के बाद अब वे नये नाम और पते से यूरोप के नागरिक बनकर फिर से यहां थे।

तनिष्क आश्चर्य से देख रहा था। उसका ध्यान अब अनन्या पर था, वह उठकर वापस रेस्टरूम की ओर जाने लगा। उसने शेख़ साहब को बताया कि उसके साथ अनन्या की मां भी हैं।

शेख़ साहब ने तनिष्क से रुकने की पेशकश भी की किंतु अब न तो इतना वक़्त था और न ही तनिष्क में इतना धैर्य बाक़ी बचा था कि शेख़ साहब की बात पर ग़ौर करे। वह अनन्या को देखने के लिए उठ चला। तनिष्क निकला ही था कि दो महिलाएं आपस में बात करती हुई वहां से गुजरीं। तनिष्क के कानों में उनकी बातें पड़ीं।

—सब मर्द एक जैसे होते हैं...।

—दे नेवर केयर...।

—सी, वाइफ़ अंदर कितनी परेशान हो रही है...?

तनिष्क लगभग दौड़कर रेस्टरूम के पास पहुंचा। अनन्या दरवाज़ा ठेलती हुई बाहर निकल रही थी। तनिष्क को देखते ही वह दोनों हाथों से उसे इशारा करती हुई उसकी ओर बढ़ी। तनिष्क ने कहा—क्या हुआ?

अनन्या कुछ नहीं बोली। पर उसकी आंखें लाल हो रही थीं। आंख में थोड़ा पानी भी आ रहा था।

—अरे, क्या हुआ? तबीयत ख़राब हो गई...बताओ। उसने अनन्या से कहा। तनिष्क घबराकर उसकी ओर देखने लगा फिर उसके पास पहुंचकर उसे सीने से सटा लिया। अनन्या अब भी ख़ामोश थी। तनिष्क ने जेब से रूमाल निकालकर अनन्या को दिया किंतु जब उसने रूमाल पकड़ा नहीं तो तनिष्क ने ख़ुद ही हल्के-से उसे अनन्या के गालों पर फिराया मानो उसकी आंखों से छलकी बूंद को पोंछ देना चाहता हो।

—क्या खाया था सुबह? तनिष्क बोला।

अनन्या ने कोई जवाब नहीं दिया।

—मुझे बुला क्यों नहीं लिया तुमने, क्या हो गया, परेशानी हुई तो मुझे बताना तो चाहिए था। तनिष्क ने एक सांस में कई सवाल पूछ डाले। अनन्या उसी तरह चुपचाप उसके साथ-साथ चलती रही। रेस्टरूप के दरवाज़े से निकलकर एक

और महिला उस तरफ़ आ रही थी। वह तनिष्क और अनन्या की ओर देखती हुई ही आ रही थी। तनिष्क को अचम्भा हुआ। महिला पास आकर धीरे-से बोली—टेक केयर...।

—व्हाट हैपंड? अब तनिष्क ने उस महिला की ओर ही देखते हुए कहा।

—शी इज़ नॉट ओके...कहती हुई महिला आगे बढ़ गई।

—क्या हुआ था अनन्या, कुछ तो बताओ, अब ठीक है तबीयत?

अनन्या कुछ नहीं बोली। उसकी चुप्पी अब तनिष्क को खल रही थी। वह बार-बार पूछ रहा था पर अनन्या ख़ामोश थी। पीछे की ओर से दो महिलाएं फिर से आपस में बात करती हुई निकलीं। उनमें से एक मुड़-मुड़कर अनन्या की ओर देख रही थी। पर अनन्या सिर झुकाये तनिष्क से सटी हुई लॉबी में चली जा रही थी।

—दे नेवर नो...हा-हा-हा...महिला के हंसने की आवाज़ आई।

दूसरी महिला भी कुछ धीमी आवाज़ में हंसती हुई उसका साथ देने लगी। तनिष्क बच्चों की तरह सपाट चेहरे से दोनों को जाते हुए देखता रहा। महिला ने तनिष्क को अपनी ओर देखते हुए पाया तो मंद-मंद मुस्कराने लगी। फिर कुछ तेज़ी से आगे निकल गई। उसका स्वर जाते-जाते भी तनिष्क के कानों में पड़ा—उन्हें पता ही नहीं चल पाता कि उन्होंने क्या कर दिया है, वे पूछते रहते हैं...क्या हुआ?...क्या हुआ? पूअर मेल्स...महिला ज़ोर से हंसी।

चलते-चलते तनिष्क और अनन्या अब लॉबी में वहां तक आ गये थे जहां सामने ही एक कुर्सी पर मम्मी बैठी थीं। मम्मी बैग हाथ में लेकर एकाएक उठ खड़ी हुईं। उन्होंने गहरी नज़र से अनन्या को देखा। घोषणा हो रही थी। सामने डेस्क से एक महिला कह रही थी कि सभी लोग विमान की ओर प्रस्थान करें...।

मम्मी ने अनन्या की ओर देखा। अनन्या धीरे-से बुदबुदाई...वोमिटिंग... तनिष्क के कानों में भी अनन्या के शब्द की आवाज़ लहराकर किसी लहर की भांति दाख़िल हुई। तो उल्टी हुई थी अनन्या को, उसने सोचा।

तनिष्क उसे अपने से सटाये धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

सामने कुछ क़दम के फ़ासले पर एक विशालकाय परिंदा अपने लोहे के पर फैलाये खड़ा था मानो अपनी हौसले भरी परवाज़ से दुनिया के एक छोर को दूसरे छोर से मिला देने के लिए कटिबद्ध हो।

तनिष्क ने मन-ही-मन उच्चारा—''अक़ाब''...और अनन्या के चेहरे पर आते-जाते रंगों को देखता रहा...मौसम बदल रहे थे।

●●

अक़ाब

आकाश में उड़ते अक़ाबों की परवाज़ भी अपने उदर के चक्रव्यूह में क़ैद है। जन्म ज़मीन पर और ख़्वाहिशें आसमान की...परिंदों की यही फ़ितरत होती है। परवाज़ आकाश में, मगर दाना-पानी ज़मीन पर। आकाश में उड़ते बाज या चील को पेट भरने के लिए किसी निर्दोष-मासूम पंछी पर झपट्टा मारते देखकर शायद इंसान ने भी दहशतगर्दी की तालीम पा ली।

चंद मानव बुतों ने आकाश में उड़नेवाले विमानों का अपहरण करके उन्हें ज़मीन की गगनचुंबी अट्टालिकाओं पर किसी मिसाइल की तरह दाग़ दिया और हज़ारों मासूम बेगुनाहों को पलभर में नेस्तनाबूद कर दिया।

वर्षों के अथक परिश्रम से आदमी ने आकाश में विचरण करनेवाले इन विमानों को इसलिए बनाया था कि जीवन में दूरियां मिटें। लेकिन मौसम की तरह बदलते दिमाग़ों ने दिलों की दूरियां इतनी बढ़ा दीं कि ज़िंदगी बियाबानों में भटकने को मजबूर हो जाए।

मौसम में बड़ी ताक़त है...मनुष्य की तरह ही। इसके असर से लंबे-चौड़े दरख़्तों पर ख़िज़ां आ जाती है, हरियाली रंग बदल लेती है और पतझड़ आ जाते हैं। आदमी का दिमाग़ बदलने से भी ऐसा ही होता है...बस्तियां और शहर उजड़ जाते हैं, बियाबां बन जाते हैं।

–प्रबोधकुमार गोविल

प्रबोधकुमार गोविल

जन्म : 11 जुलाई, 1953

प्रकाशित कृतियाँ : देहाश्रम का मनजोगी (हिंदी व सिंधी में), बेस्वाद मांस का टुकड़ा, रेत होते रिश्ते, वंश, आखेट महल (हिंदी व पंजाबी में), जल तू जलाल तू (9 भाषाओं में प्रकाशित) – सभी उपन्यास
अंत्यास्त, सत्ताघर की कंदरायें, खाली हाथवाली अम्मा, थोड़ी देर और ठहर (हिंदी और पंजाबी में), हार्मोनल फेंसिंग (अंग्रेजी अनुवाद)– सभी कहानी-संग्रह
मेरी सौ लघुकथाएं (लघुकथा-संग्रह), पड़ाव और पड़ताल-8 (संपादित लघुकथा-संकलन), रेडोलेंस ऑफ लव (अंग्रेजी अनुवाद)
उगते नहीं उजाले (हिंदी और अंग्रेजी में), मंगल ग्रह के जुगनू (चार भागों में), याद रहेंगे देर तक (सम्पादित)– बाल साहित्य
रक्कासा सी नाचे दिल्ली, शेयर खाता खोल सजनिया, उगती प्यास दिवंगत पानी–सभी कविता-संग्रह
रस्ते में हो गई शाम–संस्मरण
मेरी ज़िंदगी लौटा दे, अजब नार्सिस डॉट कॉम (हिंदी, अंग्रेजी व संस्कृत में), बता मेरा मौतनामा–सभी नाटक

संप्रति : प्रोफेसर व निदेशक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

संपर्क : बी-301, मंगलम जाग्रति रेजीडेंसी, 447 कृपलानी मार्ग, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 (राजस्थान)